ISSN 2454-972X

हिमप्रस्थ

मई-जून, 2023

रिवालसर झील, मण्डी

मुख्य मंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू नई दिल्ली में नीति आयोग की बैठक में भाग लेते हुए।

ISSN : 2454-972X

हिमप्रस्थ

वर्ष : 68 मई-जून, 2023 अंक : 2-3

सम्पादकीय कार्यालय: हि. प्र. प्रिंटिंग प्रेस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला-5

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये, एक प्रति : 15 रुपये

E-Mail : himprasthahp@gmail.com
Tell: 0177 2633145, 2830374
Website: himachalpr.gov.in/himprastha.asp

ज्ञान सागर

गर्वरहित मनुष्य ईश्वरीय गुणों से युक्त होता है।

-ऋग्वेद

इस अंक में

लेख

कविता

कहानी

लघुकथा

यात्रा संस्मरण

व्यंग्य

समीक्षा

अपनी बात

'मैं मजदूर हूं मजबूर नहीं, यह कहने में मुझे शर्म नहीं, अपने पसीने की खाता हूं, मैं मिट्टी को सोना बनाता हूं'। जिन लोगों को अपने परिश्रम पर विश्वास होता है वे लोग कभी किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानते हैं। यह बात उन सभी श्रमिकों पर सटीक बैठती है, जो औद्योगिक क्रांति से लेकर आज तक विश्व के हर कोने में विकास में अहम भूमिका निभाते आ रहे हैं। औद्योगिक क्रांति के दौरान यूरोप ने लगभग सभी देशों में बड़े-बड़े कारखाने लगाने शुरू किए। नई-नई मशीनों का आविष्कार हुआ। जिनके संचालन के लिए भारी संख्या में मानव शक्ति की आवश्यकता थी। परिणामत: कारखानों में भारी संख्या में श्रमिकों की भर्ती की गई। उत्पादन बड़ा और कारखानों में बनी वस्तुओं की उत्पादकता हस्तशिल्प के मुकाबले अधिक होने लगी। औद्योगिक घराने लाभ के लालच में श्रमिकों से 12 से 14 घण्टे काम लेने लगे। उस समय के कारखाने स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ठीक नहीं थे। कारखाना मालिक मजदूरों के प्रति सही तरीके से दायित्व नहीं निभा रहे थे। ऐसी परिस्थितियों को देखते हुए कामगारों ने छुट-पुट आन्दोलन आरम्भ कर दिए। ऐसा ही एक आन्दोलन अमरीका के शहर शिकागो में एक मई 1886 को हुआ। मजदूर संगठनों ने कारखानों में हड़ताल कर दी, जिसमें उन्होंने यह फैसला लिया कि कोई भी श्रमिक आठ घंटे से ज्यादा काम नहीं करेगा। हड़ताल के दौरान शिकागो के हेमोर्केट में बम बलास्ट हुआ और स्थानीय पुलिस ने इससे निपटने के लिए वहां एकत्रित मजदूरों पर गोलियां चलाई जिसमें कई मजदूरों की मृत्यु हुई और सैंकड़ों घायल हुए। वर्ष 1889 में आयोजित अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में हेमोर्केट नरसंहार में मारे गए निर्दोष लोगों की याद में एक मई को अन्तरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई। यह दिवस एक ऐसे आन्दोलन की याद में मनाया जाने लगा जिसने अमरिका की सरकार को हिलाकर रख दिया। हालांकि श्रम दिवस का इतिहास और मूल अलग-अलग देशों में अलग है परन्तु कारण एक ही था और वह था श्रम वर्ग के साथ उचित व्यवहार करना। ट्रेड यूनियनों के संयुक्त प्रयासों ने सभी देशों की सरकारों को श्रमिकों के पक्ष में कानून बनाने के लिए मजबूर किया। यद्यपि भारतवर्ष में इसकी शुरूआत आजादी से पूर्व चेन्नई में 1 मई, 1923 को लेबर किसान पार्टी ऑफ हिन्दुस्तान की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में हुई थी, जिसका नेतृत्व वामपंथी व सोशलिस्ट पार्टियों ने किया था। स्वतंत्र भारत में डॉ. अम्बेडकर मजदूरों की आवाज बनकर उभरे। उनका मानना था कि 'देश के भाग्य निर्माण में श्रमिकों की निर्विवाद भूमिका रही है। चाहे वह देश का स्वतंत्रता संग्राम हो या स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया।'' अम्बेडकर ने बतौर श्रम मंत्री आजाद भारत में लेबर लॉ लागू कर मजदूरों की कार्यावधि आठ घण्टे निर्धारित की। इन्होंने महिला मजदूरों के लिए भी कई कानून बनाए। यदि हम अपने देश में आजादी के बाद की श्रमिकों की स्थिति का आकलन करें तो उनकी परिस्थितियों को बेहतर बनाने के लिए काफी कुछ किया गया है। हिमाचल प्रदेश में भी उद्योगों की बढ़ती संख्या के दृष्टिगत श्रमिकों की संख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। प्रदेश सरकार द्वारा राज्य के अन्दर अधिनियमों व श्रम कानूनों को लागू करना अनिवार्य किया गया जो यह दर्शाता है कि सरकार श्रमिकों के प्रति पूर्ण रूप से संवेदनशील है।

– सम्पादक

आलेख

हिमाचल में ग़ज़ल : एक नज़र

✍ सुदर्शन वशिष्ठ

साहित्य की कोई विधा अगर सीधे लोगों से जुड़ी हुई है तो वह नाटक है या फिर ग़ज़ल। नाटक में दर्शक श्रोताओं से एकदम सीधा संवाद होता है, दर्शक उसे पूरे मनोयोग से स्वीकारता है। ठीक इसी तरह ग़ज़ल भी श्रोताओं से पूरा तारतम्य स्थापित करती है। नाटक और ग़ज़ल, दोनों दर्शकों को बान्धे रखते हैं और अपनी बात पूरी संवेदना से सम्प्रेषित करते हैं।साहित्यकार की अभिव्यक्ति और सम्प्रेषण, दोनों को ये विधाएं पूरी तरह वहन करती हैं।

ग़ज़ल का एक और गुण भी है कि ये लोगों द्वारा गुनगुनाई जाती है। मशहूर ग़ज़लों के वाक्यांश लिखे, गाए और गुनगुनाए जाते थे। ऐसा कविता में देखने को नहीं मिलता। ग़ज़ल जब मंच से पढ़ी जाती है, श्रोता उसे उसी वक्त नोट करने लगते हैं।

ग़ज़ल परंपरा की एक और ख़ासियत का यहां उल्लेख करना भी जरूरी है। ग़ज़ल लेखन में गुरु या उस्ताद का बहुत महत्त्व है। गुरु का नाम अब या तो संगीत में लिया जाता है या ग़ज़ल में।

ग़ज़ल के शाब्दिक अर्थ और चौंकाने वाले हैं। इसका एक अर्थ 'औरतों से बातचीत' है तो दूसरा 'प्रेमिका से वार्तालाप'। तीसरा 'कातना या बुनना' है और चौथा 'हिरण की चीख़' दिया गया है।

ग़ज़ल ने बहुत लम्बा सफर तय किया है। साकी-सुराही, शम्मा-परवाना से होती हुई लैला मजनूं के इश्किया किस्सों तक का सफ़र किया है ग़ज़ल ने। और उसके बाद कमसिन ग़ज़ल कनीज के रसीले बोलों में उलझ कर रूमानियत और विलासिता से होते हुए दरबारी संगीत लहरियों तक इठलाती रही।

यूं तो भक्तिकाल के कुछ कवियों ने भी ग़ज़ल के छंद का प्रयोग किया। दक्खिणी हिन्दी में तो बहुत ग़ज़लें लिखी गईं। सूफियाना दर्शन और प्रेम ग़ज़ल का प्रिय विषय रहा। यहां तक कि संत कवियों ने भी इस विधा से परहेज नहीं किया। भारतेंदू ने भी 'रसा' उपनाम से ग़ज़लें लिखीं।

ग़ज़ल का आगमन अमीर ख़ुसरो से माना जा सकता है। अमीर ख़ुसरो ने अपनी ग़ज़ल में उस समय की ब्रज, खड़ी बोली या हिन्दी और फ़ारसी दोनों का अद्भुत प्रयोग किया।

उर्दू फारसी से हिन्दी में आने तक ग़ज़ल ने एक बहुत लम्बा सफर तय किया है। इस सफर में ग़ज़ल की भावभूमि और कथ्य में आमूलचूल परिवर्तन हुआ। और इस परिवर्तन की शुरूआत हम दुष्यंत कुमार में देखते हैं। हिन्दी ग़ज़ल में दुष्यंत कुमार का आना एक चमत्कारिक घटना है जिसने ग़ज़ल की सोच को एकदम बदल डाला। हिन्दी ग़ज़ल में विषय का परिवर्तन तो हुआ ही, छंदबद्ध कविता की भान्ति वक्रोक्ति, जटिल अभिव्यंजना, प्रतीकात्मकता जैसे तत्व भी आने लगे। दुष्यंत कुमार के संग्रह 'साये में धूप' के प्रकाशन के साथ हिन्दी ग़ज़ल की शैली में नये प्रतिमानों का प्रतिपादन हुआ।

"मेरे सीने में न सही, तेरे सीने में सही, हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।" या "तू किसी रेल सी गुजरती है, मैं किसी पुल सा थरथराता हूं।" जैसे काव्यांश उर्दू ग़ज़लों के बाद हिन्दी में भी लोगों की ज़ुबान तक आ गए।

सबसे बड़ी बात कि रूमानियत से निकल कर ग़ज़ल यथार्थ के ठोस धरातल पर उतरी। इश्को मुहब्बत के कसीदे छोड़ ग़ज़ल आमजनों की बात करने लगी। भूख, ग़रीबी, असमानता, अंधविश्वास, ऊंच-नीच इसके विषय बने। शोषित और शोषक की बात करते हुए ग़ज़ल बाज़ारवाद, समाजवाद तक जा पहुंची और समाज की तमाम विद्रुपताएं, घुटन, संत्रास, उत्पीड़न इसके विषय बने। साहित्य के जो भी सरोकार हो सकते हैं, अब ग़ज़ल में शामिल हैं।

हिमाचल प्रदेश में छंदमुक्त कविता से पहले गीत और ग़ज़ल का बोलबाला रहा है। उर्दू जुबान के अधिक प्रयोग के कारण यहां गीत और ग़ज़लों की परंपरा पनपी। उर्दू मिलाप जैसे उर्दू अख़बार यहां ख़ूब बिकते थे। लोगबाग़ उर्दू में पढ़ते

लिखते थे। उर्दू शार्टहैण्ड की तरह लिखा जाता। पुराने हिमाचल के स्कूलों में उर्दू पढ़ाई जाती थी।

शेरो शायरी की हिमाचल में एक स्वस्थ परंपरा रही है। किसी समय यहां आयोजित मुशायरों में इतनी भीड़ होती थी कि लोग खड़े-खड़े ग़ज़लें सुनते थे। गेयटी थियेटर में आयोजित मुशायरों में ग़ज़ब की भीड़ जुटती थी।भाषा विभाग द्वारा ''कुल हिंद मुशायरा'' हर वर्ष हुआ करता था। साल में एकाध इण्डोपाक मुशायरा भी हो ही जाता था। मुशायरे के शौकीन आमन्त्रण कार्ड न मिलने पर अपना विरोध दर्ज करते थे। उर्दू ज़ुबान का दबदबा कभी कांगड़ा, कुल्लू, मण्डी, नाहन में भी हुआ करता था।

ये मुशायरे सिसिल होटल, गेयटी थियेटर और अंत में पीटरहॉफ में भी हुए। पीटरहॉफ में इण्डोपाक मुशायरा अंतिम था जिस में पाकिस्तान से शौहरा हजरात और शायरा आई हुई थीं। शिमला के मुशायरों में हफीज जालंधरी, निदा फाजली, बशीर बद्र, मुनव्वर राणा, बसीम बरेलवी, शीन काफ़ निजाम, कश्मीरीलाल जाकिर, आजाद गुलाटी जैसे शौहरा हजरात आ चुके हैं। इण्डोपाक मुशायरों में पाकिस्तान के शायर शिरकत करते थे। राजधानी होने के कारण शिमला में शुरू से ही शायरों का जमावड़ा रहा। बहुत से शायर नौकरी के सिलसिले में यहां जमे हुए थे। बहुत पहले उपेन्द्रनाथ 'अश्क' सरीखे उर्दू लेखक रूलदू भट्ठा में रहे। हिमाचल अकादमी के सौजन्य से हरियाणा उर्दू अकादमी के साथ आदान-प्रदान योजना में साल में एक दो मुशायरे हो ही जाते थे जिसमें हरियाणा और आसपास के शायर शिमला आते। जनाब कश्मीरीलाल, जाकिर साहब जब दो तीन बार उर्दू अकादमी के डायरेक्टर रहे, वे हमेशा मुशायरे के लिए तैयार रहते थे। कुछ प्रोग्राम अफसाने के भी हुए। वाई.डब्ल्यू.सी.ए. में हुए एक प्रोग्राम में जाकिर साहब ने अफसाना पढ़ा। हिमाचल के शायर चण्डीगढ़ जाते थे।

जब हिमाचल में गुलशेर अहमद खान गवर्नर आए तो उनके निर्देश पर होटेल सिसिल में एक बड़ा मुशायरा हुआ। इनके बहुत बाद सूरजभान गर्वनर बने, वे शेरोशायरी के शौकीन थे। उनकी इच्छानुसार भाषा विभाग के माध्यम से सन् दो हजार से दो हजार तीन के बीच पन्द्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी को लगातार राजभवन में कवि सम्मेलन, मुशाअरे होने लगे। यह एक अच्छी शुरूआत थी। मगर यह परंपरा उनके जाने के बाद नहीं चल पाई।

दुनिया बदली। लोग बदले। प्रदेश में उर्दू के जानकार और शौहरा हजरात लुप्त हो रही बाघ प्रजाति की तरह कम रह गए। भाषा विभाग में पत्रिका के संपादक जनाब धर्मपाल आकिल के रिटायर हो जाने पर विभाग में उर्दू में आए पत्र पढ़ने वाला कोई न था। विभाग द्वारा शाया होने वाला उर्दू का रसाला ''फिक्रो-ओ-फन'' दो बार बंद हुआ। बाद में इस का संपादन शबाब ललित, सुरेशचन्द्र शौक ने गेस्ट एडीटर के तौर पर भी किया। आख़िर इस पत्रिका ने दम तोड़ दिया।

शिमला में उर्दू के अजीम शौरा तलत इरफानी, अरमान शहाबी, शबाब ललित, राजेश कुमार 'ओज', सुरेशचन्द्र शौक, प्रेम आलम, साबिर हसन साबिर जैसे लोगों का जमावड़ा रहता था। ये नहीं रहे तो शिमला जैसे शायरविहीन हो गया। उर्दू और संस्कृत ऐसी दो जुबानें थीं जिनके 'दिवस' आने पर इन भाषाओं के कवि साहित्यकार नहीं बचे जिन्हें न्यौता दिया जाए।

शिमला में उर्दू के अजीम शौरा तलत इरफानी, अरमान शहाबी, शबाब ललित, राजेश कुमार 'ओज', सुरेशचन्द्र शौक, प्रेम आलम, साबिर हसन साबिर जैसे लोगों का जमावड़ा रहता था। ये नहीं रहे तो शिमला जैसे शायरविहीन हो गया। उर्दू और संस्कृत ऐसी दो जुबानें थीं जिनके 'दिवस' आने पर इन भाषाओं के कवि साहित्यकार नहीं बचे जिन्हें न्यौता दिया जाए।

ग़ज़ल परंपरा का आगाज लालचंद प्रार्थी से माना जा सकता है। प्रार्थी जी प्रथम भाषा-संस्कृति मन्त्री और हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी के अध्यक्ष भी रहे। उनके ज़माने में रात-रात भर महफिलें जमी रहती थीं जिनमें प्रार्थी स्वयं जमे रहते। प्रार्थीजी ''चांद कुल्लूवी'' (मार्च 1916-दिसंबर 1982) के नाम से उर्दू और पहाड़ी में लिखते थे। इनकी रचनाएं पाकिस्तान के रसालों में भी छपती थीं। इनकी कुछ पंक्तियां :

''मरकजे रंजो अलम हो जैसे, ज़िदगी बिरसा-ए-ग़म हो जैसे।

याद आती है तो सहमी-सहमी, यह कोई दिल का भरम हो जैसे।''

प्रार्थी जी के सामने जो महफिल सजती थी उस में मनोहर सागर पालमपुरी, अरमान शहाबी, शबाब ललित, सुरेशचन्द्र शौक, खेमराज गुप्त सागर, काह्नसिंह जमाल, बिहारी लाल बहार, राजेश कुमार ओज जैसे शायर मौजूद रहते थे।

सुदर्शन कौशल नूरपुरी, परमानंद शर्मा, नरेश चन्द्र साथी, अमर सिंह फिग़ार, आदिल सिरमौरी, तलत इरफानी, साबिर

हसन साबिर, बिहारी लाल बहार, डी.कुमार, ज़िया सिद्दिकी, जाहिद अबरोल ने इस फ़न में चार चांद लगाए।

राजेश कुमार 'ओज' को हिमाचल अकादमी का वर्ष 1985 का सम्मान उनके ग़ज़ल संग्रह ''गुलेतर'' के लिए प्रदान किया गया। शबाब ललित एक अजीम शायर थे जो उर्दू के अलावा हिन्दी और पहाड़ी में भी लिखते थे। उनके उर्दू ग़ज़ल संग्रह ''समंदर प्यासा है'' के लिए वर्ष 1989 का हिमाचल अकादमी सम्मान दिया गया। इसके बाद 1998 में कविता व ग़ज़ल संग्रह ''अजनबी हवा'' के लिए पुन: हिमाचल अकादमी से सम्मान मिला।

सशक्त ग़ज़लकार सुरेशचन्द शौक का देहावसान 25 मार्च 2017 को हुआ। इनका देवनागरी में प्रकाशित ''आंच'' ग़ज़ल संग्रह चर्चित रहा।

कुल्लू से बिहारी लाल बहार ज्यादातर मुजाहीया शेयर लिखते थे मगर उनके उर्दू निबन्ध संग्रह ''हुसन-ए-कोहसार'' को वर्ष 1992 में हिमाचल अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। यहां यह उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है कि इस छोटे से प्रदेश से अजीम शायर के.के. तूर को उर्दू में साहित्य अकादमी सम्मान मिलना गौरव की बात है। कृष्ण कुमार तूर पुराने और वरिष्ठ शौरा हजरात में एक जाना माना नाम है जिन्हें ''रफ़्ता रम्ज़'' के लिए 2002-2006 का हिमाचल अकादमी पुरस्कार मिला और इसी पुस्तक के लिए देश की केन्द्रीय अकादमी द्वारा ''साहित्य अकादमी पुरस्कार'' 2012 में प्रदान किया गया। हिमाचल तो क्या पूरे उत्तर भारत में उर्दू में अकादमी सम्मान प्राप्त करने वाले एकमात्र यही शख्स हैं। इन्हें बिहार और उतरप्रदेश अकादमियों से पुरस्कार, 'अंजुमन तरक्की-ए- उर्दू' से राष्ट्रीय अमीर खुसरो पुरस्कार और ग़ालिब पुरस्कार भी मिल चुके हैं। बहुत समय ये तूर साहेब ''सरसब्ज'' नाम से उर्दू में एक रसाला भी शाया कर रहे हैं।

सरकारी विभाग के मुशायरों के साथ-साथ श्री सुरेन्द्रनाथ वर्मा द्वारा शुरू की गई ''बज्मेअदब'' के माध्यम से भी मुशायरे किए जाते थे। वर्माजी भाषा-संस्कृति विभाग के प्रथम स्वतन्त्र निदेशक भी रहे और इस संस्था के अध्यक्ष थे। शायर तो नहीं थे, शायरी के शौकीन थे। इस संस्था में अरमान शहाबी, के.के. किदवई, धर्मपाल आकिल, काहनसिंह जमाल, एम.सी. सक्सेना 'तस्कीन' आदि थे। बाद में शबाब ललित महासचिव रहे। उधर नाहन में नरेश चन्द्र साथी माहौल बनाए हुए थे। वे 'माहनामा अक्स'' शाया करते थे जिसमें देवनागरी में हिन्दी व उर्दू की रचनाएं छपती थीं।

अरमान शहाबी ने तो फिल्मों में गीत भी लिखे। ''अपना देश पराए लोग'' और ''साहिबा'' आदि फिल्मों के लिए गीत लिखे जिनमें साहिबा के ''हुसन पहाड़ों का ओ साहिबा!'' जैसे गीत बहुत लोकप्रिय हुए।

इनके साथ-साथ नादौन में गुलशन 'नादौनवी', ज्वालामुखी में अलमस्त, सिरमौर में आदिल सिरमौरी, साधुराम रत्न, महासू में काहनसिंह जमाल, चम्बा में खेमराज गुप्त सागर, पालमपुर में अर्जुन कन्नोजिया आदि अदीम शायर रहे। अर्जुन कन्नौजिया की दो ग़ज़ल पुस्तकें भी छप चुकी हैं।

धर्मपाल 'आकिल' भाषा-संस्कृति विभाग द्वारा निकलने वाली उर्दू पत्रिका ''फिक्रोफन'' के संपादक रहे और एक उम्दा शायर थे।

नूरपुर से रामस्वरूप शर्मा एक उम्दा शायर रहे जो 'परवाज़ नूरपूरी' के नाम से लिखते थे हालांकि इनकी चर्चा कम हुई। ऐसे ही मधुसुदन शर्मा हिन्दी-उर्दू दोनों में लिखते है, इनका भी एक ग़ज़ल संग्रह आया है।

अज़ीम शायर सागर पालमपुरी के अलावा शेष अवस्थी, प्रीतम आलमपुरी, गौतम व्यथित, प्रेम भारद्वाज, पवनेन्द्र पवन, तेज सेठी हिमाचली भी ग़ज़लें लिखते हैं।

उर्दू अदब की आग बुझी नहीं अभी

उर्दू अदब का एक दौर समाप्त तो हुआ। उर्दू अदब की आग बुझी नहीं। नए-नए शायर भी साथ-साथ आते रहे। मण्डी में प्रफुल्ल परवेज़(स्व.), राणा रविसिंह शाहीन, भगवान देव चैतन्य, के.एल. कौशल भी ग़ज़ल लिखते रहे है। कांगड़ा में प्रेम भारद्वाज(स्व.), शेष अवस्थी (स्व.), प्रीतम आलमपुरी, ओंकार 'फलक', नाहन में नासिर यूसूफ ज़ई, जावेद उल्फत, चम्बा में टी.सी. सावन, शिमला में निसार शिमलवी ग़ज़ल कहते रहे। शिमला में विनोदकुमार गुप्ता बेहतरीन ग़ज़ल कह रहे हैं। इनका हाल ही एक ग़ज़ल संग्रह भी शाया हुआ है।

जाहिद अबरोल को हिमाचल अकादमी द्वारा ''दरिया दरिया साहिल साहिल'' ग़ज़ल संग्रह के लिए हाल ही में वर्ष 2016 का पुरस्कार घोषित किया गया है।

आज के समय में पवनेन्द्र पवन के अलावा द्विजेन्द्र द्विज प्रमुख सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनका ''जन- गण-मन'' नाम से ग़ज़ल संग्रह काफी चर्चित रहा। द्विजेन्द्र द्विज का एक शेयर देखिए :

''ख़ुद तो ग़मों के ही रहे हैं आसमां पहाड़
लेकिन ज़मीन पर हैं बहुत मेहरबां पहाड़।''
एक और बानगी :
''अपने चेहरे पे कभी हर्फ़ न लाया हमने
आईना औरों को हर बार दिखाया हमने।''

सुमितराज वशिष्ठ, नवनीत शर्मा, प्रताप जरयाल, सुभाष साहिल, अशोक कालिया, प्रकाश बादल, मुनीष तन्हा, सुदेश दीक्षित, नवीन, नकुल गौलक, सतपाल ख्याल, कुलदीप तरूण

गर्ग, विजय धीमान, भी अच्छी ग़ज़ल लिख रहे हैं।

सतीश 'रत्न' की प्रथम ग़ज़ल पुस्तक ''सुबह जरूर आएगी'' 2015 में प्रकाशित हुई है। इन की दूसरी पुस्तक ''रात को रात कहो'' अभी 2021 में आई है। इनकी ग़ज़ल का एक शेयर :

''गहराइयों से ख़लक की अंजान बहुत है, तलाशने को हमें अभी आसमान बहुत हैं।

हिन्दू का अलग, मुसलिमों-ईसाइयों का अलग, के आकाश में विराजे भगवान बहुत हैं।''

युवा ग़ज़लकार अंशुमन कुठियाला का संग्रह ''शहर में शायर'' 2017 में आया है।

हिमाचल से ही विदेशों में रह रहे कुछ शायर बेहतरीन ग़ज़ल कह रहे हैं। इनमें राजीव भरोल, साध्वी सैनी के नाम गिनाए जा सकते हैं।

महिलाओं में आशा शैली काफी समय से हिन्दी कहानी, कविता के अलावा ग़ज़ल कह रही हैं। इनका एक ग़ज़ल संग्रह ''शज़र-ए-तन्हा'' नाम से और एक नेट बुक ''अभी नरगिस मुस्कुराती है'' शाया हो चुके हैं। बेहतरीन शायरा नलिनी विभा नाज़ली की हिन्दी कविता, बाल कविता के अलवा पांच ग़ज़ल पुस्तकें आ चुकी हैं। इनके अतिरिक्त चन्द्ररेखा डढवाल, संगीता सारस्वत, शबनम शर्मा ग़जल़ लिख रही हैं।

प्रेम भारद्वाज(स्व.) हिन्दी और पहाड़ी में ग़जल लिखते रहे हैं। पहाड़ी में ठेठ मुहावरे के इस्तेमाल से ग़ज़ल का मुहावरा उन्होंने ही दिया। पहाड़ी में उनके ग़ज़ल संग्रह ''मौसम ख़राब है'' के लिए हिमाचल अकादमी द्वारा वर्ष 1993 का सम्मान प्रदान किया गया। इसी ग़ज़ल संग्रह के लिए वर्ष 1999 का भाषा-संस्कृति विभाग द्वारा राज्य सम्मान दिया गया। इनकी कुछ पक्तियां देखें :

''छिड़ गई चर्चा कहीं से भूख की, गांव की चौपाल घबराने लगी है।

कब तलक तेरा भरम रखे रहूं, नींव से दीवार बतियाने लगी है।''

शेष अवस्थी (स्व.) भी पहाड़ी के साथ हिन्दी ग़ज़ल लिखते रहे हैं। उनकी एक बानगी देखिए :

''जब से यह जंगल शहर बन गया है, जीना तभी से कहर बन गया है।

सदा रोष में फूट पड़ता रहा जो, वही स्वर ग़ज़ल की बहर बन गया है।''

मण्डी में प्रफुल्ल महाजन 'परवेज़' के अलावा भगवानदेव चैतन्य भी ग़ज़ल कहते रहे हैं यद्यपि वे हिन्दी में कविता, कहानी भी लिखते थे। उनकी कुछ पंक्तियां :

''अब तो सुरक्षा के सभी प्रबन्ध बेकार हो गए हैं,

हर सर पर बिजली गिरने के आसार हो गए हैं।''

मण्डी में ही राणा रविसिंह ''शाहीन'' ने ग़ज़लें कही हैं:

''तेरी शोख़ी, हया-ओ-ख़ुद्दारी, क्या कहें, किस अदा ने मारा है।

जिनको ठुकरा दिया ज़माने ने, मैकदे ने उन्हें उभारा है।''

मण्डी के एक और शायर के.एल. कौशल की कुछ पंक्तियां देखें :

''सारा शहर बेकाबू सा लगता है

हर शख़्श अलहदा टापू सा लगता है।''

अलबत्ता अब समय की मांग के मुताबिक ग़ज़ल की किताबें देवनागरी में छप रही हैं। उर्दू ग़ज़ल भी हिन्दुस्तानी या हिन्दी ग़ज़ल बनती जा रही है। बहुत से उर्दू ग़ज़ल को हिन्दी ग़ज़ल कह कर लिख रहे है और इसी तरह हिन्दी ग़ज़ल को उर्दूनुमा लिख रहे है अलबता इसे सरल भाषा में कर दिया गया है।

उर्दू के जानकार न रहने के बाद अब उर्दू ग़ज़ल के बाद हिन्दी ग़ज़ल, गीत, दोहा जैसी चीजें अब प्रचलन में आई हैं। नाहन से अनंत आलोक ग़ज़ल के साथ-साथ उम्दा दोहे लिख रहे हैं।

ग़ज़ल के साथ हिन्दीगीत परंपरा का हिमाचल में बहुत पहले से बोलबाला रहा है। शिमला में रामदयाल नीरज, सत्येन्द्र शर्मा, श्रीनिवास श्रीकांत, ओमप्रकाश सारस्वत, अनिल राकेशी महत्त्वपूर्ण गीतकार रहे हैं। ओमप्रकाश सारस्वत तथा संगीत सारस्वत के ग़ज़ल सग्रह भी प्रकाशित हुए। श्रीनिवास श्रीकांत का हिन्दी गीत ग़ज़ल संग्रह ''हर तरफ समंदर है'' 2010 में प्रकाशित हुआ। ओम प्रकाश सारस्वत हिन्दी गीत व ग़ज़ल अभी भी लिख रहे हैं।

मण्डी के नरेन्द्र 'साथी' देशभक्ति के गीत लिखा करते थे। इनकी एक पुस्तक ''शहादत : सैनिक और शक्ति गीत'' भी 2006 में प्रकाशित हुई है।

ग़ज़ल या हिन्दी ग़ज़ल लिखना या तुकबंदी करना युवाओं का शौक रहता था, जो अब भी है। ग़ज़लनुमा चीज़ लिखने और बोलने में जो एक मजा आता है, वह इस विधा को आगे बढ़ाने में सहायक रहता है।

आज की बात करें तो ग़ज़ल लिखने वाले रमेश डढवाल, मोनिका सारथी, नरेश दयोग, रोशन जसवाल भी ग़ज़ल में अच्छा हाथ आजमा रहे हैं।

''अभिनंदन'' कृष्ण निवास लोअर पंथाघाटी
शिमला-171009, मो. नं. 94180-85595

समीक्षात्मक लेख

चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा' में किन्नर विमर्श

✍ डॉ. जितेंद्र वर्मा

साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ-साथ रक्षक भी है। साहित्य शब्द का केवल एक ही लक्ष्य होता है समाज का हित। तभी तो साहित्य शब्द का अर्थ हित करने वाला कहा गया है। साहित्य में साहित्य को पढ़ने वाले और रचने वाले दोनों का विशेष महत्त्व रहता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के साथ-साथ भावना प्रधान प्राणी भी है। समाज में रहते हुए उसे अपने सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, हंसना-रोना आदि की अभिव्यक्ति महसूस होती है और इसी अभिव्यक्ति का आधार साहित्य है। किसी भी रचनाकार के साहित्य को जानने से पूर्व उसके व्यक्तित्व व कृतित्व को जानना अति आवश्यक हो जाता है।, "व्यक्तित्व सम्पूर्ण मनुष्य है उसकी स्वाभाविक अभिरुचि तथा क्षमताएं उसके भूतकाल में अर्जित किए गए अधिगम फल, कारकों का संगठन तथा समन्वय व्यवहार प्रतिमानों, आदर्शों, मूल्यों तथा अपेक्षाओं की विशेषताओं से पूर्ण होता है।"[1] इसी के साथ-साथ, "व्यक्तित्व का अर्थ है व्यक्ति का गुण या भाव। वे विशेष गुण जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित होती है।"[2] अतः मनुष्य के गुण-दोष और आचरण का वह समन्वित रूप व्यक्तित्व है, जिससे एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से भिन्न हो जाता है। बहुचर्चित साहित्यकार चित्रा मुद्गल के साहित्य पर चर्चा करने से पूर्व उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना नितांत आवश्यक है।

व्यक्तित्व व्यक्ति का मानसिक संगठन होता है, "व्यक्ति का विशेष गुण या भाव, वे विशिष्ट गुण है, जिनके कारण किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सिद्ध होती है।"[3] अर्थात् हम जिस तरह का आचरण करते हैं, वह सब हमारे व्यक्तित्व के कारण ही उत्पन्न होता है। आठवें दशक की बहुचर्चित कथाकार चित्रा मुद्गल का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला उन्नाव, बंद गांव निहाली खेड़ा में एक ठाकुर परिवार में 10 जनवरी, 1944 ई. को हुआ। इनके पिता का नाम ठाकुर प्रताप सिंह व माता का नाम बिमला ठाकुर था। चित्रा मुद्गल को साहित्य रचना की प्रेरणा विरासत रूप में परिवार से ही मिली थी। उनकी शिक्षा की व्यवस्था उस समय की परिस्थितियों के अनुसार अच्छी ही रही। वह अपनी पढ़ाई के विषय में बताती हैं, "बचपन की जो पहली याद है, वो बम्बई के बी.एल. रूइया स्कूल की है, वहां के प्राइमरी सैक्शन में मेरा एडमिशन कराया गया। छः महीने बाद वहां से निकाल कर सैंट्रल स्कूल में दाखिला करा दिया गया, फिर पिताजी का ट्रांसफर हो गया और हम गांव आ गए। गांव की कन्या पाठशाला में दाखिला करा दिया गया। वहां टाट-पट्टी पर बैठकर हम पढ़ते थे।

करीब चार साल मैं गांव में ही रही। फिर पिताजी का ट्रांसफर बम्बई हो गया। वहां मेरा दाखिला पहले पवई के सैंट्रल स्कूल में हुआ, फिर हिन्दी हाई स्कूल घाटकोपार में जहां से मैंने हायर सेकेंडरी किया।"[4] इसके पश्चात् वूमैन्स युनिवर्सिटी से हिन्दी साहित्य में एम.ए. और फाईन आर्ट में डिप्लोमा किया। ठाकुर परिवार में जन्म होने के परिणामस्वरूप भी उन्होंने प्राचीन परम्पराओं का खण्डन कर अन्तरजातीय विवाह किया। उन्होंने अवध नारायण मुद्गल जो जाति से ब्राह्मण थे, से विवाह रचाया। अवध नारायण व्यवसाय से पत्रकार थे और बाद में हिन्दी पत्रिका सारिका के सम्पादक भी बने। जहां तक व्यवसाय का सवाल है तो उनकी प्रसिद्धि एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अधिक है। इसी के साथ-साथ भारतीय फिल्म सैंसर बोर्ड की सदस्य भी रही। इसके साथ उन्होंने माधुरी, टाइम्स ऑफ इंडिया के आवरण कथा लेखक के रूप में प्रकाशन चार वर्ष के लिए

किया। वह प्रसार भारती कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया, बोर्ड की सदस्य रही। चित्रा मुद्गल ने हिन्दी सलाहकार समिति के अन्तरिक्ष तथा परमाणु ऊर्जा विभाग और पोस्ट एवं तार विभाग की सदस्यता के रूप में भी कार्य किया। चित्रा मुद्गल को उनकी साहित्यिक कृतियों के लिए ही नहीं अपितु अनेक सामाजिक कार्यों के लिए भी अनेकों पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सन् 2018 में उन्हें प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें उनकी कृति 'पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा' के लिए मिला।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विशिष्ट साहित्यकारों में चित्रा मुद्गल का अग्रणी स्थान है, उन्होंने समाज परिवार के भौतिक परिवेश में जिस कटु यथार्थ को भोगा उसी का प्रभाव उनके साहित्य में देखने को मिलता है। उनकी रचनाओं में असंतोष, अनुराग, विद्रोह के साथ तीखे व्यंग्य विनोद, आम आदमी की जरूरतों, संवेदनाओं, महानगरीय क्रिया कलापों आदि का यथार्थवादी चित्रण देखने को मिलता है। लेखिका ने न केवल कहानियां और उपन्यास लिखें हैं, बल्कि नाटक, अनुदित कार्यों आलेखों आदि साहित्यिक विधाओं में बहुचर्चित सृजनात्मक कार्य भी किए हैं। उनके उपन्यास साहित्य में 'एक जमीन अपनी' 1990 ई., आवां 1999 ई., गिलिगडु, पृष्ठों की मुहिम 2000 ई., एक काली एक सफेद, इनका नया उपन्यास है। इसी के साथ कहानी संग्रह में 'जहर ठहरा हुआ' 1980, 'लाक्षागृह' 1982, 'अपनी वापसी' 1983, 'इस आम में' 1986, 'जगदम्बा बाबू गांव आ रहे हैं' 1992, 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' 1995, 'जिनावर' 1996, 'लक्कड़बग्घा' 1998 'केंचुल' 2001, 'भूख' 2001, 'लपटें' 2002, 'आदि अनादि' 2007 आदि। चित्रा मुद्गल ने उपन्यास और कहानी के अतिरिक्त नाटक, बाल उपन्यास, आलेख व अनुदित कार्य भी किए हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विशिष्ट साहित्यकारों में चित्रा मुद्गल का अग्रणी स्थान है। उनकी रचनाओं में असंतोष, अनुराग, विद्रोह के साथ तीखे व्यंग्य विनोद, आम आदमी की जरूरतों, संवेदनाओं आदि का यथार्थवादी चित्रण देखने को मिलता है।

नाटकों में पंच परमेश्वर और अन्य नाटक, सद्गति और अन्य नाटक, बूढ़ी काकी और अन्य नाटक, बाल उपन्यास में माधवी कनाकी, मणिमाखले, जीवक चिंतामणी आदि। इसी के साथ-साथ अनुवादित कार्य व बहुत सी पुस्तकों का सम्पादन कार्य भी सम्भाला। अत: हम कह सकते हैं कि चित्रा मुद्गल हिन्दी की श्रेष्ठ रचनाकारों में से एक है, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में अपना भरपूर योगदान दिया है। उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा जनसाधारण में चेतना लाने का प्रयास किया है।भारतीय समाज की बात करें तो यहीं स्त्री-पुरुष के साथ एक ऐसा जेंडर भी है, जिसे थर्ड जेंडर के नाम से जाना जाता है। वर्तमान समय में किन्नर विमर्श ने काफी जोर पकड़ा है, क्योंकि यह वर्ग अपनी अस्मिता, अपने अस्तित्व तथा अपनी पहचान की लड़ाई लड़ रहे हैं, जिससे वे सदियों से वंचित रहे। शिक्षा, प्यार, सम्मान व रोजगार से वंचित थर्ड जेंडर का जीवन बहुत ही दुखद है। थर्ड जेंडर के कुछ लोग ऐसे भी है, जिन्होंने अपनी विकलांगता पर विजय प्राप्त कर समाज में अच्छा मुकाम हासिल किया। कुछ समाज सेवी संगठनों द्वारा व स्वयं किन्नर समुदाय के लोगों द्वारा किए गए प्रयासों के बावजूद सुप्रीम कोर्ट ने किन्नर को एक नई पहचान दी। उन्हें थर्ड जेंडर का दर्जा देकर उन्हें अधिकार दिए, जो एक सामान्य नागरिक को दिए गए हैं। ''15 अप्रैल, 2014 को हर सरकारी दस्तावेज में महिला व पुरुष के साथ-साथ थर्ड जेंडर के कॉलम का विधान किया गया। आज सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद थर्ड जेंडर को अन्य नागरिकों की तरह मौलिक अधिकार प्राप्त है।''[5] किन्नर पर विस्तार पूर्वक विमर्श करने से पूर्व किन्नर या थर्ड जेंडर को जानना अति आवश्यक है।

किन्नर के लिए दरमियाना अर्थात् न जनाना और न ही मर्दाना। यह एक ऐसा शब्द है, जिसे सोचते ही मस्तिष्क में बहुत सारे विचार आने लगते हैं।, ''थर्ड जेंडर यानी ट्रांस जेंडर यानी टी. जी. समुदाय। हिन्दी में इनके लिए किन्नर, पंजाबी में खुसरा, तेलगु में नपुसकुडू, उर्दू में हिजड़ा, अंग्रेजी में एउनुछ (eunuch), गुजराती में पवैय्या, कन्नड़ में जोगप्पा आदि शब्द प्रचलित हैं।''[6] इन्हें वृहन्नला, शिखंडी तथा छक्का भी कहा जाता है। आज सरकार ने इन्हें ट्रांस जेंडर व तीसरा लिंग शब्द से सम्बोधित किया है। किन्नर को परिभाषित करते हुए सतीश चन्द्र शर्मा लिखते हैं, ''किन्नर वह होते हैं जो न नर होते हैं न मादा। इन्हें थर्ड जेंडर भी कहा जाता है।''[7] ज्योतिष के अनुसार माना जाता है कि वीर्य की अधिकता से पुत्र, रज की अधिकता से पुत्री तथा वीर्य व रज की समान मात्रा से संतान किन्नर उत्पन्न होती है। मनुष्य जाति के पृथ्वी पर होने से ही किन्नरों का भी इतिहास माना जाता है। पुराने ग्रंथों में किन्नर समुदाय का

उल्लेख मिलता है। रामायण के अयोध्या कांड में वनवास पर जा रहे भगवान राम ने जब सभी नर नारी को वापिस कर दिया था तब यह वर्ग चौदह वर्ष उनके साथ उन्हीं की प्रतीक्षा में रहा।

महाभारत में भी अर्जुन वनाम वृहन्नला और शिखंडी के प्रसंग मिलते हैं। कौटिल्य ने भी इनकी उपयोगिता का वर्णन किया है। किन्नर राज दरबारों में भी काम करते थे। इन्हें हरम में सुरक्षाकर्मी के रूप में रखा जाता था। स्वतन्त्रता संग्राम में भी इनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। ब्रिटिश सरकार ने हिजड़ा समुदाय को अपराधी घोषित कर दिया था। 1999 में पहली बार कोई ट्रांस जेंडर एम.एल.ए. चुना गया था। अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए किए गए प्रयासों के परिणाम स्वरूप 2014 में इन्हें मौलिक अधिकारों की प्राप्ति हुई। अपने अधिकारों के लिए थर्ड जेंडर समुदाय के लोग निरंतर प्रयासरत है। वास्तविकता यह है कि आज भी यह वर्ग पीड़ा जनक जीवन जी रहा है। समाज में एक श्रेष्ठ स्थान प्राप्त नहीं कर पा रहा।

चित्रा मुद्‌गल ने अपने उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' में एक बच्चे के माध्यम से पूरी कहानी ही नहीं, अपितु उसके माध्यम से उन संवेदनशील मुद्दों को भी उठाया है, जिन्हें अक्सर दरकिनार कर देते हैं। शारीरिक रूप से अक्षम होने में एक बच्चे का क्या दोष। उपन्यास में लेखिका ने विनोद उर्फ बिन्नी के माध्यम से किन्नरों की पीड़ा का उनके घुटन व एकाकीपन का यथार्थ चित्रण किया है और साथ ही साथ समाज की किन्नर समुदाय के प्रति क्या सोच है, इस पर भी प्रकाश डाला है। यह उपन्यास विनोद उर्फ बिन्नी के माध्यम से किन्नर संघर्ष की कहानी ब्यां करता है। विनोद के माता-पिता जब तक सम्भव हुआ, उसे अपने पास रखते हैं। लेकिन जैसे ही लोगों को उसके किन्नर होने का पता चलता है तो घरवाले उसे किन्नरों को देने के लिए विवश हो जाते है। यह कैसा समाज है कि एक अंग की कमी होने के कारण बच्चे को समाज में रहने का कोई स्थान ही नहीं। एक बच्चा जिसे उसकी मां से अलग कर दिया जाए तो वह कितना छटपटाएगा, तड़पेगा साथ ही उसकी मां की क्या दशा होगी, इसका करुणामूलक वर्णन चित्रा जी ने 'नाला सोपारा' में किया है। विनोद की मां घर की बंदिशों के बावजूद भी एक नया रास्ता खोजती है। वह पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 ले लेती है तथा पत्रों के माध्यम से विनोद से सम्पर्क बनाए रखती है।

चित्रा मुद्‌गल ने इस उपन्यास के माध्यम से दर्शाया है कि लैंगिक विकृति से ग्रस्त मंझला बेटा विनोद, ''तीव्र मेधा सम्पन्न जन्म से ही पुरुषांग से वंचित है। लेकिन खेल-कूद, गणित और कंप्यूटर में अतीव प्रतिभा का धनी है। स्कूल में अव्वल रहने वाला अध्यापकों का प्रिय छात्र है।''[8] इतनी प्रतिभा का धनी होने के बावजूद भी उसे साधारण बच्चों के समान पढ़ने का अधिकार नहीं है। परिणामस्वरूप उसे सामाजिक रूढ़ियों के चलते किन्नर समुदाय को सौंपा जाता है। मजबूरी में परिवार वालों को विनोद की एक मोटर दुर्घटना में मरने की झूठी खबर आस पड़ोस व स्कूल में देनी पड़ती है। किन्नर समुदाय में शामिल होने पर बिन्नी बच्चे विनोद के संघर्ष की कहानी खत्म नहीं होती, जीवन में और ज्यादा संघर्ष देखने को मिलते हैं। माता-पिता के घर में पला 15, 16 वर्ष का विनोद, बिन्नी का जीवन जीने को तैयार नहीं हो पाता, क्योंकि उसे यह सब अच्छा नहीं लगता। मगर शरीर में एक अंग की कमी होने के कारण उसे नरकीय जीवन जीने को मजबूर होना पड़ता है। किन्नर आवास में विनोद की मुलाकात पूनम, चंदा व सायरा से होती है। वह अपनी पढ़ाई पूरी करना चाहता था, जिसमें पूनम उसकी मदद करती है तथा विनोद को विधायक के यहां पत्र व्यवहार की नौकरी मिल जाती है। परन्तु विधायक के मन में कोई और ही योजना चल रही थी। ''विधायक जी आने वाले चुनाव में किन्नरों को आरक्षण एवं सुविधाओं के प्रलोभन के द्वारा विनोद के माध्यम से अपना वोट बैंक सुनिश्चित करना चाहते थे।''[9] लेकिन विनोद आरक्षण नहीं अधिकार की बात करना चाहता था। इसलिए जब विनोद को चण्डीगढ़ भेजा गया तो विधायक की सारी योजना ध्वस्त हो गई। बोखला कर विधायक फोन पर बातें करता है, ''क्यों विनोद सीने पर समाज सुधारक का तगमा लटकाने का शौक चढ़ आया? राजा राममोहन राय बनना चाहते हो? सभा में तुम्हें आरक्षण की बात उठानी थी और तुम पाठ पढ़ाने लगे, स्वाभिमान का। विनोद भी समझदार बहुत था तुरंत तिवारी विधायक को जबाव देता है- किन्नरों के धड़ के नीचे लिंग न सही, धड़ के ऊपर मस्तिष्क भी नहीं, यह कैसे सोच लिया आपने''[10] अत: स्पष्ट है कि विनोद अपने वर्ग की पीड़ा से अभिभूत होकर उनके लिए कुछ करना चाहता था।

समाज में किन्नर के प्रति सोच उस समय पता चलती है, जब विधायक जी ने अपने भतीजे बिल्लू के जन्मदिन पर पार्टी रखी तथा उसमें पूनम व चंदा को भी नाच-गाने के लिए बुलाया गया था। पार्टी सम्पन्न होने के बाद बिल्लू व उसके दोस्त पूनम के साथ अप्राकृतिक बलात्कार कर उसे अधमरा छोड़ देते हैं। पूनम जो कि खून से लथपथ थी, को अस्पताल में भर्ती किया गया और विधायक ने बिल्लू तथा उसके दोस्तों को अज्ञात स्थान पर भेज दिया। हैरानी तो तब होती है, जब विधायक पुलिस वालों को ब्यान देते हैं, ''बच्चों की नादानी

पर इन्हें खेद है, जवान खून है, बहक गया होगा।"[11] अतः स्पष्ट है कि किन्नर समुदाय के प्रति समाज की सोच आज भी निंदनीय है।भारत में आज भी थर्ड जेंडर के प्रति अपनी सोच नहीं बदल रही है। अगर कोई किन्नर अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ता है तो उसके प्रति कैसा क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया जाता है। यह बात हमें इस उपन्यास के अंत में दिखाई देती है। जब जंतर-मंतर में अखिल भारतीय किन्नर आंदोलन का सूत्रपात होने जा रहा था तथा विनोद उसकी अगुआई करने जा रहा था, अगले ही दिन अखबार में एक किन्नर की सिर कटी लाश की सूचना मिलती है। चित्रा मुद्गल ने बिना कहे स्पष्ट कर दिया कि विनोद की हत्या के पीछे समाज के सफेदपोश लोगों का हाथ था। इस प्रकार हम कह सकते है कि 'पोस्ट बाक्स नम्बर 203 नाला सोपारा' में लेखिका ने थर्डजेंडर की पीड़ा का यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास में चित्रित विनोद के माध्यम से उन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि शरीर में एक अंग की कमी होने के कारण किन्नर समुदाय के लोगों को कैसे नरकीय जीवन जीना पड़ता है, जिसमें चित्रा जी बखूबी सफल हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आर.एस. शर्मा, छात्र का विकास एवं शिक्षण प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो मेरठ, 2008
2. श्री नवल जी, नालंदा विशाल शब्द सागर, आदीश बुक डिपो, नई दिल्ली,1988
3. राम चन्द्र वर्मा, संक्षिप्त हिन्दीशब्द सागर, नागरी प्रचारिणीसभा काशी, 2014
4. डोरीलाल अग्रवाल, अमर उजाला, 15 जून, 2008
5. सफलता सरोज, किन्नर विमर्श : कल आज और कल, अमन प्रकाशन कानपुर, 2019
6. सफलता सरोज, किन्नर विमर्श : कल आज और कल, अमन प्रकाशन कानपुर, 2019
7. सतीश चन्द्र, किन्नरों के विषय में, अमन प्रकाशन कानपुर, 2019
8. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, 2016
9. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, 2016
10. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, 2016
11. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, 2016

सहायक आचार्य हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय
कण्डाघाट, सोलन-173215

कविता

हाइकु
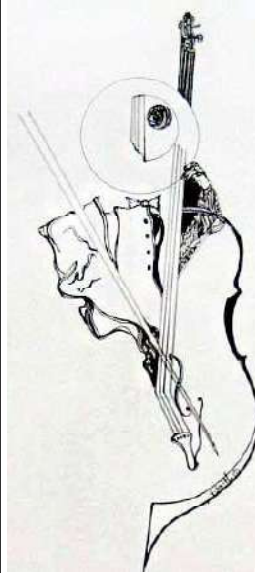
✍ इन्द्रा रानी

भायी नहीं थी
मेरी मुस्कान उसे
आंसू दे गया।

धरती नहीं
लगाती रहूं फेरे
आफताब हूं।

दहलीज से
सभी रास्ते पलटे
बंद किवाड़।

एकाकी नारी
मांगे कोई अपना
नकारे लोग।

धूप जीवन
चले चक्र सृष्टि का
अनवरत ....

खिले गुलाब
गीत बन महके
गौरी के मुख।

झूठ बोलना
न व्यथित करता
अगर भला हो।

सहूलियत
देने लेने से बढ़े
प्रसिद्धि यहां।

स्वार्थी संबंध
मुखौटे पहनते
कड़वा सच।

हक आखिरी
सौंप कर मौत को
सोना जी भर।

826 महागुन मेन्सन,
सियाना, वैभव खंड
इंदिरापुरम गाजियाबाद
-201014
मो. नं. 8268369608

लघुकथा

✍ यशोधरा भटनागर

तपस्विनी

"**अम्मा** पापा कब आएंगे ?" हल्दी से सजी गुड्डू ने बड़े परेशान से स्वर से पूछा।

"का बताए तुमाए बाबा का, फौजी है, जब छुट्टी मिलहै तबहिं आ है। हमेसा तो सरपराइज ही देत है। अबै भी कछु ऐसो ही हुइए। अपने बिटिया की सादी में भी समय पर नहीं आ सकत।" कहते हुए रामदई की आंखें भर आईं।

"कितनो काम है रे दैया, अकेले ही सब करनो पड़त है।"

छोटी को साथ मेहमानों के खाने-पीने के इंतजाम में जुट गई। खाना तो महाराज ने बना लिया था पर हर मेहमान का ध्यान तो उसे ही रखना है। नहीं तो सब उनका ही नाम रखेंगे।

गोटा लगी गुलाबी साड़ी में लिपटी रामदई बहुत सुंदर लग रही थी। कलाई भर-भर गुलाबी चूड़ियां, नाक में बड़ी सी लौंग, माथे पर सुर्ख लाल बिंदी, मांग में दमकता सिंदूर, लापरवाही से बने जूड़े में खुंसा लाल गुलाब। बार- बार आंखें दरवाजे को तक लेतीं।

पूरी मुस्तैदी से बड़की की शादी की सारी व्यवस्थाएं अकेले संभाले हुए थी। फौजी की पत्नी जो ठहरी। सात फेरों के सात वचनों के साथ, एक अबोला-एक अबांचा वचन भी तो निभाना पड़ता है। पति तपस्वी सा सीमा पर सजग प्रहरी सा डटा है तो पत्नी एक तपस्विनी सी पूरी शक्ति से परिवार को संभाले रहती है पर आज ना जाने क्यों उसका जी घबरा रहा है। "नहीं-नहीं राम जी सब ठीक होगो। मुआ फोन भी तो नहीं लग रओ। ये फौजी भी न जाने कितै-कितै को घूमत हैं। हमेसा ही नेटवर्क नईं मिलत।"

"अम्मा आपसे मिलने कोई फौजी साहब आए हैं।"

"तुमाए बाऊजी ने उनको भी बुलऊआ भेज दओ।" सिर पर पल्ला खींचती हुई बाहर को गई।

मेजर साब के साथ फौजी वर्दी में चार-पाँच लोग और थे "हमें आपसे कुछ बात करनी है।"

"अरे अंदर चलिए गुड्डो के बाबू का सोचेंगे सादी के घर में हमने आपको....।"

"हमारी बात तो सुनिए लांस नायक हिम्मत सिंह चार आतंकियों को मौत के घाट उतार कर खुद शहीद हो गए हैं। बहुत वीर थे वो....उनके पार्थिव शरीर को गाँव लाने में दो -तीन दिन लग सकते है।"

रामदई कुछ भी सुन-समझ नहीं कर पा रही थी ।

"अम्मा! अम्मा! हमारी लाल साड़ी कहां रखी है?" गुड्डी का स्वर उनके कानों में पड़ा रामदई आँखें पोंछ दृढ़ स्वर में बोली-

"साहब एक बिनती है हियाँ घर में अभी किसी को कछु न कहना। बिटिया को हल्दी लग गई है बारात भी आ चुकी है....।"

हृदय में तूफान लिए हल्दी सने हाथों को जोड़ कर वह तपस्विनी अंदर चली गई।

कंधे पर जिम्मेदारियों का बोझ और बढ़ गया था।

"आज अंगना मेरा सूना
बन्नी मोरी पाहुनिया...
बाबा ने ऐसा पाला
कि नैन बिच पुतरिया ....।"

बन्नी और ढोल का स्वर तेज हो गया।

37, एचआईजी. सीनियर मुखर्जी नगर,
पायोनियर पब्लिक स्कूल के सामने एम.आर.09,
(बीमा रोड), देवास, (म.प्र.)-455001

24 मई को जन्मदिन पर विशेष

सर्वोच्च बलिदान के ध्वजवाहक मेजर सुधीर वालिया

अनिल गुलेरिया

भारत माता की सरहदों की रक्षा, आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई और विभिन्न सैन्य ऑपरेशनों में भारतीय सेना के असंख्य वीरों-शूरवीरों ने समय-समय पर अदम्य साहस का परिचय दिया है। इनमें से अग्रणी वीरों-शूरवीरों में से एक थे शहीद मेजर सुधीर वालिया। लगभग एक दशक के सेवाकाल में ही दो-दो सेना मेडल प्राप्त करना, श्रीलंका में भारतीय शांति सेना में उत्कृष्ट कार्य करना, अमेरिकी सेना के साथ प्रशिक्षण के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन, विश्व के सबसे ऊंचे युद्धस्थल सियाचिन ग्लेशियर में दो-दो बार पोस्टिंग, भारतीय थल सेना अध्यक्ष के एडीसी के रूप में कार्य, कारगिल युद्ध में अदम्य साहस का परिचय और उसके बाद आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में अकेले ही 9 आतंकियों को मौत के घाट उतारना तथा घायल होने के बावजूद ऑपरेशन को सफलतापूर्वक अंजाम देने के साथ ही वीरगति को प्राप्त करना एवं शांतिकाल के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार अशोक चक्र (मरणोपरांत) से अलंकृत होना। मेजर सुधीर वालिया की वीरता के किस्सों की फेहरिस्त इतनी लंबी है कि इसको पढ़ते हुए एक आम व्यक्ति ही नहीं, बल्कि वीर सैनिक और सैन्य विशेषज्ञ भी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। सचमुच एक अलग ही 'मिट्टी' के बने हुए थे मेजर सुधीर वालिया। किसी भी तरह का डर या भय तो शायद उनके शब्दकोष में ही नहीं था। तभी तो वह भारतीय थल सेना के कठिन से कठिन ऑपरेशन के लिए सदैव सबसे आगे ही रहते थे। कारगिल युद्ध के दौरान वह भारतीय थल सेना अध्यक्ष जनरल वीपी मलिक के एडीसी थे, लेकिन युद्ध छिड़ने के बाद भला मेजर सुधीर वालिया कैसे शांत बैठ सकते थे। उस समय उन्होंने थल सेना अध्यक्ष से विशेष अनुमति ली और कारगिल के अग्रणी मोर्चे पर पहुंच गए। मेजर सुधीर वालिया के जीवन की कहानी आज भी सभी के रोंगटे खड़े कर देती है।

मेजर सुधीर वालिया को उनकी बहादुरी के लिए उनके साथी सैन्य अधिकारियों ने 'रैंबो' नाम दिया था। वह भारतीय सेना की उच्च परंपराओं, बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान के सबसे बड़े ध्वजवाहकों में से एक थे।

24 मई 1969 को पालमपुर के निकट गांव बनूरी में सूबेदार रुलिया राम और राजेश्वरी देवी के घर जन्में सुधीर वालिया बचपन से ही बहुत मेधावी थे। प्राइमरी शिक्षा के बाद वर्ष 1978 में उनका चयन सैनिक स्कूल सुजानपुर टीहरा के लिए हो गया। वह इस सैनिक स्कूल के पहले बैच के छात्र थे। इसके बाद वह राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) खडगवासला के लिए भी सेलेक्ट हो गए। एनडीए और भारतीय रक्षा अकादमी (आईएमए) देहरादून में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद सुधीर वालिया ने जून 1988 में थल सेना की जाट रेजिमेंट में सेकंड लेफ्टिनेंट के रूप में अपनी सेवाएं आरंभ कीं। इसके तुरंत बाद उन्हें भारतीय शांति सेना में श्रीलंका भेजा गया।

श्रीलंका में वीरता का परिचय देने के बाद भारत लौटे सुधीर वालिया ने 9 पैरा (स्पेशल फोर्सेज) यूनिट में जाने का निर्णय लिया। यह यूनिट भारतीय थल सेना की वह यूनिट है जिसे पर्वतीय युद्धों एवं ऑपरेशनों में महारत हासिल है। सुधीर

वालिया अग्रणी मोर्चों एवं कठिन ऑपरेशनों में भाग लेने के लिए हमेशा आगे रहते थे और यही कारण है कि उन्होंने विश्व के सबसे ऊंचे युद्ध स्थल सियाचिन ग्लेशियर में स्वयं दो-दो बार पोस्टिंग ली। अग्रिम मोर्चों एवं जम्मू-कश्मीर में आतंकरोधी ऑपरेशनों में वीरता के लिए वर्ष 1994 में सुधीर वालिया को सेना मैडल से अलंकृत किया गया और जून 1993 में वह कैप्टन के रूप में पदोन्नत हुए। वर्ष 1997 में उन्हें स्पेशल ट्रेनिंग के लिए अमेरिका भेजा गया। वहां सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए उन्हें अक्सर 'कर्नल' ही कहा जाता था। इसके बाद उन्हें भारतीय थल सेना के तत्कालीन अध्यक्ष जनरल वीपी मलिक का एडीसी नियुक्त किया गया।

लेकिन, कारगिल युद्ध छिड़ते ही उन्होंने थल सेना अध्यक्ष से विशेष आग्रह किया और कारगिल के अग्रिम मोर्चे पर जाने की इच्छा जाहिर की। दिल्ली से रवानगी के मात्र दस दिनों के भीतर ही उन्होंने कारगिल की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों एवं जलवायु के अनुरूप अपने शरीर को ढालने की परवाह किए बगैर ही अपनी टीम का नेतृत्व करते हुए मश्कोह घाटी की जूलू चोटी को फतह कर लिया। जब सेना के वरिष्ठ अधिकारियों ने सुधीर वालिया से इस जोखिम भरे ऑपरेशन की चर्चा की तो उनका यही कहना था, 'सर मैं पहाड़ी हूं, मुझे अनुकूलन (अपने शरीर को जलवायु के अनुरूप ढालना या तैयार करना) की आवश्यकता नहीं है।'

कारगिल युद्ध के तुरंत बाद सेना को एक बड़ी जानकारी मिली थी कि कुपवाड़ा के जंगलों में आतंकवादी किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की फिराक में है। यहां भी मेजर सुधीर वालिया ने आतंकवादियों का सफाया करने के लिए सेना की टुकड़ी का नेतृत्व अपने हाथों में ले लिया और उन्होंने 20 में से 9 उग्रवादियों को स्वयं मार गिराया, लेकिन इस दौरान वह गंभीर रूप से घायल हो गए। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वह अपनी टुकड़ी को लगातार आदेश देते रहे तथा इस ऑपरेशन को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। 29 अगस्त 1999 को आतंकवादियों को मार गिराने के बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया, लेकिन अस्पताल पहुंचने से पहले ही वह शहीद हो गए।

इस अदम्य साहस के लिए मेजर सुधीर वालिया को जनवरी 2000 में शांतिकाल के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार अशोक चक्र (मरणोपरांत) से अलंकृत किया गया। मेजर सुधीर वालिया को उनकी बहादुरी के लिए उनके साथी सैन्य अधिकारियों ने 'रैंबो' नाम दिया था। वह भारतीय सेना की उच्च परंपराओं, बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान के सबसे बड़े ध्वजवाहकों में से एक थे।

जिला लोक सम्पर्क अधिकारी हमीरपुर, हि.प्र.

कविता

माँ

डॉ. सुधाकर आशावादी

धरती की सहिष्णुता
आकाश का विराट अस्तित्व
अग्नि का तेज
जल की शीतलता
वायु का वेग
जब एकाकार हुआ
तब अवतरित हुई माँ
माँ -
जिसकी कोख से उपजी सृष्टि
जिसने रोपे
कोमल बचपन में
नैतिकता भरे आचार विचार
अंकुरित किये
जीयो और जीने दो के उत्कृष्ट संस्कार।
डगमगाते कदमों को सिखाया
संभल-संभल कर आगे बढ़ना
साथ ही सौंपे
नेह की मथनी से मथे
जीवन निष्कर्ष।
ताकि पथरीली डगर भी
बन जाए समतल सपाट
और कोई कंकड़ भी आहत न कर सके
फूल सी संतान के कोमल कदमों को।

शास्त्री भवन, ब्रह्मपुरी, मेरठ
मोबा- 9758341282

कहानी

अराधना आई.ए.एस. की परीक्षा देना चाहती थी और इसके लिए उसे कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। माँ अपनी जिद्द पर अड़ी थी। इस बार उनका तर्क था कि ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की को वर मिलना मुश्किल होता है। लेकिन पिता जी उसे प्रोत्साहित करते रहे। शायद उसके पिताजी की सुप्त इच्छा रही होगी कि उसकी बेटी भी प्रशासनिक सेवा में जाए।

शून्य

मूल लेखक (अंग्रेजी) : डॉ. उषा बन्दे
अनुवाद : ✍ डॉ. देवेन्द्र गुप्ता

अराधना ने अपने ड्रेसिंग टेबल के आदमकद शीशे में अपने को निहारा। एक हल्की-सी मुस्कान उसके चेहरे पर खिल गई और चेहरे पर आभा निखर आयी। उसने शीशे में दोबारा देखा और मन में खुशी की एक लहर उछल गई। 'अड़तीस' वो फुसफुसाई। अपने चारों ओर घूमी और एक बार फिर अपने को गौर से आईने में देखा, 'अड़तीस' क्या कोई उसकी उम्र का अंदाजा लगा सकता है?'

'औरत की उम्र उतनी ही होती है जितनी कि वह दिखती है'। अराधना ने हमेशा अपने ईद-गिर्द यौवन का एक प्रभामंडल बनाए रखा है। वह अड़तीस से एक भी दिन ज्यादा की नहीं दिखती थी। ऐसा लगता था कि मानो वक्त उसके वास्ते ठहर-सा गया है।

सैंडल में पांव डालते हुए उसने पुकारा, 'बिरजू काका'!। बूढ़ा बिरजू कमरे से दौड़ता चला आया। इतनी सुबह अपनी युवा, फुर्तीली मालकिन को तैयार हुआ देख कर हैरान था। अराधना ने उसके चेहरे पर फैली हैरानी को पढ़ लिया था, पर कुछ देर के लिए इस रहस्य को लंबित रखने में उसे शरारत भरा आनंद आ रहा था।

'अच्छा बिरजू काका, मै जा रही हूं' ---- स्टेशन तक'!! उसने 'स्टेशन तक' को थोड़ा देर से कहा। बिरजू काका स्टेशन का उच्चारण करने का हमेशा प्रयास करता दिखता परन्तु कहता टेंशन ही था। ' हां काका स्टेशन। मेधा अपने पति के साथ बॉम्बे से आ रही है'। उसने उत्साह के साथ कहा।

'ओह! मेधा बेटी -? मेधा आ रही है'! ऐसा कहते हुए उसकी आंखें मानो अतीत को चीरती हुई दूर तक देखने लगी। 'और बच्चे'? उसने पूछा।

'मालूम नही' उसने अपनी घड़ी में देखते हुए बेरुखी से कहा, 'अरे! अब मुझे निकलना चाहिए। काका, सब कुछ साफ सुथरा, एकदम टिच होना चाहिए'। उसने कमरे का मुआयना करते हुए जरा रौब से कहा। आवाज में एक अजीब-सा रौब था जो वह अमूमन ऐसा नहीं करती थी। असल में कमरे में हर चीज अपनी जगह चमचमा रही थी और एहतियात के साथ व्यवस्थित थी, उसको अपने ही दिशानिर्देश जरूरत से ज्यादा लगे।

'और... उनको हर चीज सलीके से पेश करना। और जो टोक्यो से मैने नया टी सेट लाया है, निकाल देना'।

'जापानी' ...।

हूं... और डिनर सेट'?

'अंग्रेजी... है ना'! बिरजू को अब तक पता लग गया था कि विशेष अतिथियों की आवभगत कैसी करनी है और उसकी ग्लैमरस युवा मालकिन के पसंदीदा चाइना सेट्स कौन से है।

जैसे ही वह जाने के लिए मुड़ी मन में यह जानने की उत्सुकता जगी कि क्या बूढ़ा बिरजू काका उसकी अंदर छिपी हुई दिखावे की प्रवृत्ति को समझ गया होगा? क्या उसकी

अनुभवी नजर अराधना के मन की टोह ले सकते हैं? खैर, अराधना ने कभी इन बातों की न परवाह की थी न ही उसने जानने की कोशिश की।

विचारों को एक तरफ झटकते हुए उसने अपने इर्द-गिर्द का एक बार फिर मुआयना किया। कमरा सचमुच किसी पिक्चर पोस्टकार्ड की भांति लग रहा था ... सब कुछ चमकदार और सुन्दर...धूल एक कण भी नहीं! सीढ़ियों पर पैरों के नीचे बिछा कारपेट बहुत ही गुदगुदा लग रहा था।

नई फिएट कार को ड्राइवर ने धो-धा कर पोर्च में खड़ा कर दिया था। उसने मालकिन को आते हुए देख लिया और कार के पास खड़ा होकर सैल्यूट किया।

'मैं खुद चली जाऊंगी। अपने बेटे को मेरे साथ भेज दो'। उसने आदेश दिया।

'जी साहब'..! चालक ने सलाम किया और छूटने का उसांस भरा।

सुबह के वक्त पहाड़ी घुमावदार सड़क खाली थी। जब तक वह शिमला कालका हाइवे पर नहीं पहुंच गई तब तक उसने संभल कर गाड़ी चलाई।

हाइवे चौड़ा और समतल था। उस पर गाड़ी जैसे फिसली जा रही थी। उसे स्पीड में गाड़ी चलाना मजा दे रहा था। उसने स्पीड को हमेशा से ही चाहा है चाहे वो जीवन में, गाड़ी में या विचारों में... यह उसका एक स्वभाव था। अप्रैल का महीना था और निचली पहाड़ियां प्रकृति के रंगों से सरोबार थी। हरे रंग की ही इतनी छटाएं थीं मानों किसी महान चित्रकार की कूंची ने जादू बिखेर दिया था। आसमान में पक्षी उड़ान भर रहे थे और पहाड़ी पर चारों ओर चहचहाट हो रही थी। सड़क पर कुछ पक्षी चुग रहे थे ... कबूतर थे या तितर उसे पक्का मालूम नहीं। पर जैसे ही उनको कार की आवाज सुनाई दी वह फुर्र से उड़ गए।

पक्षियों की क्या बात करें, उसके अपने दिल में सैकड़ों कोयल कूक रही थीं। वह मेधा से 15 साल के बाद मिलेगी. .. यह ख्याल आते ही उसके मन में हल्की सी हलचल मची। वह देखने में कैसी लगती होगी? क्या पहले जैसी ही? छरहरी और पतली-सी। दिलकश और हाजिरजवाब, अपनी शरारती चमकीली आंखो के साथ? आखिरकार वह दोनों हम-उम्र थी। अगर वह इतने सालों में नहीं बदली है तो मेधा भी क्यों बदली होगी?

अराधना अपने बचपन में पहुंच गई थी। यौवन का वह एक बड़ा गंभीर संग्राम और अंत में उसने विजय प्राप्त की थी। जैसे ही उसने 10 वीं की परीक्षा देनी शुरू की थी, माँ उसके लिए एक योग्य वर खोजने को उत्सुक हो गई थी। माँ की दलील पक्की थी, 'अब हमें तुम्हारे लिए वर ढूंढना होगा, इससे पहले कि तुम्हारी बहनें विवाहयोग्य हो जाये। ये लड़कियां इतनी जल्दी बड़ी हो जाती है'? वही सदियों पुरानी सड़ी हुई सोच।

अराधना ने अपने पिता को मनाया कि पहले उसकी ग्रैजुएशन को पूरा होने दिया जाए। पिता सहमत हो गए परन्तु माँ नहीं मानी। घर में रोज ड्रामा होता पर अंत में किसी तरह उसकी ही चली।

उसने ग्रैजुएशन कर ली और उन्हीं दिनों वहां मधुर का प्रवेश हुआ...उसके पिताजी के कार्यालय में क्लर्क था ।माँ उस सुंदर आकर्षक लड़के पर मोहित थी। यह एक सौदा था...लड़का सरकारी नौकरी में था, देखने में अच्छा, नौजवान यहां तक कि स्वभाव में भी अच्छा और कोई दहेज नहीं। 'और इससे ज्यादा किसी और को क्या चाहिए'? माँ ने तर्क दिया। माँ की सोच इससे आगे जा न सकी। उसने नहीं सोचा था कि एक लड़की इससे भी ज्यादा चाह सकती है।

पर अराधना ने इस सुकुमार लड़के को तुरंत नापसंद कर दिया। वो बहुत सादा था, एकदम सरल। फिर, अराधना के मन में चल रही गुप्त योजना में वह ठीक नहीं बैठता था। 'मैं उससे शादी नहीं करना चाहती, माँ'। उसने अपनी आंखों में आंसू भरकर विनती की।

'तो क्या तुम बिन ब्याही रहना चाहती हो? बूढ़ी कन्या?

'हो सकता है। पर मैं उससे शादी नहीं करना चाहती'।

'देखो तो जरा इस लड़की के तेवर ...! लोग उसके पीछे पड़े हुए हैं।श्रीमती सिन्हा कैसे वह अपनी बेटी के लिए उस लड़के को फुसला रही है, मैंने देखा है। पर वह तुझे पसंद करता है'। माँ ने खुलकर बताया।

'तब श्रीमती सिन्हा को ही अपना भाग्य आजमाने दो'।

'अराधना'!... माँ चिल्लाई।

'मैं मात्र क्लर्क से शादी नहीं करना चाहती'। उसने बड़ी डिठाई से स्पष्ट सुनाया। एक क्षण के लिए माँ स्तब्ध रह गयी। वहां वह इस धृष्टता को पचा ही नहीं पाई। थोड़ी देर के लिए उसने फटकार लगाई। 'तू थोड़ा सोच...कौन-सा शहजादा तुझे व्याहने बारात लेकर आयेगा?। माँ ने उपहास उड़ाया। 'क्लर्क की लड़की ऊंचे ख्वाब देख रही है। यह कभी सच नहीं होने वाला, मैं बता दूं ... ये तुम्हारे खून में है। तुम्हारे पिता ने भी सपने लेने के इलावा इससे कुछ बेहतर नहीं किया अपनी जिंदगी में? और अब यही तुम करने जा रही हो'। और वह बोलती चली गई। अराधना माँ की बड़बड़ की परवाह किए बगैर वहां से चली गयी थी।

वह आई.ए.एस. की परीक्षा देना चाहती थी। और इसके लिए उसे कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। माँ अपनी जिद्द पर अड़ी थी। इस बार उनका तर्क था कि ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की को वर मिलना मुश्किल होता है। लेकिन पिता जी उसे प्रोत्साहित

करते रहे।शायद दफ्तर में अपने आई.ए.एस वरिष्ठों की उपेक्षा या बॉस के आदेशों के तले बीती दबी-दबी-सी जिंदगी से ऊबे उसके पिताजी की सुप्त इच्छा रही होगी कि उसकी बेटी भी प्रशासनिक सेवा में जाए।

उसने आई.ए.एस की परीक्षा दी और ऊंचे दर्जे में पास हुई। और विदेश सेवा का विकल्प चुना। वह उल्लासित थी। अब उसको इस दुनिया में कोई नहीं रोक सकता था। घर में हर कोई खुश था। माँ भी हर्षित थी, पर उसकी सहेलियों ने जब उसे मुबारकबाद व शुभकामनाएं दी तो उसकी प्रतिक्रिया हाव-भाव अजीब से थे 'मै इस जिद्दी लड़की का क्या करूँ? मै और खुश होती अगर वो शादी करती, घर बसा लेती और बाल-बच्चे वाली होती।

इस दरमियान मेधा की शादी हो गई थी। अराधना ने उसे मुबारकबाद दी पर दिल की गहराई में उसे मेधा पर तरस आ रहा था।मेधा मेधावी थी परन्तु महत्त्वाकांक्षी नहीं थी।

और तब से अराधना के जीवन ने एक अलग दुनिया में उड़ान भर ली थी। संसार के विभिन्न देशों में उसकी तैनाती होती रही। उसके भाई और बहनें अपने-अपने जीवन में रम गए थे। माँ ने अपनी होनहार बेटी के साथ अपना शिकवा मिटा दिया था और पिता को उस पर गर्व था। एक लम्बे अरसे के बाद अब कुछ महीने के लिए वह भारत अपने घर कसौली आयी थी।

मेधा को 15 साल के बाद देखने का ख्याल आते ही वह रोमांचित हो गई ।वह स्टेशन पर समय से पहले पहुंच गई थी। अराधना ने गाड़ी पार्क कर दी। ड्राइवर का बेटा उसके पीछे लगभग दौड़ रहा था। वह रेलवे स्टेशन पर होने के ख्याल से ही प्रसन्न था। ट्रेन समय पर आ गई। अराधना ने ए.सी युक्त कोच में अच्छी तरह से देखा, मेधा वहां नहीं थी। उसने प्रथम श्रेणी के डिब्बे में अंदर जाकर देखा इस पर वह निराश हुई। भीड़ उसके पीछे से निकल रही थी। वह वहां खड़ी रही और अपने को बेवकूफ समझ रही थी।उसने घर जाने से पहले एक आखिरी बार फिर से देखने का विचार बनाया। हो सकता है उन्होंने अचानक आने का प्लान बदल दिया हो।

और तब वह दिखी, खोई हुई सी... दूसरे दर्जे के डिब्बे के पास। उसके पास दौड़कर चली जाऊं, इतने समय के बाद उसे जाकर जफ्फी डालूं - ऐसा कुछ करने की तीव्र इच्छा अचानक बुझ गई । और अराधना जड़ हो गई। यह वो मेधा नहीं थी जिसको वह जानती थी। एक बर्फीली-सी सर्द अनुभूति उसके ऊपर छा गई। फिर भी, गर्मजोशी दिखाते हुए उसने उनका स्वागत किया। उसके पति ने हाथ जोड़ कर नमस्ते की।

अराधना ने उनको कनखियों से देखा। मेधा मोटी हो गई थी। उसके बालों में सफेदी की लकीरें उसे बूढ़ा बना रही थी। कोई भी उसके थके हुए चेहरे पर उभरती झुर्रियां देख सकता था। उसका पति भी बूढ़ा हो चला था।उसने जल्दी से आत्ममुग्धता में अपनी देह को मन-ही-मन निहारा-- अपने ताजातरीन जवान चेहरे को और अपनी चमकती आंखों को। संतुष्टि की अजब भावना ने उसको घेर लिया। शादी न कर के उसने कुछ खोया नहीं था।

लड़के ने सामान उठा दिया था...एक पुराना सूटकेस और बदरंग-सा बिस्तर-बंद! मन ही मन अपनी इस दोस्त पर उसे शर्म महसूस हुई परन्तु जल्दी ही अपने इस ओछेपन के लिए उसने अपने आप को लताड़ा। कुछ भी हो, उनके इस सामान में और उसके महंगे सामान में निश्चित तौर पर फर्क था।

'क्या हम टैक्सी से जा रहे हैं'? मेधा ने उत्तेजित होकर कहा। अराधना को ये सवाल बचकाना लगा। उसे आश्चर्य हुआ कि कभी इतनी होशियार रही उसकी सहेली को क्या हो गया है !

ज्यों ही उसने अपनी कार का दरवाजा खोला, उसने उनको तिरछी नजर से देखा, उनकी आंखों में आश्चर्य की झलक पाई। उनके लिए दरवाजा खोलते हुए वह मुस्कुराई 'हम सब आगे ही बैठ जाते हैं' उसने कहा।

'हां, दो लोग आगे बैठ सकते हैं...तुम तो दुबली-पतली हो, पर मेधा सारी जगह घेर लेगी इसलिए ठीक रहेगा मैं पिछली सीट पर बैठ जाऊं'। मनोज ने चुटकी ली।

'चलो जाओ... ज्यादा मसखरे मत बनो'... मेधा भभकी और अराधना के साथ सीट पर बैठती हुई दोनों के बीच भींच गई।

जैसे ही अराधना ने कार स्टार्ट की, मेधा अपने को कहने से ना रोक सकी, 'अरू सच कहूं तो तुम अब पहले से सुन्दर और युवा लग रही हो'।

'धन्यवाद', अराधना ने मुस्कान भरी, 'इस उम्र में मेरे लिए यह सुनना सचमुच टॉनिक जैसा है'।

बंगले पर पहुंचते ही मेधा और मनोज आश्चर्यचकित रह गए थे। उनकी आंखों से प्रशंसा स्पष्ट झलक रही थी और वह उनके होठों से व्यक्त हो रही थी। अराधना ने उनके निरीह उद्गारों को सुना, उनके हावभाव और बातचीत में कहीं ईर्ष्या नहीं थी हालांकि ईर्ष्या करने लायक बहुत कुछ था।अराधना
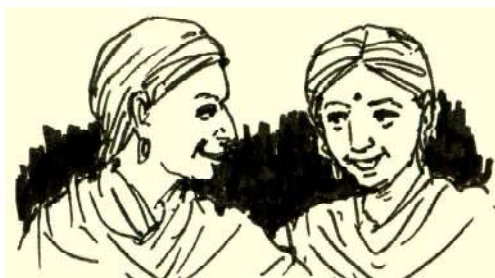
ने उनकी हर सहूलियत का ध्यान रखा। एक तो इस सरल दंपति के लिए गहरे स्नेह के कारण और कुछ उसकी अपनी दिखावे की आदत के चलते।

'तुम्हारा घर बिल्कुल फिल्मी सेट की तरह है, अरू'। मेधा ने कहा। सजे संवरे सुंदर लॉन, अच्छे से छांटी हुई बाढ़, सुन्दर फूलों की क्यारियां और बादाम, नाशपति व सेब के पेड़ों से भरा पूरा बगीचा। अंदर विक्टोरियन तथा आधुनिक युग का चमकदार फर्नीचर और आकर्षक ढंग से सजाए गए कमरे!

जल्द ही अराधना को मेधा बेजान और उबाऊ लगी। कितनी बार ऐसे ख्याल आने पर उसे बड़ी शर्म आती पर ख्यालों का सिलसिला चलता रहा। उसकी बातों में अब वह प्रखरता और पटुता नहीं थी। उसकी बातचीत उसके बच्चों, उसके पति और माली हालत के इर्द-गिर्द ही रहती थी। पहाड़ों की लुभावनी सुंदरता, शिमला की यात्रा, मनाली ट्रिप आदि ने भी उसे ज्यादा रोमांचित नहीं किया। ये ऐसा था कि जैसे उसकी कल्पना भोथरी हो गयी थी। वह निरंतर अपनी बेटी की शिमला में होने वाली शादी की चर्चा कर रही थी जिसके लिए उन्होंने शिमला जाने का प्लान बनाया था।

मेधा के भरे-पूरे व्यक्तित्व को इस प्रकार क्लांत होते देखना उसके लिए बड़ा दर्दनाक था। उस रात अराधना सोने के लिए अपने बेडरूम में गई तो मेधा के कुम्लाही हुई जिन्दगी के विचारों से व्यथित मन लिए हुए ही। उसके विचार अपनी ही समृद्धि, बौद्धिक विकास, वैभव तथा आजादी के इर्दगिर्द घूम रहे थे।

रोजमर्रा की समस्याओं से घिरी मेधा की तुलना में अराधना मेधा से कहीं ज्यादा आजाद और बहुत खुश थी। मेधा बड़ी मुश्किल से अपने बॉम्बे की चाल से बाहर निकल पाई थी जबकि उसने पूरी दुनिया घूम ली थी। उसने गहरे संतोष की सांस ली।

घनी प्रसन्नता ने उसको उस रात सोने नहीं दिया था। रजनीगंधा की मीठी महक लेकर हवा का झोंका बगीचे की तरफ से आया था। वह बिस्तर से उठी और खिड़की के पास खड़ी हो गयी... संतोष के साथ उसका मन मयूर नाच उठा था।

मनोज और मेधा कल वापिस जा रहे हैं। वह अपने साथ उसके जीवन का उत्थान और कभी ना भूल सकने वाली छाप लेकर जा रहे होंगे। यह जीत उसको अभिभूत कर देने वाली थी।

अराधना खिड़की के पास बाहर चांदनी को टकटकी बांधे देख रही थी। अचानक मुख्यगेट की आवाज ने उसका ध्यान भटका दिया। हाथ में हाथ लिए दो आकृतियां अंदर आई। उसने मेधा और मनोज को पहचान लिया था। साफ था कि दोनों घने सरसराते चीड के जंगल से चांदनी रात में सैर करने के बाद वापस आए हैं। अराधना खिड़की से थोड़ा हट गयी। वो आये और बगीचे की बेंच पर बैठ गये। इस बात से बेखबर कि वो दोनों उसकी खिड़की के बिल्कुल नीचे बैठे हैं। चांदनी रात में अप्रैल महीने की हवा, उनकी फुसफुसाहट, हल्की हंसी के साथ छनकर बह रही थी। बहुत दूर पहाड़ की बर्फीली चोटियां अपनी चंडी से चमक रही थीं।

मेधा के जिस थके मांदे, कांतिहीन चेहरे से अनुराधा को प्रतिकार होता रहा था वही चेहरा अब ताजा, जीवंत और कोमलमय लग रहा था। एक युवा हृदय प्रेम में दमक रहा था।

अराधना ने ऊपर देखा। चांदनी रात की श्यामल पृष्ठभूमि में दूर एक पर्वत श्रृंखला आसमान को चूम रही थी। लेकिन इस शांत भव्यता के चारों ओर एक शून्य था ...एक डरावना

सम्पादक 'सेतु', आश्रय, खलीनी चौक,
शिमला हि.प्र.171002, मोबाइल 94184 73675

लघुकथा

✍ कुमारी प्रगति

सुबह - सुबह काशी पहुंचकर पंडित जी के साथ मां के श्राद्ध की पूजा पूरे विधि -विधान से करने लगा। दिसंबर का महीना था, चारों ओर धुंध फैली थी। ठंड इतनी थी की मेरी हड्डियों से भी कांपने की आवाज सुनाई दे रही थी लेकिन अम्मा के लिए ये भी मंजूर था। सबकुछ अच्छे से हो जाए ताकि अम्मा की आत्मा को मुक्ति मिल जाए, मन में यही बात चल रही थी। मैंने इक्यावन ब्राह्मणों को भोज करवा दिया। पंडित जी को भी पूजा करवाने की मुंहमांगी दक्षिणा देकर तृप्त कर दिया था।

सबकुछ होने के बाद मैंने पंडित जी से पूछा '' अब अम्मा की आत्मा तृप्त हो गई होगी ना?''

''यजमान अगर अपनी अम्मा को उनके जीते जी इतने ही प्रेम और श्रद्धा से आपने उनकी सेवा की होती तो उनकी आत्मा प्रसन्न और तृप्त जरूर हो गई होती।''

मुझे जवाब मिल चुका था और धुंध भी छंट चुकी थी अपने जमीर के आईने में अब सबकुछ साफ दिखाई दे रहा था।

B222, GRC Subhiksha, MJ Nagar Road, Choodasandra, Bangalore & 560099, Mobile no 9902188600

लेख

वैष्णव धर्म : एक विहंगम दृष्टि

✍ डॉ. प्रेमलाल गौतम 'शिक्षार्थी'

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के स्रोत वेद मानवीयता महिमा से मंडित है। वेद नि:संदेह ज्ञान की अतीव पुण्या सलिला मानसरोवर झील है, जहां से विभिन्न ज्ञान सरिताएं भवतापतापित लोगों की पिपासा व जिज्ञासा को प्रशान्त करती प्रवाहित होती है। तत्त्ववेता ऋषियों ने अपने प्रातिभ दिव्य चक्षुओं से वेदमन्त्रों का साक्षात्कार किया (ऋषयोमन्त्र द्रष्टार:) वेद संहिताएं, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ, उपनिषद्, वेदांग एवं सूत्रग्रन्थों के बाद वेदोत्तरकालीन साहित्य में पुराण, रामायण, महाभारत तथा दर्शन ग्रन्थों आदि का स्थान है।

दर्शन ग्रन्थों को आस्तिक तथा नास्तिक रूप से दो भागों में विभाजित किया जाता है। 'नास्तिको वेद निदक:' अर्थात् वेदों की निंदा करने वाला नास्तिक कहा जाता है। इस विधा में चार्वाक, जैन (आर्हत), तथा बौद्ध दर्शन आते है। आस्तिक दर्शन ईश्वर की सत्ता स्वीकार करते है। इनको मुख्यत: न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा तथा उत्तरमीमांसा (वेदान्त) शैवधर्म, वैष्णवधर्म आदि आस्तिक दर्शनों में माना जाता है। इस लेख के द्वारा वैष्णवधर्म पर संक्षिप्त रूपेण विचार अभीष्ट है।

वैष्णव धर्म का प्रारम्भिक स्वरूप :- ऋग्वेद भारतवर्ष में सर्व प्राचीनतम ग्रन्थ स्वीकार किया जाता है। पाश्चात्य विद्वानों ने ऋग्वेद का काल अनुमानत: 1400 ई. पूर्व से लेकर 1000 ई. तक माना है। ऋग्वेद में विष्णु का अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद तथा परवर्ति ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर कहा जा सकता है कि विष्णु ऋग्वेद काल में प्रमुख थे। ऋग्वेद में विष्णु के विग्रह तत्त्व की अनेक विशेषताएं उल्लिखित हुई, जिनमें उन्हें युवा, कुमार तथा वृहत् आकार वाला माना गया है। -वृहच्छरीरो विभिमान ऋक्वभिर्युवाकुमार:' (ऋ.1-155-2) यह केवल लौकिक विग्रह का उदाहरण था। इसके अतिरिक्त उनके दिव्य विग्रह का भी उल्लेख मिलता है। अन्यत्र विष्णु को 'शिपिविष्ट' कहा गया है जिसका अर्थ - अपनी किरणों से पृथ्वी को लपेटे हुए। बाद के साहित्य में उनके इस आकार को परिवृहत् रूप में चित्रित किया गया है। यथा- 'उद्यत्कोटि दिवा कराम: य: सवितृमण्डलमध्वर्तिन:' कहा गया है। वेदों में (ऋग्वेद में) विष्णु के पद का उल्लेख हुआ है - 'तद् विष्णो: परम् पदं सदा पश्यन्ति सूरय:। दिवि व चक्षुराततं' इस मन्त्र में विष्णु के तीन पदों का उल्लेख है। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार ये तीन पद पृथ्वी, वायु तथा द्युलोक के द्योतक है। विष्णु सूक्त में 'यस्य त्री पूर्णा मधुना पदानि, अक्षीयमाणा स्वध्यामदन्ति य ऊ त्रिधातुपृथ्वीमुतद्यामेकोदधार भुवनानि विश्वा।'

विष्णु का तीसरा पद कौन सा है, इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। वैदिक ग्रन्थों में तीसरे पद को उत्तम कहा गया है। उसे मधु का उत्स कहा गया है। व्याख्याकारों के अनुसार तीन पद सूर्यपथ के बोधक हैं। और्णक्षम के अनुसार ये तीनों पद सूर्य की गति या उसके दायरे को प्रकट करते है। सूर्य की तीव्र गति उदय, आरोहण, अस्त इन्हीं तीन गतियों के द्योतक यह तीन पद हैं। पाश्चात्य विद्वानों में होपकिन्स विष्णु के पद को मृतकों का स्थान बताते है। ग्रन्थ विद्वान् आकाश को विष्णु पद कहते हैं, क्योंकि वहां विष्णु है। अत: निष्कर्ष यह है कि विष्णु का सम्बन्ध आकाश से है। आकार चिन्तन कर उसे सूर्य के रूप में माना जा सकता है।

ऋग्वेद में उनके चरित्र की अनेक विशेषताओं का उद्घाटन किया है। वे उरू गाय तथा उरू क्रम इन दोनों का अर्थ - किरणों से युक्त होना तथा गतियुक्त है। विष्णु विष्गतौ धातु से निषपन्न होता है। ऋग्वेद में विष्णु के अन्य नाम गोप आदि भी मिलते है। बौद्धायन धर्म सूत्र में इनका अन्य नाम गोविन्द भी मिलता है। ये दोनों नाम पूर्ववर्ति गोवेषधारी कृष्ण के बोधक ही हैं। वैदिक साहित्य में विष्णु के सम्बन्ध में अनेक गाथाएं भी उपलब्ध हैं। वे रामायण तथा पुराणादि में पल्लवित हुई हैं। विष्णु के सम्बन्ध में कहा गया है कि विष्णु ने वामन का

रूप धारण कर तीनो लोकों पर विजय प्राप्त की थीं। यथा –

'प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गरिष्ठाः।
यस्योरूषु त्रिषुविक्रमणेषु अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा'।।

इस प्रकार की गाथा वेदोत्तरकालीन साहित्य में वामनावतार का पथ तैयार करती है। ऋग्वेद में वराह का भी उल्लेख मिलता है तथा वह शतपथ ब्राह्मण में सृष्टिरचना सम्बन्धी रूप में आता है। कहा गया है कि उसने पृथिवी को जल से बाहर निकाला। यही रूप रामायण और पुराणों में विष्णु के एक अवतार वराह के रूप में विख्यात हो गया। यही वराह पृथिवी को उठाने, विष्णु के मत्स्य तथा कूर्मावतारों के उल्लेख में ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलता है। अवतार सम्बन्धी धारणा का मूल वैदिक साहित्य है तथा यह धारणा बाद में पल्लवित हुई। वैदिक साहित्य में विश्वात्मवाद तथा एकात्मवाद ये दो सिद्धान्त मिलते हैं। पहले के अनुसार जगत् में ईश्वर की व्यापकता, और दूसरे के अनुसार देवताओं का एकीकरण सिद्ध किया जाता है। सूर्य, अग्नि, वरुण आदि अनेक देव एक देवता के रूप है। इन दोनों विचारधाराओं से अवतारवाद का सिद्धान्त जन्म लेता है।

भक्ति :–कुछ विद्वानों का विचार है कि भक्ति का सिद्धान्त आर्येत्तर धर्मों की देन है, परन्तु डॉक्टर भण्डारकर का विचार है कि उपनिषदों की उपासना में भक्ति का मूल ढूंढा जा सकता है। कुछ विद्वानों ने अष्टाध्यायी के (4–3–98) के अनुसार भक्ति का तत्त्व ढूंढा है। वहां पूजार्ह पद का प्रयोग जो कि पूजा के योग्य देव में अलग प्रत्यय का विधान करता है। अष्टाध्यायी से पूर्व श्वेताश्व उपनिषद् में परा भक्ति की चर्चा आई है। भक्ति सूत्रों में भी यह कहा गया है – 'सा परानुरक्ति रीश्वेर' परमेश्वर में वह परम अनुराग कहलाता है। भारतीय विचारकों का कथन है कि भक्तिमार्ग विशुद्ध रूप से भारत की देन है। बौद्ध ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि वासुदेव पूजनीय है। पाणिनि भी वासुदेव को दिव्य पुरुष के रूप में देखते है, क्षत्रिय के रूप में नहीं। ईसापूर्व तीसरी–चौथी शताब्दियों में ऐसा धर्म था, जिसके केन्द्र तीन वासुदेव थे तथा अनुयायी भागवत् थे। वासुदेव भागवत् सम्बन्ध पुराने मन्त्रों में मिलता है – 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' भागवत् तथा वासुदेव एक कहे गए हैं। बाद के साहित्य में वासुदेव का तादात्म्य विष्णु से कर दिया गया है तथा श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है – 'आदित्यानामहं विष्णुः।' इस प्रकार वासुदेव भगवान् विष्णु एक ही देवता के तीन रूप हो सकते हैं।

नारायण और विष्णु :– नारायण शब्द नाडायन शब्द जैसा है। नाडायन का अर्थ है – नडों का समूह। यहां फक् प्रत्यय हुआ है। इसी आधार पर नारायण का अर्थ नारों का समूह या उनका आश्रय है। नारायणीय में हरि अर्जुन से कहते हैं कि 'नराणां अयनम्' के रूप में प्रसिद्ध हूं। नृ या नर शब्द का प्रयोग विशेषतः वेदों में वीर पुरुषों के अर्थ में या देवों के लिए भी होता है, अतएव नारायण शब्द की व्याख्या देवों के आश्रय के रूप में या वीर पुरुषों के आश्रय के रूप में की जा सकती है। एक परम्परा के अनुसार नारायण का सम्बन्ध जल से माना जाता है। मनुस्मृति (1–10) के अनुसार जल को 'नारा' कहा जाता है। – ''आपो नाराः इति प्रोक्ताः आपो वैनरसूनवः''। मनुस्मृति के अनुसार जल ब्रह्मा का आद्य आश्रय था। नारायणीय के अनुसार हरि का आश्रय था। अतः ब्रह्मा तथा हरि नारायण कहलाए। एक परम्परा यह है कि विष्णु या नारायण की नाभि से ब्रह्मदेव उत्पन्न हुए। वायु पुराण के अनुसार नारायण को अव्यक्त से पूर्ववर्ति माना है। शतपथ ब्राह्मण में एक दिव्य पुरुष का उल्लेख मिलता है जिसमें प्रजापति को बलि प्रदान की थी। उसी में उसे पंचरात्र सत्र का प्रणेता कहा गया है। बौद्धायन धर्म सूत्र से ज्ञात होता है कि नारायण तथा विष्णु दोनों एक ही हैं। इसी बात का समर्थन तैत्तिरीय आरण्यक (10/1) से होता है। यथा – 'नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात:'। इस सन्दर्भ से स्पष्ट है कि नारायण, वासुदेव तथा विष्णु ये तीनों एक ही देव हैं। महाभारत के कुछ पद भी इस बात का समर्थन करते हैं। महाभारत के अनुसार नारायण प्राचीन ऋषि थे। वे धर्म के पुत्र थे उनका साथ नर से था। वे पृथ्वी लोक से ब्रह्मलोक गए वहां उन्होंने राक्षसों को नष्ट किया तथा असुर संघर्ष में नर नारायण के द्वारा इन्द्र की सहायता की गई। कुछ विद्वानों ने इस कथन की अन्य ढंग से व्याख्या की है। उनके अनुसार नर का अर्थ अर्जुन है तथा नारायण का अर्थ कृष्ण है।

नारायण, वासुदेव तथा विष्णु ये तीनों एक ही देव हैं। महाभारत के कुछ पद भी इस बात का समर्थन करते हैं। महाभारत के अनुसार नारायण प्राचीन ऋषि थे। वे धर्म के पुत्र थे उनका साथ नर से था। वे पृथ्वी लोक से ब्रह्मलोक गए वहां उन्होंने राक्षसों को नष्ट किया।

कथासरित्सागर में नारायण का लोकश्वेत द्वीप माना जाता है। अन्यत्र यह भी कहा गया है कि यह क्षीर सागर के समीप था। श्वेतद्वीप के निवासी नारायण की पूजा करते थे। कुछ विद्वानों का विचार है कि कभी कुछ भारतीय वैष्णव उधर गए थे और ईसा को नारायण का अवतार बनाना चाहते थे। दूसरे विद्वान् इसे केवल काल्पनिक कथा कहते हैं। राय चौधरी के

अनुसार ऋग्वेद का विष्णु और श्वेतद्वीप का नारायण दोनों समान हैं, क्योंकि दोनों का सम्बन्ध सूर्य से है। डॉक्टर भण्डारकर के अनुसार नारायण का चरित्र सर्गात्म है। यह ऐतिहासिक तथा पौराणिक नहीं। वे नारायण का अर्थ ''नर का अयन'' अर्थात् मानवों के लिए प्राप्तव्य धाम के रूप में लेते हैं। संक्षेप में कहा जाता है कि नारायण का सम्बन्ध विष्णु के साथ जोड़ने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए, क्योंकि नारायण और विष्णु दोनों एक ही प्रकार की चारित्रिक विशेषताओं से युक्त देव हैं।

विष्णु से वासुदेव का तादात्म्य : –वैदिक देवता विष्णु ब्राह्मणकाल में महत्त्वपूर्ण स्थान को प्राप्त हो गए थे और पुराणकाल में वे परमेश्वर बन गए थे। उनका महत्त्व परमपद के कारण था। विष्णु की श्रेष्ठता के बीज हमें ऐतरेय ब्राह्मण (1/1) तथा शतपथ ब्राह्मण में मिल जाते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में अग्नि को छोटा देव और विष्णु को सर्वोच्च देव माना गया है। शतपथ ब्राह्मण में एक कथा आती है जिसमें बताया गया है कि देवों के द्वारा तेज, ऐश्वर्य तथा अन्न प्राप्ति के लिए यज्ञ किया गया। सभी देवताओं ने यज्ञ का सार जानना चाहा। विष्णु को छोड़कर कोई भी इस कार्य में सफल नहीं हुआ। विष्णु ने यज्ञ का अर्थ पाया और वह सर्वोच्च देव बन गए। मैत्रयुपनिषद् में अन्न को विष्णु का स्वरूप माना गया है। उत्तर वैदिक कालीन साहित्य का विष्णु अब धीरे-धीरे गृह देवता बनने लगा। कठोपनिषद् में भी जीवात्मा के उत्कर्ष की तुलना विष्णु से की गई है। कतिपय मंत्रों से, जिन्हें सप्तपदी के अवसर पर पढ़ा जाता है, विदित होता है कि विष्णु तुम्हारे साथ हो। इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि विष्णु की प्रतिष्ठा गृह-गृह में होने लगी थी। विष्णु तथा वासुदेव कृष्ण का एकत्व बाद के साहित्य में मिलता है। भगवद्गीता और अनुगीता से स्पष्ट है कि विष्णु तथा वासुदेव, कृष्ण एक देव थे। महाभारत के शान्तिपर्व अध्याय 43 में कृष्ण को विष्णु माना गया है। महाभारत में ऐसे भी स्थल मिलते हैं, जहां वासुदेव (कृष्ण) के देवत्व को स्वीकार नहीं किया गया है। मूर ने O.S.T. पृष्ठ 205 पर ऐसे अनेक उदाहरण दिऐ हैं, जिनसे यह स्पष्ट है कि महाभारत के समय कृष्ण के देवत्व को नहीं माना जाता था। धीरे-धीरे धार्मिक चिंतन की तीन धाराएं इक्ट्ठी हुई। इन तीन धाराओं से वैष्णव मत का निर्माण हुआ। ये थीं वैदिक विष्णु, विराट् नारायण तथा ऐतिहासिक वासुदेव।

शतपथ ब्राह्मण में एक कथा आती है जिसमें बताया गया है कि देवों के द्वारा तेज, ऐश्वर्य तथा अन्न प्राप्ति के लिए यज्ञ किया गया। सभी देवताओं ने यज्ञ का सार जानना चाहा। विष्णु को छोड़कर कोई भी इस कार्य में सफल नहीं हुआ। विष्णु ने यज्ञ का अर्थ पाया और वह सर्वोच्च देव बन गए।

विष्णु और कृष्ण :– महाभारत और पुराणों में वासुदेव को वसुदेव का पुत्र कहा गया है। वहां वासुदेव की कुछ दार्शनिक व्याख्याएं की गई हैं। भण्डारकर का विचार है कि ''अष्टाध्यायी'' और ''घटक जातक'' की टीकाएं यह संकेत देती हैं कि वसु या कृष्ण संज्ञाएं हैं। व्यक्ति का और इनका सम्बन्ध कार्ष्णायिन गोत्र से है। ''घटक जातक'' टीकाकार के अनुसार कृष्ण गोत्र का भी नाम हो सकता है। बाद के साहित्य में उल्लेख मिलता है कि कृष्ण को कृष्ण इसलिए कहा जाने लगा कि वे काले थे । कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख छान्दोग्योपनिषद् में मिलता है, वहां कृष्ण को देव पुत्र और घोर अंगिरस के शिष्य के रूप में चित्रित किया गया है। उसी ग्रन्थ से यह भी विदित होता है कि कृष्ण अशुमति नदी के किनारे रहते थे, यह नदी यमुना हो सकती है। महाभाष्य में भी वासुदेव कृष्ण का उल्लेख है। पतंञ्जलि कंस वध का उल्लेख करते हुए कृष्ण का वर्णन उद्धृत पद्य द्वारा करते हैं :- ''जघान कंसं किल वासुदेवः असाधुर्मातुले कृष्णः।'' चतुर्थशती पूर्व कृष्ण तथा उनकी नगरी का उल्लेख करते हैं। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर आंगिरस परिवार का सम्बन्ध भोजों के साथ या भोज यादवों जैसे थे। आंगिरस सूर्य पूजक थे। भागवत धर्म में भी नारायण या सूर्य की पूजा को महत्त्व दिया गया है। गीता के चौथे अध्याय के प्रथम श्लोक में बताया गया है :- ''इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्। विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।।'' भागवत धर्म सूर्य को उपदिष्ट था। सूर्य ने मनु को और मनु ने इक्ष्वाकु को उपदेश किया था। परवर्ति काल में कृष्ण के साथ गोपचरित भी जोड़ा गया और हरिवंश, वायुपुराण और भागवत् पुराण में बाल लीलाएं भी चित्रित की जाने लगीं। होमकिन्सका विचार है कि पौराणिक काल में कृष्ण का महत्त्व और अधिक बढ़ने लगा था। कृष्ण के इन रूपों की तुलना वैदिक आख्यानों से की जा सकती है। बौद्धायन धर्मसूत्र में गोविन्द दामोदर का उल्लेख है। मथुरा के यादव सारस्वत्त वृष्णि गोपालक थे। बारथ और होमकिन्स का विचार है कि कृष्ण मानव नहीं थे, वे प्रसिद्ध देव थे, जिनका विष्णु के साथ तादात्म्य होने पर वैष्णव धर्म का उदय हुआ। कुछ विद्वानों का विचार है कि कृष्ण पाण्डवों के पारिवारिक देव थे। कृष्ण का सूर्य के साथ कुछ विद्वानों ने सम्बन्ध स्थापित किया है, परन्तु कीथ ने इसका खण्डन किया है। भण्डारकर का विचार है कि जो व्यक्ति कृष्ण को मानव

राम विष्णु के अवतार थे ऐसा संकेत वाल्मीकि रामायण में है परन्तु यह संकेत स्थल अप्रमाणित तथा प्रक्षिप्त है। नारायणीय में ऐसा उल्लेख है, परन्तु उसे भी प्रमाणिक नहीं माना जा सकता। कालिदास के रघुवंश महाकाव्य के दसवें सर्ग में राम जन्म की कथा से पूर्व विष्णु या नारायण की स्तुति की गई है।

मानते हैं यह उचित नहीं है। वे वास्तविक देव थे, काल्पनिक नहीं । कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था। दासगुप्त के अनुसार गीता भागवत् सम्प्रदाय का अंश है तथा उसकी रचना महाभारत से पूर्व हुई है। राधाकृष्णन् गीता को महाभारत का अंग मानते हैं उनका कथन है कि गीता विरोधात्मक तथ्यों का समन्वय कर उन्हें समष्टि के रूप में चित्रित करती है। गीता में ज्ञान और योग का उपदेश दिया गया है। उसमें भक्ति मार्ग सबके लिए समान रूप से है। प्रेम तथा आत्मसमर्पण ''स च मे भक्त:, स च मे प्रिय:''। हरियमा का विचार है कि गीता कर्मों के त्याग के बदले कर्म में त्याग का उपदेश देती है। राधाकृष्णन् भी कर्मयोग को गीता का मौलिक उपदेश मानते हैं। चतुर्व्यूह सिद्धांत पांचरात्र का सिद्धांत है। बाद में वही वैष्णव दर्शन के द्वारा स्वीकार कर लिया गया। भागवत् के अनुसार पांचरात्र संहिताओं में कहा गया है। अभिगमन (मन्दिर जाना) उपादान पूजा सामग्री साथ ले जाना। इज्या (पूजा), स्वाध्याय (सम्प्रदाय के अनुसार पूजा) हरिभजन, स्मरण, कीर्तन, प्रणमन, चरण सेवन, पूजन और आत्म निर्देशन।

विष्णु या नारायण के अवतार :- नारायणीय में विष्णु के छ: अवतार बताए गए हैं - वराह, नृसिंह, वामन, भृगुवंशीय राम, दाशरथी राम, वासुदेव कृष्ण। उसी ग्रंथ के दूसरे प्रकरण में अवतारों की संख्या दस हो गई है, जिनमें हंस, कूर्म, मत्स्य, कल्कि सम्मिलित हैं। हरिवंश में भी छ: प्रकार दिए गए हैं जोकि पूर्ववत् हैं। वायु पुराण में विष्णु के अवतारों का दो स्थलों पर उल्लेख मिलता है। पहले स्थल में बारह अवतार हैं। जिनमें कुछ अवतार शिव तथा इन्द्र के हैं। दूसरे स्थल में दस अवतार हैं। भागवत् में 22 अवतार, जिनमें प्रथम स्कन्द तृतीय अध्याय में 2/2 स्क./7 अ. 16 अवतारों का उल्लेख है।

रामोपासना :- राम विष्णु के अवतार थे ऐसा संकेत वाल्मीकि रामायण में है परन्तु यह संकेत स्थल अप्रमाणित तथा प्रक्षिप्त है। नारायणीय में ऐसा उल्लेख है, परन्तु उसे भी प्रमाणिक नहीं माना जा सकता। कालिदास के रघुवंश महाकाव्य के दसवें सर्ग में राम जन्म की कथा से पूर्व विष्णु या नारायण की स्तुति की गई है। तब वे रावण के विनाश हेतु दशरथ के पुत्र रूप में जन्म लेने का वचन देते हैं। वायु पुराण में भी ऐसा उल्लेख है। यद्यपि पतंञ्जलि महाभाष्य में रामावतार का उल्लेख नहीं मिलता, उस समय के शिलालेख भी नहीं मिलते, जो अवतार की पुष्टि कर सकें। अमरकोष के देवकाण्ड में राम का स्थान नहीं है। यद्यपि उन्हें अवतार माना जाने लगा था, परन्तु उनका स्वतन्त्र धार्मिक मत नहीं था। वाल्मीकि ने रामायण में राम की अलौकिकता वर्णित की है। भवभूति ने उत्कर्ष की ओर बढ़ाया है। ऐसा लगता है कि भवभूति के बाद राम को स्वतन्त्र रूप से पूजा जाने लगा। रामोपासना कब आरम्भ हुई, ऐसा कहना कठिन है फिर भी मध्य 1264 ई. में बद्रिकाश्रम से राम की प्रतिमा लाए थे और इन्होंने नरहरि तीर्थ को सीता की प्रतिमा लाने के लिए जगन्नाथपुरी भेजा था अतएव रामोपासना 12वीं शताब्दी के लगभग अस्तित्व में आ गई होगी। तात्कालिक कई ग्रन्थों में राम की पूजाविधि वर्णित है। हेमाद्रि 13वीं ने वृतखण्ड में चैत्रशुक्ल नवमी के दिन राम जन्म मानने का उल्लेख किया है। वृद्धहारीत ने भी अपने स्मृतिग्रन्थ में पूजाविधि का उल्लेख किया है। दोनों लेखकों ने विष्णु के 24 रूपों का वर्णन किया है। एकनाथ द्वारा राम के देवता का वर्णन करने के बाद यह सम्प्रदाय बन गया।

दक्षिण में वासुदेवोपासना :- ईसा से सौ वर्ष पूर्व महाराष्ट्र में वासुदेव की पूजा होने लगी थी। वहां से यह पूजा पद्धति दक्षिण में तथा तमिल प्रदेश में फैली। भागवत् 11-5-38 में भविष्यवाणी की शैली में कहा गया है कि कलियुग में नारायण में भक्ति करने वाले इधर-उधर प्राप्त होंगे। द्रविड़ प्रदेश, जहां ताम्रवर्णी कावेरी आदि नदियां बहती है, वहां अधिकांश नारायण भक्त होंगे। भागवत् पुराण संकलन समय पर तमिल प्रदेश में वासुदेव भक्तों की प्रसिद्धि हो गई थी। यह पुराण 13वीं सदी में प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका था। आनन्द तीर्थ ने (1188-1278) इसकी व्याख्या के लिए ग्रन्थ लिखा था। दक्षिण में आलवर भक्त चौथी तथा पांचवीं शती में हुए। उन्होंने तमिल के प्रबन्धों की रचना की थी। उनके प्रबन्ध परम पवित्र वैष्णव वेद माने जाते हैं। स्मरण रहे, वैष्णव सम्प्रदाय के समस्त आचार्य दक्षिण के ही हुए हैं।

वैष्णव धर्म के प्रसिद्ध आचार्य व समर्थक :- वैष्णव सम्प्रदाय की आचार्यों की एक लम्बी परम्परा रही है तथापि प्रसिद्ध आचार्यों के नाम उल्लेखनीय हैं। यथा पाराशर्य, शाण्डिल्य, गर्ग, नारद कुमार, शुक्र, विष्णु, कौण्डिल्य, शेष, उद्धव, अरुणि, बलि, हनुमान, विभीषण, कश्यप, वादरायण, रामानुज, मध्व, आनन्दतीर्थ, निम्बार्कि, वल्लभ, रामानन्द, कबीर, अन्य रामानन्दी, तुलसीदास, चैतन्य, नामदेव और तुकाराम। इसके अतिरिक्त अनेकों शिष्य, प्रशिष्य इस सम्प्रदाय में हुए हैं। पञ्चरात्र, भागवत् तथा त्रिदण्डी वैष्णव सम्प्रदाय माने

गए हैं। वैष्णव सम्प्रदाय प्राचीन काल से चार प्रधान विभागों में विभाजित हैं।

चार प्रधान सम्प्रदाय :- प्रथम :- श्री वैष्णव सम्प्रदाय (श्री सम्प्रदाय) 10वीं-11वीं सदी

द्वितीय :- सनक सम्प्रदाय (हंस सम्प्रदाय) 12वीं सदी

तृतीय :- ब्रह्म सम्प्रदाय 13वीं सदी

चतुर्थ :- रूद्र सम्प्रदाय 15वीं सदी

श्री वैष्णव सम्प्रदाय :- नारायण से लेकर गुरु परम्परा का क्रम प्रत्येक सम्प्रदाय में मिलता है। भक्ति से युक्त अपने पद्यों व गायनों द्वारा आनन्द विभोर बनाने वाले वैष्णव संत का नाम आलवार है। श्री सम्प्रदाय के प्रधान आचार्य रामानुज को माना जाता है। इनका दार्शनिक मत विशिष्टाऽद्वैत के नाम से विख्यात है। इनके अनुसार चेतन जीव और जड़ जगत् दोनों ब्रह्म से ही उत्पन्न होते हैं। ब्रह्म दोनों का निमित्त और उपादान दोनों ही कारण हैं। दोनों का अस्तित्व ब्रह्म के बिना नहीं है, अत: एकमात्र अद्वैत तत्त्व ब्रह्म को कहा जा सकता है, परन्तु जीव और जड़ जगत् ब्रह्म से उत्पन्न होने पर भी असत नहीं है। जीव और जड़ जगत् ईश्वर के शरीर तुल्य हैं, जैसे जीवात्मा का स्थूल शरीर असत्य नहीं, तदवत् वे भी असत्य नहीं हो सकती उसी प्रकार वे ब्रह्म नहीं हो सकते। अत: ब्रह्म (ईश्वर) का अद्वैत रूप जीव और जड़ जगत् के द्वैत रूप से विशिष्ट है। इस तरह इस दार्शनिक मत को विशिष्टाअद्वैत कहते हैं। अद्वैत व द्वैत तत्त्व दोनों का विशिष्टाऽद्वैत ने समन्वय कर दिया है। श्री भाष्य, वेदान्त सार, वेदार्थ संग्रह और वेदान्त दीप रामानुज के प्रसिद्ध मुख्य ग्रन्थ हैं।

सनक सम्प्रदाय (हंस सम्प्रदाय):-द्वितीय आचार्य निम्बार्क का दार्शनिक मत द्वैताद्वैत या भेदाऽभेद नाम से प्रसिद्ध है। इनके मत में चित् (जीव) और अचित् (जड़ जगत्) तथा ईश्वर तीन तत्त्व हैं। ये क्रमश: भोक्ता, भोग्य और नियन्ता हैं। जिस प्रकार सूर्य प्रकाश व प्रकाशवान है उसी तरह जीव ज्ञानस्वरूप (ज्ञान) व ज्ञानवाला भी है, क्योंकि उपनिषदों में बीज को ''प्रज्ञान घन'' कहा है। निम्बार्क के मत में चेतन, जड़ व ईश्वर में न तो सर्वथा तादात्म्य या अभेद सम्बन्ध है और न ही सर्वथा भेद का ही सम्बन्ध है । इनके मत में यदि अभेद माने तो तीनों के स्वभाव या गुणों का अन्तर कैसे होगा और यदि भेद माने तो उसे अनन्त और सर्वव्यापक कैसे कह सकते हैं। उस स्थिति में तो वह असीम हो जाएगा। भेद से इनका तात्पर्य है कि जीव व जड़ की पृथक् सत्ता तो है परन्तु है ईश्वर के अधीन। (परतन्त्र सत्ताभव)। अभेद से अभिप्राय ईश्वर से भिन्न स्वतन्त्र सत्ता नहीं है (स्वतन्त्र सत्ताऽभाव)। अत: द्वैत, अद्वैत (भेद-अभेद) इन्हें दोनों अभीष्ट हैं। रामानुज और इनके मत में विशेष अन्तर नहीं है। इन्होंने '' वेदान्तपारिजातसौरभ'' नामक टीका बादरायण के ब्रह्मसूत्रों पर लिखी है।

ब्रह्म सम्प्रदाय :- आचार्य माधव ब्रह्म सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। इनका दार्शनिक मत द्वैतवाद है। इतर वैष्णव सम्प्रदायों में कोई भी अद्वैत तत्त्व को नहीं मानते, परन्तु वे किसी न किसी प्रकार से द्वैत से अद्वैत की संगति करते हैं। माधव सम्प्रदाय अद्वैत का खण्डन कर द्वैतवादी है। इसके अनुसार ब्रह्म, जीव और जड़ तीनों नित्य स्वतन्त्र पदार्थ हैं। जीव और जड़ को ब्रह्म से उत्पन्न न मानकर स्वतन्त्र पदार्थ स्वीकार करते हैं। इनको अद्वैतवाद का विरोधी मानकर त्रैतवादी का संस्थापक कहना चाहिए क्योंकि इन्होंने तीनों पदार्थों की स्वतन्त्र सत्ता मानी है। माधव ने ब्रह्मसूत्र (वेदान्त) उपनिषदों व गीता पर भाष्य किए हैं। शंकराचार्य ने जहां अद्वैतवाद की स्थापना की है, वहां इन्होंने द्वैतपरक अर्थ करके खण्डन किया है।

रूद्र सम्प्रदाय :- इस सम्प्रदाय के प्रधान आचार्य व संस्थापक विष्णु स्वामी माने जाते हैं, बाद में वल्लभाचार्य ने विशेष प्रचार किया इसलिए इस सम्प्रदाय को विष्णु स्वामी सम्प्रदाय या वल्लभ सम्प्रदाय के नाम से भी पुकारा जाता है। इस सम्प्रदाय का दार्शनिक मत शुद्धाऽद्वैत के नाम से प्रसिद्ध है। वल्लभाचार्य के मतानुसार जीव, जड़ और ब्रह्म इन तीनों में से पूर्व दोनों जीव जड़ ब्रह्म से भिन्न नहीं, प्रत्युत दोनों ब्रह्म रूप ही है। ब्रह्म के साथ जीव ओर जड़ की एकरूपता है। यही शुद्ध एकता शुद्धाऽद्वैत है। वल्लभ शंकर के अद्वैतवाद के अनुसार जीव और जड़ जगत् माया की उपाधि से प्रकट न मानकर जीव तथा जड़ जगत् दोनों का स्वत: ब्रह्म स्वरूप मानते हैं। इनके अनुसार माया का कोई अस्तित्व नहीं है। माया प्रपंच को न मानकर अपने मत का नाम शुद्धाऽद्वैत रखा है। इसी शुद्धाऽद्वैत के अनुसार ब्रह्मसूत्रों पर भाष्य व स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखे हैं। गौण व मुख्य भेद से शक्ति संगमतन्त्र के अनुसार वैष्णव सम्प्रदायों की संख्या दस कही है- वैखानस, श्री राधावल्लभी, गोकुलेश, वृन्दावनी, रामानन्दी, हरिव्यासी, निम्बार्क, भागवत्, पांचरात्र तथा वीर वैष्णव। इनके अतिरिक्त प्रत्येक सम्प्रदाय की पृथक्-पृथक मीमांसा, ज्ञानमीमांसा व आचारमीमांसा अगम ग्रन्थों का दार्शनिक ग्रन्थों में विस्तृत वर्णन है। विस्तार भय से अधिक उल्लेख करना अनावश्यक या कठिन है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि अन्य दर्शनों में ज्ञान की प्रधानता है और वैष्णव धर्म में भक्ति की प्रधानता है । तभी नारद ने अपने भक्ति सूत्र में कहा है - ''सा तु कर्मज्ञानयोगेभ्योऽप्यधिकतरा'' अर्थात् वह (भक्ति) कर्म ज्ञान और योग से भी बढ़कर है।

सरस्वति सदन रबौण, पत्रालय सपरून वार्ड न. 16, जिला सोलन (हि. प्र.)

लघुकथा

दादू यह मेरा फर्ज था

बलविन्दर बालम

कनाडा के खूबसूरत शहर ऐडमिंटन के टामारौक महल्ले के 30 एवेन्यू के पास करीब 2 मिनट के रास्ते पर एक गोलाकार पार्क है। पार्क के बाहरी छोर के साथ-साथ गोलाकार सड़क। सड़क के साथ बाहर की ओर छोटे-छोटे सुंदर पेड़ और फूलों की लुभावनी क्यारियां। पार्क के मैदान में हरी-भरी गद्धीदार घास। साफ सफाई खूबसूरती की गवाही देती। वहां का हर नागरिक स्वच्छता का कद्रदान। मोहब्बत, अनुशासन, स्वभाव, देश प्रेम -ये सब कुछ बच्चों को वहां के स्कूलों में सिखाया जाता है। पार्क में हर वर्ग, धर्म के लोग सैर करने आते है, बच्चे, जवान, अधेड़, बुजुर्ग सब। गर्मी की छुट्टियों में बच्चे, दादू-दादियां, नानू-नानियां वगैरह इस पार्क की शोभा बढ़ाते हैं। वहां रह रहे अलग-अलग देशों के लोग बच्चों के साथ पार्क में सैर करने आते हैं। बुजुर्ग लोग छोटे बच्चों को बग्घियों में डाल कर साफ हवा व मौसम का मजा लेते हैं। ये लोग अपने नौकरीपेशा बच्चों को सुख सुविधा देने के लिए इधर आते हैं और खुद भी सुविधाओं का आनंद उठाते हैं। पार्क की बायीं तरफ मैदान के साथ हिंडोले, झूले, खेल, मनोरंजन के साजोसामान हैं। यहां बच्चे हंसी ठिठोली कर खुशी महसूस करते हैं। साइकिल चलाना यहां बच्चों का मनपसंद खेल है।

मैं अपनी पोती हरआमीन, ऐशमीन, पोता करन तथा छोटे पोते सुकरात के साथ इस पार्क में सैर करता था। ये चारों बच्चे अपनी छोटी-छोटी साइकिलों पर पार्क में मेरे साथ सैर करते थे, क्योंकि इनका ख्याल मुझे रखना पड़ता था। मैं इनके साथ-साथ इनकी छोटी-छोटी नासमझ व कुछ समझ वाली बातों में मस्त हरी-भरी धरती पर सैर करता चलता, साथ साथ हम और गपशप भी लगाते चलते जाते।

अचानक मेरे पोते करन, जो 7 वर्ष का था, ने अपनी साइकिल एकदम नीचे गिरा दी और ग्राउंड के बीचों-बीच से दौड़ता हुआ पार चला गया। मैंने उसे बहुत आवाज दी, तू कहां जा रहा है, साइकिल फेंक कर? कहीं गिर मत जाना। परंतु वह दौड़े जा रहा था। मै दूर खड़ा सब कुछ देख रहा था। वह ग्राउंड के पार गया और कुछ समय बाद वापस आ गया। मैंने आश्चर्य से उससे पूछा, यार, तू अचानक साइकिल फेंक कर कहां दौड़ गया था? अगर तू गिर जाता, तुझे चोट आ जाती तो?

मेरे पोते ने मेरी ओर थोड़ी सी त्योरी चढ़ा कर, घूर कर, अपनी साइकिल उठाते हुए कहा, दादूपापा, चुप। आपको नहीं पता था, ग्राउंड के पार मैंने देखा एक लड़के की साइकिल का टायर पंक्चर हो गया था। वह साइकिल घसीट (चला) नहीं पा रहा था। उसके लिए साइकिल ले जाना मुश्किल हो रहा था। मैंने उसको अचानक देख लिया था। मै उसकी मदद के लिए गया था। मैं उसकी साइकिल पीछे से उठाकर उसको उसके घर तक छोड़ आया।

मैंने पोते से कहा, तुझे क्या जरूरत थी ऐसा करने की, उसकी मदद के लिए कोई और आ जाता। बेवकूफ, अगर तुझे चोट लग जाती तो फिर? तो उसने झट से मुझे घूरते हुए कहा, दादू, मैंने उसे देख लिया था कि उसको मदद की जरूरत है, इसलिए मैं उसकी मदद करने गया था। दादू आपको यह नहीं पता था, उसकी मदद करना मेरा फर्ज था।

ओंकार नगर, गुरदासपुर (पंजाब)
मो. 9815625409

लेख

हिमाचल में लोक कथाओं का प्रचलन

✍ पंकज 'दर्शी'

लोक कथाएं : हिमाचल वैदिक काल से साहित्य सृजन का स्थल रहा है। महाभारत की रचना महर्षि वेद व्यास ने रोहतांग पास पर अपनी तपस्या में लीन होकर की और इसी एक महान काव्य और कथा के साथ ही पौराणिक काल से ही लोक कथाओं का चलन हिमाचल में रहा है। यूं तो लोक कथाओं का चलन विश्वभर में है और लोक कथाएं प्रायः विशेष क्रियाओं, घटनाओं, लोक-ज्ञान और संस्मरणों से अवतरित होती हैं। हिमाचल की बहुत-सी लोक कथाएं प्रेम, वात्सल्य, शोषण, लोकतान्त्रिक पिपासा और अद्भुत और विभत्स रस का रसपान कराती हैं। भय का संचार भी करती हैं। हिमाचल की लोक कथाओं के विषय बहुत व्यापक है, जिनमें प्रेम, ज्ञान, संस्मरणों आदि से जुड़ी कथाएं, लोकतान्त्रिक ज्ञान, राजा रानी और देव-दानवों की कथाएं काफी प्रचलित हैं।

प्रेम कथाओं के नाम विषय तथा क्षेत्र : पूर्ण हिमाचल प्रदेश से बहुत सी प्रेम कथाएं हमें मिलती हैं जिनमें से कांगड़ा-चंबा से फुलमू-रांझू, कुंजू-चंचलो तथा सन्नी-भंकु, कुल्लू से जुल्फु-देई, किन्नौर से डोलमा-तौंगकू तथा लाटी-हिना इत्यादि सुनने को मिलती है और ये कथाएं विरह की पीड़ा से भरी हुई हैं और अपने समय की संस्कृति, लोक-चेतना और जीवन शैली का परिचय भी कराती हैं। इन लोक-कथाओं में पाठक और खोजकर्ता क्षेत्र-विशेष के दर्शन भी कराता है।

ज्ञान की कथाएं विषय और क्षेत्र : ज्ञान प्रत्येक कथा में सम्मिलित रहता है फिर भी कुछ-कुछ कथाएं मानव के बौद्धिक क्षेत्र को सीधे से छूती है और मानव के चेतन को जागृत करती है। यह दार्शनिक ज्ञान मानव को सत्य, प्रकृति, अध्यातम और विज्ञान से रूबरू कराता है। ऐसी बहुत सी कथाएं मुख्यता गायन शैली में भी उपलब्ध हैं। कांगड़ा, हमीरपुर, मंडी, ऊना अदि क्षेत्रों में गायक मंडलियां झेहड़ों, भगतां आदि के जरिये संध्याकाल में श्रोताओं को ऐसी कथाएं सुनकर उनके ज्ञान का विकास करते रहते है। इसका चलन अब बहुत सिमित हो चूका है। हिमाचल के ऊपरी क्षेत्र में मुख्यता कुल्लू और लाहुल-स्पीति में बोध कथाओं का चलन रहा है।

संस्मरणों से जुडी कथाएं : संस्मरण सभी के होते हैं और संस्मरणों को विशेष भाषा प्रयोग के साथ, विशेष अभिव्यक्ति में परोसना अक्सर बहुत से लोगों की शैली हुआ करती है। संस्मरणों में यात्रा संस्मरण, घटना संस्मरण, विशेष समारोह संस्मरण, अपने कीर्ति के संस्मरण या फिर अपनी विफलता के संस्मरण और ऐसी बहुत सी घटनाओं और क्रियाओं पर संस्मरण सुनाने का चलन विश्व भर में है और आज संस्मरण विधा लेखन और पाठन में बहुत बड़ा स्थान पा चुकी है। हिमाचल में बहुत से संस्मरण यहां के त्योहारों, मेलों, छिन्जों और विवाह आदि समारोह के रहे है। कुछ लोग संस्मरणों में भूत-प्रेत आदि की दस्तक भी दिलाते हैं और भय का संचार करते हैं।

लोकतांत्रिक ज्ञान और पिपासा की कथाएं : लोकतांत्रिक ज्ञान की कथाओं में क्रूर राजाओं के खिलाफ लोगों की जागृति, आदिवासी समुदाय की अपनी लोक-ज्ञान की कथाएं और कथाओं के माध्यम से लोकतांत्रिक ज्ञान को परोसना इत्यादि देखने को मिलता है। इसके साथ ही स्वतंत्रता संग्राम के संस्मरण भी लोक-कथाओं में लोकतांत्रिक ज्ञान का हिस्सा बनते रहे। स्वंतत्रता संग्राम के नेताओं के संघर्ष के किस्से भी लोक-कथाओं में लोकतांत्रिक ज्ञान को परोसने का माध्यम बने है। पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम जैसे साहित्यकार, यशपाल और इन्द्रजीत सिंह जैसे कितने ही चर्चित नाम हैं जोकि अपने समय में लोगों को बहुत-सी जीवनियों, संस्मरणों आदि को कथा रूप में सुनाकर आम जनमानस को लोकतांत्रिक ज्ञान से सींचते रहे और देश में लोकतंत्र की स्थापना के लिए जागृत करते रहे।

राजा-रानी की कथाएं :

राजा-रानी की कथाओं का विश्वभर में चलन रहा है और कथाएं ही मात्र मनोरंजन और ज्ञान-सूचना का सरल साधन होने के कारण बहुत लोकप्रिय रही हैं। राजा-रानी के किस्सों में बहुत-सी लोक कथाएं ऐतिहासिक हैं जबकि कुछ कथाएं मनोरंजन और ज्ञान के लिए भी रही हैं। दादी-नानी के किस्से-कहानियों नामक कथा-कहन पद्धति के अंतर्गत बाल-जन को राजा-रानी की कथाएं सुनाई जाती रहीं है। इनमें राजा-रानी की कथाओं में कुछ कथाएं बहुत अधिक काल्पनिक हैं और कल्पना के नए क्षेत्रों में विचरण करती हैं। हिमाचल की अपनी राजा-रानी की कथाओं में कांगड़ा से रानी पिंगला, चंबा के राजा की कथाएं जिनमें पंजाब के प्रतिष्ठित कवि शिव कुमार बटालवी द्वारा रचित कविता लूना में भी मिलता है और इसके साथ और भी बहुत सी कथाएं श्रोताओं को आकर्षित करती हैं। मंडी, बिलासपुर, सोलन से भी सुन्दर ऐतिहासिक लोक-कथाएं सुनने को मिलती हैं।

देव-दानवों की कथाएं : देव-दानवों की कथाओं का होना हिमाचल में एक प्रकार से पूर्णता स्वाभाविक है। हिमाचल को जहां देव-भूमि कहा गया है तो वहां देव के साथ दानवों की कथाएं होना तो स्वाभाविक ही है। स्थानीय देवताओं और प्रान्त या जाती या समुदाय विशेष की कहानियां हमें मंडी, कुल्लू, लाहुल-स्पीति, शिमला और किन्नौर से सुनने को मिलती हैं। देवों या देवताओं के द्वारा दानवों के प्रति संघर्ष और जीत की कथाएं मानव के विचारों का परिवर्तन करती है। हिमाचल के बहुत से त्योहार भी देवी-देवताओं से जुड़े है। कांगड़ा और शिवालिक पर्वतों से सटे क्षेत्रों में देवियों, संतों, बाबा इत्यादि की कथाएं चलन में रही है जिनमें से बाबा बालक नाथ, बाबा बडभाग सिंह, नाहर सिंह आदि की कथाएं प्रचलित हैं। जगरातों आदि में तारा रानी में महाभारत से जुड़ी कथा को गायन में सुनाया जाता है। इसके अतिरिक्त शिव, शेरांवाली माता की कथाएं, प्रांत या क्षेत्र विशेष के देवी-देवताओं की कथाएं, मुख्यत: कुल्लू, मंडी, लाहुल स्पीती, कांगड़ा, शिमला, सोलन, बिलासपुर आदि जिलों की प्रसिद्ध हैं।

लोक कथाओं की अन्य कलाओं में अभिव्यक्ति : समकालीन समय में लोक कथाओं के साहित्यकार डॉ. गौतम शर्मा 'व्यथित' द्वारा चौपाल पुस्तक में हिमाचल की लोक कथाओं को शब्दबद्ध करके संजोया है। त्रिलोक मेहरा के चर्चित उपन्यास मुंडू में पौंग झील के क्षेत्र से सम्बन्धित लोक जीवन से जुड़े कथा-किस्से मिलते हैं। किशन चंद महादेविया ने भी लोक-कथाओं को कुछ सहेजने का कार्य किया है, गंगाराम 'राजी' ने मंडी जिला की ऐतिहासिक कथाओं को अपनी लेखनी उजागर किया है। पंकज दर्शी ने पौंग झील से जुड़ी कथाओं को 'बिसरा हलदून' शीर्षक से लिखा है और यह पुस्तक प्रकाशनाधीन है, कपिल मेहरा ने चंबा और कांगड़ा की लोक-कथाओं से जुड़ीं हिमाचल की जीवन शैली पर कथा रचना की है और ऐसे और भी कुछ नाम शामिल हैं। अंग्रेजी में गौतम सिंघा ने बिलासपुर की पुरानी कथाओं को अपनी पुस्तक में स्थान दिया है और यह कथाएं भाखड़ा डैम से पहले उस घाटी की कथाएं हैं। लोक कथाओं से प्रेरणा पाकर विश्व विख्यात साहित्यकार रस्किन बांड ने भी देहरा से जुड़ी स्मृति कथाएं रची हैं।

लोक कथाओं का नाटक रूपांतरण भी हुआ है। खासकर तारारानी, भगतां और झेयड़ों में इनको नाटकीय अंदाज में श्रोताओं के सामने प्रस्तुत करने का चलन भी रहा है। ऐसी नाटक मंडलियां अब बहुत हद तक सिमट सी गई हैं। लोक-कथाओं को गायन शैली में भी प्रस्तुत किया जाता है जिनमें प्रेम कथाएं कुंजू-चंचलो, फुलमो-रांझनू, क्लोहे आली बां, रूल दी कुल्ल, राजा राज सिंह की बारें, वजीर रामसिंह की बारें, आदि चर्चित कथाओं को लोक-कथा शैली में गायन के जरिये लोक-प्रिय बनाया गया है।

लोक-कथाओं का कांगड़ा शैली चित्रों में नैनसुख, पूर्व चित्रकार ओ पी टॉक और समकालीन धनीराम खुशदिल द्वारा बनाए चित्रों में लोक कथाओं के अंश देखने को मिलते हैं। इन चित्रों द्वारा लोक कथाओं का चलन सोलवीं शताब्दी से आरंभ हुआ और नूरपुर के वृजराज स्वामी मंदिर, नंदपुर भटोली के महल, हरिपुर के किलों के साथ अन्य बहुत से संरक्षित चित्र हैं जोकि कांगड़ा शैली में बनाए गए थे। संस्कृति के विषय से प्रेरित महान चित्रकार श्री शोभा सिंह द्वारा भी कुछ चित्र अंकित है। लोक कथा केवल सुनने-सुनाने मात्र तक ही सिमित नहीं है। लोक कथा गायन, चित्र कला, गाथा-गायन और लेखन में भी अपना स्थान निश्चित कर चुकी है। लोक कथाओं की विषय व्यापकता और विधा तथा कला की विभिन्नता हिमाचल की लोक कथाओं को विश्वभर में रोचक और आकर्षक बनाती है।

इसके साथ ही लोक कथाओं को सरकार द्वारा विशेष तरीके से सहेजने का कार्य करना चाहिए और इस मुहीम को सबल करने के लिए साहित्यकारों को पुरस्कार, आर्थिक सहयोग अदि से प्रोत्साहित करना चाहिए। लोक-कथा जहां मनोरंजन का हिस्सा है वहीं लोक-कथा ज्ञान, जीवन-दर्शन, संस्कृति दृष्टान्त और इतिहास की लोक-जीवन शैली की खोज भी है।

राजा का तालाब, तहसील फतेहपुर, जिला कांगड़ा, हि. प्र. 176051, संपर्क नं. 9459203057

लेख

निराला का उदात्त सौंदर्य भाव

✍ डॉ. संतोष पटेल

निराला हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रौढ़तम स्तंभों में से एक है। छायावाद में निराला का स्थान प्रसाद के बाद आता है। छायावादी कवियों की मुख्य विशेषताएं - वैयक्तिकता कल्पना की अतिशयता, अतीत मोह, अतिशय बौद्धिकता, समाज के प्रति विद्रोह भाव, राष्ट्रप्रेम, प्रकृति प्रेम रहस्यवादी, स्वच्छंद वादी कोमल कांत पदावली का प्रयोग, विस्तृत सौंदर्य चेतना स्थूल के आधार पर सूक्ष्म का वर्णन आदि है। कवि की रचना के दो पक्ष होते है : कला पक्ष और भाव पक्ष। अपने अनुभूति एवं भावना को सुंदर रूप में उपस्थित करना ही कवि या कलाकार का लक्ष्य होता है। अपने अनुभूत भावें संप्रेषण द्वारा दूसरे तक पहुंचाना कवि या कलाकार की सफलता का परिचायक है। अपने सुंदर भावों को सुंदर रूपों में रखना कलाकारिता है। प्राय: सभी छायावादी कवियों ने अपनी कला को सौंदर्य से मंडित करने का सफल प्रयास किया है। छायावादी कवियों की सौंदर्य चेतना स्थूल के प्रति सूक्ष्म सौंदर्य की चेतना है।

सौंदर्य भाव का संबंध हृदय के रति भाव से संबंधित है। रति भाव से उत्पन्न शृंगार रस रसों का राजा कहलाता है। रति भाव सिर्फ वासनात्मक प्रवृत्तियों का परिचायक न होकर भक्ति, वात्सल्य, ममता, करुणा तथा माधुर्य आदि सभी भावों का अभिव्यंजक है। हिंदी साहित्य में रति का विस्तृत रूप भक्ति काल में उपस्थित किया गया था किंतु शृंगार काल एवं रीतिकाल में रचनात्मक प्रवृत्तियों की प्रबलता के कारण कवियों ने सौंदर्य का वर्णन सिर्फ वासना पूर्ति के लिए किया है।

आधुनिक युग के दृष्टिकोण में परिवर्तन होने के साथ ही साथ सौंदर्य चेतना में भी परिवर्तन हुआ है। अब नारी का प्रेयसी रूप ही उपस्थित करना लक्ष्य नहीं है। नारी सचिव, सखा और गृहिणी तो है ही, माता, बहन और पुत्री भी है। तथा मनुष्य के जीवन में प्रभावित होने वाली धारा भी है। फलस्वरूप छायावादी कवियों ने नारी के उक्त विविध रूपों का अत्यंत ही मार्मिक क्षेत्र उपस्थित किया है। छायावादी कवि संसार की स्थूलता से भागकर सूक्ष्मता की ओर जाना चाहता है। इसलिए स्थूल सौंदर्य उसे आकर्षित नहीं कर सकी। इस प्रकृति के चलते छायावादी कवियों में एक तरफ नारी सौंदर्य का सूक्ष्म वर्णन किया गया है तो दूसरी तरफ से प्रकृति पर नारी भावना का आरोप भी किया है।

निराला नारी में प्रेयसी, माता, पुत्री और देवी के रूपों को देखा है। एक तरफ उनकी नारी चेतना रहस्य भाव से युक्त है तो दूसरी ओर यथार्थ भावों से परिपूर्ण है। नारी के प्रति रहस्यवादी प्रवृत्ति की अभिव्यंजना निराला की कविता 'प्रेयसी' में हुई है। 'प्रेयसी' कविता में निराला ने नारी की दिव्यता की रक्षा पूर्ण रूप से की है। इसके अतिरिक्त 'संध्या सुंदरी' 'प्रिय के प्रति प्रभाती' 'शेष बसंती' आदि कविताओं में भी नारी के दिव्य रूप दिखाई पड़ते हैं। 'जूही की कली' का सौंदर्य मांसल है फिर भी 'तुम और मैं' तथा 'सरोज स्मृति' आदि कविताएं उदात्त भाव से परिपूर्ण है। सौंदर्य के प्रति उदारता सात्विकता की देन है। उदात्त सौंदर्य का तात्पर्य सात्विक सौंदर्य भी है। कवि द्वारा चित्रित उदात्त सौंदर्य के कुछ रूप देखे जा सकते हैं। कवि 'यमुना के प्रति' भावना का यह रूप ममता से परिपूर्ण है-

''मुग्धा के लज्जित पलकों पर
तू यौवन की छवि अज्ञात
आंख मिचौली खेल रही है
किस अतीत शिशुता के साथ?''

कवि ने यमुना को देखकर उसकी कल्पना एक मुग्धा के रूप में की है। उसकी छवि को नव यौवना मुग्धा की छवि दृष्टि के रूप में उपस्थित किया है।

स्वछंद कवि की यह विशेषता है। वे सामान्य वस्तुओं में भी असामान्य सौंदर्य के दर्शन करते हैं फलत: सामान्य वस्तुएं भी अलौकिक रूप से परिपूर्ण बन जाती है। 'यमुना के प्रति' कविता में यौवना का यह रूप भी देखा जा सकता है किंतु इसमें भी अश्लीलता नहीं है-

वह कटाक्ष-चंचल यौवन-मन

वन-वन प्रिय-अनुसरण-प्रयास
वह निष्पलक सहज चितवन पर
प्रिय का अचल अटल विश्वास,
....
असफल छल की सरल कल्पना,
ललनाओं का मृदु उदगार
बता, कहां विक्षुब्ध हुआ वह
दृढ़ यौवन का पीन उभार,

कवि की 'संध्या सुंदरी' एक अत्यंत ही मादक रूप लेकर उपस्थित होती है। चुपचाप आती हुई संध्या सुंदरी के चित्र पर वातावरण की अनुकूलता की रक्षा में गंभीरता और नीरवता के पर्दे डाल दिए गए हैं-

''धीरे धीरे उतर क्षितिज
आ बसंती रजनी।
अथवा
आसमान से उतर रही
संध्या सुंदरी
परी सी
धीरे धीरे धीरे''

'जूही की कली' कविता में मुग्धा नायिका की अत्यंत ही मधुर कल्पना प्राकृतिक उपादान में की गई है -

''विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-
स्नेह-स्वप्न-मग्न
अमल-कोमल-तनु तरुणी
जुही की कली,
दृग बन्द किये, शिथिल--पत्रांक में,''

'जूही की कली' का सौंदर्य कुछ ज्यादा स्थूल बन गया है -

नायक ने चूमे कपोल,
डोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल।

निराला की 'विधवा' कविता नारी की करुणा से परिपूर्ण चित्र प्रस्तुत करती है। नारी की करुणा पूर्णत: निराला के इन शब्दों में उपस्थित है-

''वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा--सी
वह दीप-शिखा-सी शान्त, भाव में लीन,
वह क्रूर-काल-ताण्डव की स्मृति-रेखा-सी
वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन।''

निराला को उदात्त भावना की पूर्ण व्यंजना 'प्रेयसी' कविता में हुई है -

''आयी मैं द्वार पर सुन प्रिय कण्ठ-स्वर,
अश्रुत जो बजता रहा था झंकार भर
जीवन की वीणा में,
सुनती थी मैं जिसे।
पहचाना मैंने, हाथ बढ़ाकर तुमने गहा।
चल दी मैं मुक्त, साथ।''

प्रेम का उदात्त भाव उपस्थित करते हुए निराला ने 'सम्राट अष्टम एडवर्ड' के प्रति कविता में कहा है -

''जो करे गन्ध-मधु का वर्जन
वह नहीं भ्रमर;
मानव मानव से नहीं भिन्न,
निश्चय, हो श्वेत, कृष्ण अथवा,
वह नहीं क्लिन्न,
भेद कर पंक
निकलता कमल जो मानव का
वह निष्कलंक,
हो कोई सर''

निराला ने 'सरोज स्मृति' में अपनी पुत्री सरोज का जो चित्रण किया है वह उदात्त तथा अलौकिक है ही, हिंदी साहित्य में अकेला भी है। पिता द्वारा पुत्री के तरुण लावण्य का यह वर्णन अत्यंत मोहक एवं पवित्र है। निराला के उदात्त भावना से ही पुत्री के श्रृंगार का वर्णन संभव हो सकता है। कभी पुत्री सरोज में दिवंगत प्रिया की मधुरिमा देखकर कहता है :

''फूटा कैसा कंठ स्वर
मां की मधुरिमा व्यंजन भर।''

निराला की 'राम की शक्ति पूजा' में सीता के जिस मधुर छवि का वर्णन किया है वह माधुर्य के साथ ही साथ सात्विकता से परिपूर्ण है :

''नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय संभाषण,
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन।''

वास्तव में निराला की प्रवृत्ति सौंदर्य चित्रण में वासनात्मक नहीं है। निराला के उद्धार सौंदर्य चेतना का प्रतीक 'रूखी री यह डाल' कविता की पार्वती है जो काम को विनष्ट करने वाले स्मर हर का वर्णन करना चाहती है:

''हार गले पहना फूलों का,
ऋतुपति सकल सुकृत-कूलों का,
स्नेह, सरस भर देगा उर-सर,
स्मर हर को वरेगी।''

इस प्रकार निराला का सौन्दर्य चित्रण सात्विकता तथा उदात्त भाव से परिपूर्ण है।

RZH/940, जानकी द्वारिका निवास, राजनगर पार्ट 2, गली नम्बर -15, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली - 110077

माह के कवि

✍ प्रो. रणजोध सिंह

आईना
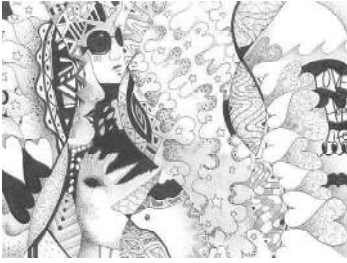
आंखें आचम्भित रह गई,
मैडम तुसाद का म्यूजियम देख कर।
मोम की मूर्तिया,
जैसे अभी बोल उठेंगी,
सिर श्रद्धा से झुक गया,
मूर्तिकार का हुनर देख कर।
वहां एक आईना भी था,
मुस्कराने लगा,
मैडम तुसाद के प्रति
मेरी श्रद्धा देख कर।
मेरा ही प्रतिबिंब मुझको दिखाकर,
मुझसे ही पूछने लगा,
अरे! यह कृति कैसी है ?
दिल से बताना,
बुद्धि का जाल फेंककर
ये बोलती भी है,
सुनती भी है,
सोचती भी है
और सुंदर भी है,
मगर हैरान हूँ
तुम्हें सबकुछ अच्छा लगता है
एक उसकी रचना छोड़ कर।
क्या तुम्हारे शब्दकोष में
'धन्यवाद' का एक भी शब्द नहीं
उस शिल्पकार के प्रति,
गड़ा है जिसने तुम्हें,
अपनी समग्र शक्ति जोड़ कर

शायद !

आदमी का कांप जाना,
सांप को देख कर
समझ आता है।
कहीं काट ले
तो..........?
पर
समझ नहीं आता,
आदमी का कांप जाना,
आदमी को देख कर।

शायद !
आदमी भी काटता है।
विष उगलता है सांप की भांति
मगर किस वक्त, कब, कहां काट जाए,
भरोसा नहीं।
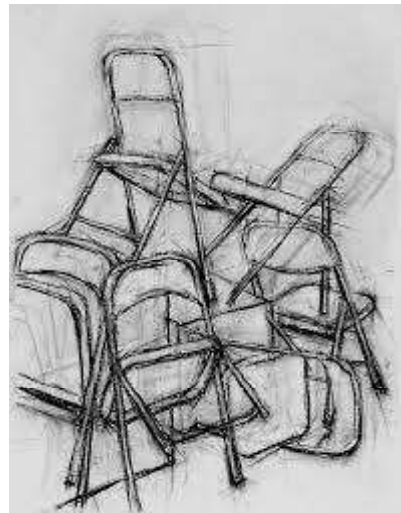
औरत

औरत,
औरत से बोली।
मेरा घर आँगन
महका दो।
छोटा सा
प्यारा सा
एक फूल खिला कर
मेरी मन बगियां महका दो।
एक स्वर में दोनों बोलीं
प्रभु स्वीकार हमारी अर्चना हो
दो वरदान ऐसा
एक प्यारा सा बेटा हो।
बेटे की चाह ने
कुछ किया ऐसा जादू-टोना।
भूल गई दोनों
औरत का औरत होना।

पतंग
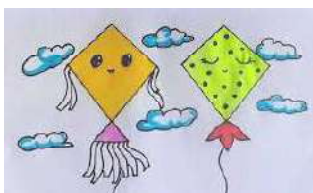
आसमान की ऊंचाई पर,
तेज रफ्तार से,
उड़ती हुई एक सतरंगी पतंग।
नहीं जानती,
उसकी डोर,
किसी और के हाथ में है।
जो
खत्म कर सकता है।
उसकी तेज रफ्तार,
उसका लहराना,
इतराना,
बल खाना.
बहुत धीमे से,
तोड़कर
डोर।

स्मृतियां और इतिहास

स्मृतियां
अक्सर मधुर होती हैं
उन्हें याद नहीं रखना पड़ता
खुद-व-खुद उभर आते हैं वो पल
मस्तिष्क पटल पर
जो हमने साथ-साथ जिये...
छा जाती हैं स्मृतियां पूरे वजूद पर
कुछ मधुर अलोकिक रंग लिये...
इतिहास
अक्सर कड़वा होता है
उसे याद करना पड़ता है
फिर याद आते हैं
ढेर सारे दु:ख, संघर्ष
अपने-अपने हिस्से के दर्द
जिनके कड़वे घूंट हमने पिये...
इतिहास
भी छा जाता है पूरे वजूद पर
मतलबी दुनिया का असली चेहरा लिये...
स्मृतियां
कहती हैं कि तुम मेरी थी
अपने तमाम अस्तित्व के साथ...
इतिहास
कहता है कि तुमने रचा लिया था
अपनी मांग में किसी और का सिन्दूर
बदलते वक्त की नजाकत के साथ...

सन विला फ्रेंड्स कॉलोनी, नालागढ़ जिला सोलन
हिमाचल प्रदेश पिन 174101, मोबाइल: 9418158741

यात्रा संस्मरण

भृगु सौर का गद्दी

✍ पारुल अरोड़ा

मैंने कहीं सुना था कि पहाड़ों में गद्दी भगवान का रूप होते हैं। 24 जुलाई 2010 मंडी नगर से शाम के समय मैं और मेरा मित्र मेरी बुलेट मोटर साइकिल पर कुल्लू के लिए निकले। मण्डी से कुल्लू लगभग 67 कि.मी है। रात हमने मेरे चाचा जी के बेटे के पास कुल्लू में ही काटी। अगली सुबह, तड़के ही हम मनाली के लिए निकल गए। कुल्लू से मनाली की दूरी लगभग 40 कि.मी है। सुबह लगभग छः बजे मनाली मॉल रोड पर थे। वहीं एक छोटी सी दुकान पर हमने हलका-फुलका खाया और चाय पी। दुकानदार से हमने भृगु झील तक जाने वाले मार्ग की पूछताछ की। उनका पहला उत्तर यह था कि आप आज मत जायें क्योंकि आज मौसम साफ नहीं है और यदि जाना ही है तो किसी स्थानीय या गाइड को साथ ले जाएं। हमने उनकी बातों को अनसुना कर दिया। भृगु झील जाने के लिए दो मार्ग हैं। पहला मनाली के समीप स्थित वशिष्ठ गांव होकर और दूसरा रोहतांग दर्रे व रोहतांग पर्वत शृंखला की तलहटी में स्थित गुलाबा मोड़ से 5-6 कि.मी. के पैदल मार्ग से झील तक पहुंचा जा सकता है। गुलाबा मनाली से लगभग 10 -12 कि.मी. है। इस झील में 20 भादो को पर्व स्नान का आयोजन होता है। गुलाबा पहुंचने से पहले ही मोटर साइकिल का पैट्रोल खत्म हो गया। शायद यह एक प्रकृति का संदेश था कि हम अपनी यात्रा को आज स्थगित कर दें। मेरे मित्र को मनाली की दिशा में वापस पैदल जाकर पेट्रोल लाना पड़ा। लगभग 9 बजे गुलाबा मोड़ पर पहुंच गए। वहीं सामने एक छोटी सी दुकान से मैंने 100 रुपये में किराये पर एक भारी भरकम घुटनों से भी लम्बा काला कोट लिया। उस दुकानदार ने सामने के पहाड़ की ओर संकेत करके बताया यहीं से भृगु झील की यात्रा आंरभ होती हैं। मैं और मेरा मित्र मोटर साइकिल को सड़क के एक तरफ सुरक्षित लगा कर झील के लिए पैदल पहाड़ की और बढ़ गए। कुछ देर में ही सड़क दिखनी बंद हो गई। अब वहां केवल मैं और मेरा मित्र ही था और था प्रकृति का अद्‌भुत दृश्य। कंकरीट के जंगल से निकल कर हम प्रकृति द्वारा निर्मित जंगल में प्रवेश कर गए थे। झील लगभग 14000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। जैसे-जैसे हम ऊपर की और बढ़ रहे थे। पेड़ भी कम होते जा रहे थे, चलते-चलते लगभग एक बज चुका था। जैसे-जैसे हम पहाड़ चढ़ते है दूर-दूर तक देख सकते हैं किंतु आज जैसे सब एक सफेद रंग से ढक गया था। जिस चोटी पर हम थे वहीं से जब मेरी दृष्टि नीचे की ओर गई तो मैनें देखा कि एक व्यक्ति भी हमारी दिशा में आगे की और बढ़ रहा था। तो मैने जब उससे झील के बारे में ऊपर से ही जोर से आवाज लगा कर पूछा तो उन्होंने नीचे आने के लिए कहा। हमें दोबारा नीचे उतरना पड़ा। उस व्यक्ति ने कहा कि आप गलत रास्ते से जा रहे थे उस समय दोपहर के लगभग 12:30 बजे थे। फिर हम उसके साथ ही चल पड़े। मौसम इतना साफ नहीं था फिर भी जहां तक दृष्टि जाती थी प्रकृति का मनमोहक दृश्य मन को मोह लेता था। काफी देर चलने के बाद हमें बहुत बड़ा ग्लेशियर दिखाई दिया। हमें उसे पार करना था। ग्लेशियर के सामने खड़ी चढ़ाई जिसमें टूटी हुई बड़ी-बड़ी चट्टानें थी। वहीं ऊपर भगवा पताका लहरा रहा था। अब हमें आभास हो गया था कि हम झील के पास हैं। जैसे ही हमने उस खड़ी चढ़ाई को पार किया तो सामने पवित्र भृगु सौर के दर्शन हुए। हमारा उत्साह व ऊर्जा दोगुनी हो गई थी दोपहर के तीन बज चुके थे।

जो व्यक्ति हमें रास्ते में मिला था हमारा मार्गदर्शन कर वह हमसे पहले ही वहां पहुंच चुका था। हम आराम से प्रकृति का आनंद लेते हुए आगे बढ़ रहे थे। झील के किनारे पर कुछ माताएं भी बैठी थी। अभी हमें भृगु झील के पास पहुंचे थोड़ी ही देर हुई थी कि उन माताओं ने हमें कहा कि अब आप भी यहां से वापस समय से लौट जाएं क्योंकि यहां बहुत अधिक धुंध पड़ती

है और आज मौसम भी ठीक नहीं है। यह कहकर वे सब वहां से चलें गए। उनके जाने के बाद हमने झील में स्नान किया कुछ और समय वहां बिताया, समय का पता ही नहीं चला कब शाम के लगभग पांच बज गए थे। हम वहां से वापस निकल पड़े। खड़ी चढ़ाई जो न जाने कब उतराई में बदल गई थी। नीचे उतरती बार वहां किसी बात को लेकर मेरी और मेरे मित्र में कहा सुनी हो गई। मैंने और मेरे मित्र ने अलग-अलग मार्ग चुन लिया। मै भी नीचे की तरफ उतरता रहा धुंध बहुत ज्यादा बढ़ गई थी दो-तीन मीटर के बाद कुछ नहीं दिख रहा था, वो बड़ा ग्लेशियर, वो रास्ता जहां से हम आये थे सब अदृश्य हो गए थे। मुझे लगा कि मेरा मित्र मुझसे आगे निकल गया है। लेकिन फिर भी मैंने वहां रुक कर उसे बहुत सी आवाजें लगाई लेकिन कोई भी उत्तर नहीं आया। मै आगे बढ़ता रहा मुझे लगा कि थोड़ी देर के बाद हम कहीं ना कहीं मिल ही जाएंगे। मुझे लग रहा था कि मै बिल्कुल सही रास्ते पर हूं किंतु काफी दूर पहुंचने पर भी वह स्थान नहीं आया जहां झील की तरफ जाती बार वह व्यक्ति हमें मिला था। धीरे-धीरे अंधेरा होना भी प्रारंभ हो गया था। मै केवल यही सोच रहा था कि मुझे पहाड़ी से नीचे कैसे ना कैसे पहुंचना है। मै चलता रहा मेरे पास एक बैग भी था एक जगह मैं फिसला और वह बैग कहीं नीचे गिर गया धुंध के कारण मै बैग को देख नहीं पाया। यहां तक कि मुझे बैग के गिरने की आवाज तक भी नहीं आई। गहराई कितनी रही होगी कोई अंदाजा नहीं है। उस समय नीचे की तरफ उतरती बार पानी के तेज बहाव की आवाज मुझे आने लगी थी। साफ कुछ नहीं दिख रहा था। मै उसी दिशा में नीचे उतर रहा था। उस समय मै भगवान से प्रार्थना भी कर रहा था कि मुझे ठीक-ठाक किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचने में सहायता करें। रात के लगभग दस-ग्यारह बजे के आसपास में नीचे खड्ड के किनारे पहुंच गया। मुझे यह लग रहा था कि मै सही स्थान पर पहुंच गया हूं। यहां भी एक बहुत विशाल चट्टान थी। झील जाती बार भी ऐसी बड़ी चट्टान देखी थी। मुझे लगा कि सुबह होते ही सड़क की ओर यहां से निकल जाऊंगा लेकिन आज की रात मुझे यहीं खुले में ही बितानी थी। उस बड़ी चट्टान पर मै किसी प्रकार चढ़ गया और मुझे लगा कि मै इसी के ऊपर ही आज की रात बिताऊंगा। किंतु जैसे मैं उसके ऊपर चढ़ा तो बर्फीली हवा के कारण मुझे नीचे उतरना पड़ा। जंगली जानवरों में भालु का खतरा तो रहता ही है। थोड़ी आगे जाने के बाद अपनी दाईं ओर मुझे कुछ चट्टानें दिखाई दी। पहले मैं वहां बैठा जमीन काफी ठंडी थी। मैंने इधर-उधर से थोड़ा घास इकट्ठा किया। उस चट्टान के नीचे अपना बिस्तर बिछा लिया और वहीं पर ही लेट गया। लेकिन सारी रात मुझे नींद नहीं आई। दिमाग में कुछ न कुछ चलता रहा। रात में बारिश भी हुई। चट्टानों के कारण में थोड़ा-बहुत बचा रहा। वह रात मैंने जैसे-तैसे काट ली। कुछ देर के लिए आंख लग गई थी जब मेरी आंख खुली तो सवेरा हो गया था। मौसम कल से साफ था। काफी दूर तक देख सकता था। वहां का दृश्य देखकर मै मंत्रमुग्ध हो गया। यह बहुत ही सुंदर स्थान था। लेकिन मै अपने मार्ग से पूरी तरह से भटक गया था। जहां से हम आए थे। मै उसके विपरीत दिशा में था शायद, उस समय अपनी दिशा का बिल्कुल भी पता नहीं लगा पा रहा था कि मै हूं कहां। मै वहां से उठा तो थोड़ी दूर मुझे पीछे की ओर दो घोड़े दिखाई दिए। सुबह के लगभग छः बजे के आस-पास का समय रहा होगा। मुझे कहीं ना कहीं लगा कि अगर यहां घोड़े हैं तो यहां पर मनुष्य भी हो सकते हैं, तो मै खड्ड के किनारे के साथ ही नीचे की तरफ बढ़ने लगा। वहां ग्लेशियर भी थे। थोड़ा चलने के बाद मुझे सामने खड्ड के दूसरी ओर दूर पहाड़ पर बहुत सी भेड़-बकरियां दिखाई दी। कुछ देर के बाद मुझे वहां पर एक व्यक्ति दिखाई दिया। मैं जोर-जोर से उसे आवाजें लगाने लगा लेकिन उसकी तरफ से कोई भी उत्तर नहीं आया। धीरे-धीरे वो व्यक्ति अपने तीन कुत्तों के साथ खड्ड की तरफ बढ़ा और दूसरी तरफ से उसने मुझे अपने पास आने के लिए संकेत किया लेकिन वह मुझसे कोई बात नहीं कर रहा था। मैंने कैसे न कैसे हड्डियों को जमा देने वाले शुद्ध औषधीय जल से भरी उस खड्ड को पार किया। अब मेरे उस किराये के काले कोट का वजन पानी के कारण और बढ़ गया था। एक तो रात में भी बारिश हुई थी इसलिए मेरी हालत कुछ ठीक नहीं थी खाने के लिए वहां केवल हरी-हरी घास ही थी।कैसे ना कैसे मैंने खड्ड को पार किया और उन्होंने वहां भी मुझसे

बात नहीं की। उनके कंधे पर लम्बी बंदूक लटकी हुई थी। वह आगे की ओर चलते रहे और मैं पीछे-पीछे। थोड़ी देर के बाद ही हम उनके तंबू के पास पहुंच गए। उन्होंने मुझे अपने तंबू में अंदर बिठाया, खाने के लिए रोटी दी और दूध भी दिया। तंबू काफी गरम था। अंदर चुल्हा, आग, कंबल सर्दी से बचने के लिए पूरी व्यवस्था थी। स्वयं भी उन्होंने ऊन के मोटे कपड़े व टोपी पहनी थी। तंबू में एक और लड़का उनके साथ था। मैंने उन्हें जल्दी-जल्दी सारी बात बताई, किस तरह से यह सारी घटना घटी और किस तरह से मैंने रात काटी? उन्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। मुझे सुनने के काफी देर बाद, आखिरकार उन्होंने अपना मौन तोड़ा और मुझसे कहा कि उन्होंने मुझे गोली मार देनी थी, इसकी वजह यह थी कि इस तरफ से कोई भी नहीं आता है। उस समय मेरे बाल कंधों से भी थोड़े लंबे थे। ऊपर से मैंने काला कोट पहना था जो कि पानी से गिला होने के कारण पैरों तक लम्बा हो गया था। जूते भी मैंने काले पहने थे। मैं उस काले कोट को बिल्कुल अपने शरीर के साथ लपेटे हुए था। चलते हुए मैं थोड़ा झुक रहा था और मेरे लम्बे-लम्बे काले बिखरे हुए बाल। उनका कहना था कि उन्होंने मुझे चुड़ैल समझा था। मेरी वेशभूषा को देख उन्हें शायद आभास हुआ होगा कि ये एक चुड़ैल है। फिर मुझसे कहा कि मैं आपकी हिम्मत की दाद देता हूं कि आप यहां तक तो पहुंच गए, किंतु आपने इतनी ठंड में ऐसे कपड़ों के साथ खुले में रात कैसे काट ली, मैं उन्हें इस बात का उत्तर नहीं दे पाया। गद्दी जी ने मेरी बहुत प्रशंसा की। मैं उस समय खुश हो गया। अपनी प्रशंसा किसे अच्छी नहीं लगती। उन्होंने मुझसे कहा कि वे दो-तीन दिन में यहां से कुल्लू जाएंगे तब तक मैं भी वहां रुक सकता हूं। मैंने उनसे कहा कि मैं अपने माता-पिता जी और अपने दोस्त से बात करना चाहता हूं तो वह मुझे अपने तंबू से काफी दूर दूसरे पहाड़ पर लेकर गए, जहां पर बीएसएनएल का सिग्नल आता था। उनके मोबाइल से मैंने अपने परिवार से बात की और माता जी से कहा कि मैं दो-तीन दिन में मण्डी पहुंच जाऊंगा। फिर अपने मित्र से संपर्क किया, मित्र से बातचीत हुई तो पता चला कि मेरे मित्र को रास्ता भटकने के थोड़ी देर बाद ही भैंस चराने वाले कुछ लोग मिल गए थे, जिनके तंबूओं में ही उसने रात काटी और वे लोग भी रात को लगभग बारह बजे तक मुझे पहाड़ों में ढूंढते रहे थे। किंतु मेरा कुछ अता-पता नहीं मिलने के बाद आखिर में मौसम खराब होने के कारण वापस लौटना पड़ा था। हम तंबू में वापिस पहुंचे, उन्होंने मुझ से कहा यदि मैं रात को ही इस खड्ड को पार कर लेता तो उनके कुत्ते मुझे फाड़ देते। यहां पर भालू भी पाए जाते हैं जो कि भेड़-बकरियों का शिकार करते हैं। उन्होंने मुझ से कहा कि वो मुझे अभी यहां से सुरक्षित स्थान पहुंचा देंगे, जहां भैंसों वाले व्यक्तियों के साथ मेरा मित्र भी आ जाएगा। अपनी लगभग दो हजार से भी अधिक भेड़-बकरियों को अपने दूसरे साथी जो कि अभी आयु में छोटा ही लग रहा था, छोड़ कर मुझे सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने के लिए तैयार हो गए। वे गद्दी व्यक्ति उस समय मेरे लिए भगवान से कम नहीं थे। हम वहां से वापिस चल पड़े। सुबह लगभग आठ बजे का समय था। हमने खड्ड पार की। फिर मैंने उनको वह स्थान भी बताया जहां मैंने रात काटी थी। उस स्थान पर घास बिछी हुई थी। लग रहा था कि यहां पर वाक्य ही कोई रहा था। अब पूरी तरह से मेरी बात का उन्हें विश्वास हो गया था। उन्होंने संकेत किया कि हमने इस तरफ से वापस जाना है जिस दिशा में उन्होंने संकेत किया। वो बहुत बड़ा सीधा, खड़ा विशाल पहाड़ था। मुझे समझ नहीं आ रहा था। मै यहां इन्ही पहाड़ों को लांघ कर पहुंचा हूं। आगे-आगे वे चलने लगे और मैं उनके पीछे-पीछे चुपचाप चलता रहा। काफी देर के बाद हम एक जगह पर पहुंचे जहां पर कि लगभग दो तंबू लगे हुए थे। उन तंबूओं के पास मैं जैसे ही पहुंचा तो मैंने देखा उन तंबूओं में से एक माता जी निकली और वही कल वाला व्यक्ति निकला। वे आपस में रिश्तेदार थे। वे भी गद्दी थे। जैसे ही मैं उन माता जी के पास पहुंचा तो मैंने उनके चरण स्पर्श किए। सारी घटना भी सुनाई। माता जी ने मुझसे कहा कि आपने पिछले जन्म में कुछ ना कुछ अच्छे कर्म किए हैं जो आप जीवित बच गए हैं। यहां से इस तरह से बच निकलना बहुत मुश्किल है। थोड़ी देर हमने वहां बातचीत की तभी ऊपर की एक पहाड़ की चोटी से, जो कि धुंध से ढकी हुई थी, से पारुल भाई पारुल भाई जोर-जोर से कई लोगों के पुकारने की आवाज आ रही थी। मैं बहुत आश्चर्य चकित हो गया कि ये इतने ज्यादा कौन लोग हैं। जैसे ही वहां से धुंध थोड़ी कम हुई तो मैंने देखा पांच लोग मेरे मित्र के साथ वहां पर आ गए थे। यह तो पूरा फिल्मी सीन लग रहा था मुझे। गद्दी भाई

उन्होंने मुझ से कहा यदि मैं रात को ही इस खड्ड को पार कर लेता तो उनके कुत्ते मुझे फाड़ देते। उन्होंने कहा कि वो मुझे अभी यहां से सुरक्षित स्थान पहुंचा देंगे, जहां भैंसों वाले व्यक्तियों के साथ मेरा मित्र भी आ जाएगा। अपनी भेड़-बकरियों को अपने दूसरे साथी के पास छोड़ कर वो लोग मुझे सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने के लिए तैयार हो गए।

साहब और उनके बीच फोन पर बात हो गई थी। अब ये पहाड़ भी मेरे नाम से परिचित हो गए थे। मैं, गद्दी भाई साहब और वो कल वाले व्यक्ति हम तीनों उनकी ओर ऊपर चोटी की तरफ बढ़ गए। कुछ समय हम सब उस चोटी पर बैठ आपस में बातचीत की और गद्दी भाई साहब का धन्यवाद किया और अब हम इन भैंसों वाले व्यक्तियों के साथ पहाड़ की दूसरी तरफ नीचे की तरफ जाने के लिए तैयार हो गए। समय सुबह के दस के आसपास का था। मेरा मित्र भी सुरक्षित था। उनके साथ नीचे उतरती बार मैं कई बार फिसला-गिरा। वो मुझ से बोले आप पता नहीं कैसे बचें होंगे। उनके सबसे बड़े भाई साहब वहीं नीचे तम्बू में ही थे। मुझे और मेरे मित्र आकर्ष शर्मा को अपने पास बिठाया। वहां पर हमें दूध और खाद्य पदार्थ भी खिलाए। वहां पर उनके कहने पर मैंने सारी घटना का पुनः सारा वृत्तांत सुनाया। उन्होंने भी कहा आप बहुत हिम्मत वाले हो, आप बच गए। हमें बहुत खुशी है। कुछ देर वहां बिताने के बाद उनमें से एक व्यक्ति हमारे साथ हमें नीचे सड़क तक छोड़ने आया। काले कोट को मैंने उस दुकानदार को वापिस किया। मेरे मित्र के पास दूसरे बेग में पड़ी जैकेट पहनी। अपना बुलेट स्टार्ट किया और हम दोपहर के समय महाऋषि माण्डवय की तपोस्थली मंडी नगर पहुंच गए। मेरे पास उस समय नोकिया 6303 मोबाइल फोन था। सिग्नल ना होने के कारण संपर्क नहीं कर पाया था। यात्रा के कुछ छायाचित्र और चलचित्र मैंने बनाऐ थे जो आज भी मेरे पास सुरक्षित हैं।

मकान क्र. 138/5 पैलेस कॉलोनी, अस्पताल मार्ग,
मण्डी नगर, हिमाचल प्रदेश 175001,
दूरभाष 9805379777

लघुकथा

औचित्य

✍ सीताराम गुप्ता

राजीव और उसकी पत्नी सुनीता ने बैठते ही सबसे पहले एक थैला खोलकर उसमें से एक लिफाफा निकाला और उसे गोपालचंद्र को पकड़ाते हुए राजीव ने कहा, 'ताऊ जी पापा ने ये खास आपके लिए भेजा है।' गोपालचंद्र ने पूछा, 'इसमें ऐसा क्या है भई जो जगदीप ने ख़ास तौर से मेरे लिए भिजवाया है?' 'आप ही खोलकर देख लीजिए न ताऊ जी,' राजीव ने कहा। तभी राजीव का फोन बजने लगा। राजीव ने फोन उठाया। ' हां पापा हम पहुंच गए हैं। अभी-अभी पहुंचे हैं ताऊ जी के घर। आपका गिफ्ट भी ताऊ जी को दे दिए हूं। लो ताऊ जी से भी बात करो,' ये कहकर राजीव ने फोन गोपालचंद्र को थमा दिया। आवाज़ आई, 'प्रणाम गोपाल भैया।' गोपालचंद्र ने कहा, ' प्रणाम भाई। कैसे हो जगदीप?' जगदीप गोपालचंद्र का कजन है। जगदीप ने कहा, 'भाई साहब आपको मुरमुरे के गुड़ के लड्डू पसंद हैं न इसलिए मैंने अपने हाथों से बनाकर आपके लिए भेजे हैं।' 'भाई धन्यवाद! आपको मेरी पसंद याद है बहुत-बहुत धन्यवाद!' गोपालचंद्र ने जगदीप के प्रेम और आत्मीयता के लिए उसका आभार व्यक्त किया। राजीव और सुनीता खाना खाने के बाद विदा हो गए। उनके जाने के फौरन बाद गोपालचंद्र ने जगदीप द्वारा भेजा गया मुरमुरे के लड्डुओं का लिफाफा उठाया। उसमें पॉलीथिन की चार थैलियों में मुरमुरे के लड्डू थे। उन्होंने एक थैली फाड़ी और उसमें से एक लड्डू निकालकर उसका एक टुकड़ा दांत से तोड़कर चबाया। स्वाद में कुछ कड़वापन महसूस हुआ। चश्मा लगाकर लड्डओं की थैलियों को ध्यानपूर्वक देखा। थैलियां काफी पुरानी थीं। लगता था वर्षों से धूल में पड़ी रही होंगी जिससे मौसम व नमी के प्रभाव से धूल की परत मैल में परिवर्तित होकर स्थायी रूप से उन पर जम चुकी थी। बहुत ध्यान से देखने पर पता चला कि उन पर पैकिंग की तारीख की रबर स्टैंप्स भी लगी हुई थीं जो मिटाने के प्रयास के कारण काफी धुंधली हो चुकी थीं लेकिन पूरी तरह से मिट नहीं पाई थीं। गोपालचंद्र के लिए खास उपहार भिजवाने के लिए जगदीप ने मुरमुरे के लड्डू बेशक अपने हाथों से न बनाए हों लेकिन सवा दो साल पुरानी रबर स्टैंप्स को मिटाकर फेंकने के लायक लड्डुओं को नया बनाने के लिए उसके हाथों ने जरूर काफी मेहनत की होगी। इसमें संदेह नहीं। रिश्तों में आत्मीयता व गरमाहट बनाए रखने के लिए थोड़ी बहुत मेहनत तो करनी ही चाहिए लेकिन उम्र के इस पड़ाव पर इतनी अधिक मेहनत करने का क्या औचित्य है?

ए.डी. 106 सी., पीतम पुरा, दिल्ली - 110034,
मोबा. नं. 9555622323

कहानी

सूखी दूब

प्रेम यह सुनने को लालायित था कि कब उसके पिता जी की घर के आँगन में पहुंचते ही खांसी वाली दस्तक सुनाई पड़े तो वह जल्दी से घर का द्वार खोल कर उन्हें सोफे के ऊपर बैठते ही पानी का गिलास पिला कर अपनी सरकारी नौकरी लगने के बारे में कोई शुभ समाचार सुने ।

सतपाल घृतवंशी

शाम का समय था। सुबह पूर्व दिशा से निकला सूरज पृथ्वी की परिक्रमा करके उसकी शोभा बढ़ा कर अपनी दिन भर की थकावट मिटाने के लिए पश्चिम दिशा के द्वार को लांघता हुआ रात को विश्राम करने की तैयारी में था। उधर रात्रि भी चमकते चांद के धीरे-धीरे बढ़ रहे प्रकाश में अपनी सितारों जड़ित चमकती चादर को धीरे-धीरे नभ पर फैलाने लगी थी ।

प्रेम अपने पिता जी के घर पहुंचने की प्रतीक्षा में घर के कमरे की खिड़की में से इस अद्भुत नजारे का आनंद लेता हुआ, दिन भर में पढ़ कर इधर-उधर बिखरी पुस्तकों , मैगजिनों और समाचार पत्र-पत्रिकाओं इत्यादि को मेज और बैड से उठाकर पास में रखी अलमारी और रैक पर संजो कर रख रहा था । इस सारी व्यस्तता में भी उसके कान बाहर की ओर लगे हुए थे । वह यह सुनने को लालायित था कि कब उसके पिता जी की घर के आँगन में पहुंचते ही खांसी वाली दस्तक सुनाई पड़े तो वह जल्दी से घर का द्वार खोल कर उन्हें सोफे के ऊपर बैठते ही पानी का गिलास पिला कर अपनी सरकारी नौकरी लगने के बारे में कोई शुभ समाचार सुने ।

उधर उसकी माता राधा भी रसोई के कक्ष में रात के भोजन बनाने की तैयारी में गैस के चूल्हे पर एक तरफ पात्र में सब्जी तो दूसरी तरफ पात्र में चाय के काहवे को उबाल कर धीमी आँच पर रख कर आटा गूंथ रही थी । वह इस प्रतीक्षा में थी कि कब उसके पति ''साधु राम'' घर पहुंचे तो आटे को समेट कर काहवे में दूध डालकर चाय तैयार करे और सभी इकट्ठे बैठ कर चाय पीने का आनंद लें ।

तभी प्रेम को बाहर से अपने पिता जी की खांसी की दस्तक सुनाई दी । उसे सुनते ही उसने जल्दी से कमरे का द्वार खोला और उसके पिता जी ने कमरे में प्रवेश किया।

आ गए पिता जी, आज तो आपने घर पहुंचने में बहुत देर कर दी ? दरवाजा बन्द करते हुए प्रेम ने पूछा।

हां प्रेम! आज रविवार था न , सोफे पर बड़े आराम से बैठते हुए उसके पिता जी ने उत्तर दिया ।

तभी प्रेम ने अपने पिता जी को एक गिलास पानी का पीने को दिया। उन्होंने पानी पीकर खाली गिलास अभी मेज पर रखा ही था कि प्रेम की माता जी भी वहां चाय लेकर आ पहुंची और सभी चाय पीने लगे।

पिता जी,'' पिछले वर्ष जब मैंने कॉलेज कैडर के लेक्चरर का टैस्ट पास किया था तब नेता जी ने कहा था,'' चिंता मत करो, आप का काम हो जाएगा '', पर मेरा काम नहीं हुआ। इस बार भी मैंने उसी कैडर की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण की है और अब की बार तो रिक्तियां भी पहले से ज्यादा हैं। दस -बारह दिन पहले जब मैं आपके साथ उनके पास अपना वायोडाटा देने गया था तब भी उन्होंने मुझे वही आश्वासन दिया है । मुझे वापिस लौटते समय उन्होंने यह भी कहा-चाहे कुछ भी हो, इस बार तो आपको कॉलेज का लेक्चरर बनाना ही है । अब तो इस बात को हुए लगभग पन्द्रह दिन बीत चले हैं। आप तो हर दूसरे -तीसरे दिन उनके पास जाते रहते है । क्या आज उनसे इस बारे में कोई बात हुई ? चाय पीते-पीते प्रेम ने अपने पिता जी से पूछा।

हां प्रेम, बात तो चलती ही रहती है और वह मुझे आश्वासन भी देते हैं। चाय का खाली कप मेज पर रखते हुए उसके पिता ने कहा।

ठीक है, पर कहीं पिछले वर्ष की तरह ही न हम उनके भरोसे बैठे रहें और प्रेम ऐसे ही प्राइवेट स्कूल में फंसा रहे। आखिर समय पर हमने इसका विवाह भी तो करवाना है । कब इसकी सरकारी नौकरी लगेगी तो कब इसका विवाह होगा ? अब इसकी उम्र भी तो बीती जा रही है। ज्ञात है , बाद में हम उम्र की लड़कियां मिलना भी मुश्किल हो जाती है । अगर इस

समय इसकी नौकरी लग जाए तो कम से कम आने वाली इन सर्दियों के मौसम में हम इसका विवाह करवाने वाले तो बनें। आपने जरा समझा कर तो कहना था उन्हें। यूं ही हर दूसरे -तीसरे दिन नेता जी के पास जाकर बैठने का क्या फायदा। ये नेता लोग तो यूं ही अपनी शोभा बढ़ाने के लिए लोगों को अपने पीछे लगाए रखते हैं। मुझे स्मरण है, उस दिन पूरे का पूरा गांव केवल एक हैंड पम्प लगवाने के लिए उनके पास आकर कैसे बैठा था। अपने बेटे के प्रति संवेदना व्यक्त करती हुई प्रेम की माता ने अपने पति से कहा।

हां राधा, तुम ठीक कह रही हो। प्रेम की सरकारी नौकरी लगते ही हम इसका विवाह बड़ी धूमधाम से करेंगे । जब कभी भी अकेले में मेरी नेता जी से कोई बात चलती है तो उसमें प्रेम की नौकरी का जिक्र अवश्य करता हूं। वह हर बार यही कहते हैं , ''साधु राम जी! चिंता मत करो। एक बार लड़के का पर्सनल इन्टरव्यू की तिथि तो आने दो, फिर पूछना मुझे'' और इस बार तो मैंने भी नेता जी की नस पकड़ ली है पिता जी! नेता जी की वह कौन सी नस है जो आपके हाथ लगी है? अपने मन में कुछ शंका रखते हुए प्रेम ने हंसते हुए पूछा।

अरे ..बस यही, हर दूसरे-तीसरे दिन उनके कार्यालय में जा आए , दिन में दो-चार डी. ओ. लैटर टाइप कर दिए, कभी किसी के वृद्धावस्था पैन्शन के कागज तैयार कर दिए या फिर वहां पर आए हुए लोगों को सरकार द्वारा चलाई गई नवीन योजनाओं के बारे में अवगत करवा दिया, और क्या । बस, यही काम तो होता है वहां और सेवानिवृत्ति के पश्चात् घर में बैठ कर करना भी क्या है मैंने ? नेता जी के पास जाने से एक तो तरह-तरह के लोगों से परिचय हो जाता है और दूसरा मन भी लगा रहता है। सबसे बड़ी बात यह कि तुझे सरकारी नौकरी भी तो दिलवानी है उनसे। रही बात तेरे विवाह की, उसके लिए हमने किसी लड़की को ढूंढने तो जाना नहीं, वो तो हमें ज्ञात ही है कि तूने और रोहिणी ने पहले से ही आपस में विवाह करने का रिश्ता बांध रखा है ।

क्यों राधा, सच कहा न मैंने ? अपनी पत्नी की ओर देखते हुए प्रेम के पिता ने मुस्कुराते हुए कहा । तब प्रेम की माता भी अपने पेट में छुपाए रहस्य को पचा न पाई और उसके मुख से भी निकल पड़ा।

हां! उस दिन जब आप घर पर नहीं थे तो रोहिणी आई। मेरे पूछने पर उसने हां कर दी है । आप की इच्छानुसार मैंने उसे प्रेम की सरकारी नौकरी लगने तक कुछ समय के लिए और रुकने को कहा है, वह मान गयी है । अब देर तो बस हमारी तरफ से ही है । मुझे उसकी बातों से प्रतीत हुआ कि उसकी तरफ से कोई विलम्ब नहीं है । क्यों प्रेम, यही बात हुई थी न उस दिन ? प्रेम की माता ने अपने दिल से प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा । अपनी नौकरी की समस्या में उलझे प्रेम ने जब ये सभी बातें अपने माता-पिता के मुख से सुनीं तो वह मुस्कुराता हुआ दूसरे कमरे में चला गया।

अगले दिन सुबह के समय प्रेम हर दिन की तरह खाना खा कर स्कूल में पढ़ाने चला गया और थोड़ी देर के पश्चात् उसके पिता जी भी नेता जी के कार्यालय को चले गए । ऐसे ही दिन बीतने लगे ।

एक दिन शाम को जब वे सभी टेलिविजन के सामने बैठे चाय पीते हुए समाचार सुन रहे थे तो उन्होंने सुना की सेन्टर में बैठी विपक्ष पार्टी की सरकार ने उनके प्रदेश की ''निर्मल पार्टी '' की सरकार को भंग कर दिया है और शीघ्र ही आगामी विधानसभा चुनाव की तिथि घोषित होने वाली है। इस समाचार को सुनते ही वे सभी चौंक गए । उनके चेहरे उतर गए और अपनी सारी आशाएं धूमिल होती दिखने लगीं।

पिता जी! अब आप मेरी सरकारी नौकरी दिलवाने की आशा छोड़ दें। हां, अगर ''निर्मल पार्टी'' दोबारा से सत्ता में आती है तब तो ठीक है अन्यथा यह साक्षात्कार भी अब रद्द ही समझो । अपने बेटे के मुख से ये शब्द सुनकर साधु राम किसी सोच में पड़ गए। थोड़ी देर तक तो वह कुछ सोचते रहे, फिर धैर्यवान बनकर बोले।

बेटा ! तू चिंता मत कर। जैसे इस पार्टी का नाम निर्मल है वैसे ही लोगों में इसकी छवि भी निर्मल है । जिस तरह से इस पार्टी ने गरीब परिवारों के लिए नई-नई योजनाएं चला कर उन्हें लाभान्वित किया है, उससे तो यही प्रतीत होता है कि दोबारा से भी यही पार्टी सत्ता में आएगी और आपको तो ज्ञात ही है कि हमारे एम.एल.ए. कितने ईमानदार और स्वच्छ छवि के व्यक्ति हैं।

हां प्रेम! आप के पिता जी सही कह रहे हैं । मुझे तो ज्ञात ही है कि महिलाओं को अपना अधिकार दिलाने के लिए इस पार्टी ने क्या कुछ नहीं किया। मुझे तो ज्ञात है ना, इस सरकार ने औरतों को गाड़ियों में भर-भर कर दूर-दूर ले जाकर मन्दिरों और तीर्थ-स्थलों के दर्शन करवाए हैं। अन्यथा उन बेचारी गांव की भोली-भाली गरीब औरतों के बस की बात नहीं थी कि बिना पैसों के गांव से बाहर जा पाएं । अपने बेटे को धैर्य देती हुई प्रेम की माता बोली।

हां मां जी। आप ठीक कह रही हो, पर आगे दूसरी पार्टियों वाले भी तो हैं । उन्होंने अपनी सफलता के लिए न जाने लोगों को कैसे-कैसे प्रलोभन देने हैं? लोगों को तो अपने काम निकलवाने तक मतलब होता, उन्हें किसी विशेष पार्टी से क्या लेना देना और नेता लोग भी ऐसा ही करते है । जब दूसरी पार्टी का सिक्का चलता है तो लोग तो क्या, बड़े-बड़े नेता लोग भी पार्टी परिवर्तित कर लेते हैं । फिर आपस में इस विषय पर

बहुत देर तक चर्चा करने के पश्चात वे भोजन कर के सो गए और आगे भी आए दिन इसी विषय पर उनकी आपस में ऐसी – ऐसी चर्चाएं अक्सर चलती ही रहती।

अब सरकारी व निजी स्कूलों में बच्चों के परिणाम निकल चुके थे और अगले वर्ष के लिए दाखिले भी शुरू हो चुके थे। उस निजी स्कूल में प्रेम अन्य अध्यापकों सहित दिन भर यही आस लगाए बैठा रहता कि कब कोई अभिभावक अपने बच्चे को अगली कक्षा में प्रवेश करवाने के लिए आए तो वे उसे दाखिल करें पर ऐसा नहीं होता। जो कोई भी आता, वह उस स्कूल से अपने बच्चों को निकलवाने के लिए ही आता। अगर सभी अध्यापक मिल कर भी किसी बच्चे के मां-बाप को यह जानकारी देते कि इस स्कूल में अच्छे से अच्छे पढ़े-लिखे अध्यापक है, डीसिप्लन भी बहुत अच्छा है और हर चीज की सुविधा है, तो उत्तर मिलता --- सरकारी स्कूलों में भी तो पढ़े लिखे अध्यापक बैठे हैं । क्या वहां सरकार ने बच्चों को कोई सुविधा प्रदान नहीं की है ? वहां तो किताबें, वर्दी और दोपहर का खाना, बच्चों की बीमारी का उपचार निःशुल्क और कोई किसी प्रकार का चन्दा भी नहीं है । निजी स्कूलों में क्या है । यहां तो उन्हीं लोगों के बच्चे पढ़ सकते हैं जिनके पास अधिक धन हो, हम जैसे लोगों के बच्चे यहां कैसे पढ़ सकते है । हर दिन सुबह से लेकर शाम तक अभिभावकों की ऐसी – ऐसी बातों को सुनते-सुनते और बच्चों के प्रमाण पत्र जारी करते-करते सभी अध्यापक थक जाते और शाम को निराश होकर अपने-अपने घरों को लौट जाते । स्कूल के मालिक ने तो अपने स्कूल की ऐसी स्थिति होती देख, पिछले वर्ष ही कह दिया था कि अगर आगे भी यही हालात रहे तो स्कूल बन्द करना पड़ेगा ।

एक दिन शहर में किसी निजी स्कूल में एक अध्यापक के खाली पड़े पद की सूचना मिलते ही प्रेम दोपहर के पश्चात् अपने स्कूल से निकल कर उस स्कूल में जा पहुंचा। उसके पूछने पर वहां के प्रिंसिपल ने बताया कि वहां एक अध्यापक का पद रिक्त हुआ था, आज ही भरा है । अगर आप सुबह आ गए होते तो आप को ही रख लेना था। प्रिंसिपल महोदय के मुख से ऐसा सुनते ही प्रेम वापिस घर की तरफ चल पड़ा।

पांच बज चुके थे। सभी सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों से निकले कर्मचारी सड़क किनारे फुटपाथ पर बैठे रेहड़ी-फड़ी वालों से फल व साग-सब्जी बगैरा खरीद कर अपने-अपने घरों को जा रहे थे। उन्हें देख कर, अपनी इस उम्र में शाम के समय घर को खाली हाथ लौटने की अपने आप में एक शर्म सी अनुभव करते हुए उसके मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे । इसी शर्म के मारे इधर-उधर न देखता हुआ, प्रेम अपनी नजरें नीचे की तरफ झुकाए सीधा अपने घर की तरफ ही जा रहा था। तभी एक कपड़े के शोरूम से निकलती रोहिणी की दृष्टि उस पर पड़ी । उसे देखते ही रोहिणी ने अपने दोनों हाथों में लिए कपड़ों के थैलों को फुटपाथ के किनारे अपनी टांगों के सहारे रख कर प्रेम की तरफ देखते हुए आवाज लगाई।

प्रेम, प्रेम, रुको।

रोहिणी की आवाज पहचान कर प्रेम वहीं रुक गया । जब उसने अपनी बायीं ओर देखा तो पास में रोहिणी खड़ी थी । सिवाय इसके कि वह रोहिणी से कुछ बोले, रोहिणी पहले ही बोल पड़ी ।

मुझे क्षमा करना प्रेम। ''मैं आपके साथ किए हुए वचन का पालन नहीं कर सकी। कॉलेज के समय में दिया गया वचन, वहीं का वहीं रह गया। मैंने तो कई बार आपके समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा, पर आप की ओर से यही उत्तर मिलता रहा, पिता जी कहते हैं, सरकारी नौकरी लगने पर ही हम रोहिणी के साथ प्रेम का विवाह बड़ी धूमधाम से करेंगे। मैं आज तक इसी प्रतीक्षा में बैठी रही। मै तो और प्रतिक्षा करने को भी तैयार थी, पर करती भी क्या? यह समाज मुझे जीने नहीं दे रहा था। क्या माता-पिता, क्या रिश्तेदार तो क्या आस-पड़ोस वाले। सभी एक ही रट लगाए बैठे थे --- यह लड़की तो अब तीस की आयु पार कर चुकी है, इसके साथ की लड़कियां तो कब से अपना घर-बार बसा चुकी हैं । यह अपना विवाह कब करवाएगी। मैं हर किसी से ऐसी-ऐसी बातें सुनकर तंग आ चुकी थी। कई बार तो मेरी माता मुझ से यहां तक भी कह दिया करती, अब तो मेरे मरने के पश्चात् ही तू अपना विवाह करवाएगी''।

प्रेम! मैंने आपके साथ कोई बेवफाई नहीं की है, मैं मजबूर थी। जितने तक हो सका, मैंने आपका साथ दिया और प्यार का रिश्ता भी निभाया। अब यह रिश्ता आप से छुड़ाकर किसी और के साथ बांध दिया है । मेरे देवता ! मुझे माफ कर देना। मैंने अपने माता-पिता के मन की इच्छा पूरी कर दी है, आप भी अपनी सरकारी नौकरी लगने के पश्चात् किसी अच्छी सी पढ़ी-लिखी लड़की के साथ धूमधाम से विवाह करके अपने माता-पिता के मन की इच्छा पूरी कर देना। आप किसी ऐसी अच्छी लड़की के साथ विवाह करना कि आप दोनों की जोड़ी इस दुनिया के लिए आदर्श बन जाए।

पर्स में से अपने विवाह का कार्ड निकाल कर प्रेम के हाथ में देती हुई -- ये रहा मेरे विवाह का निमंत्रण। मैं शर्म के मारे आपके घर नहीं जा सकती हूं । इसीलिए मैं इसे किसी और के द्वारा पहुंचाना चाहती थी । अच्छा हुआ आप मिल गए। विवाह वाले दिन अपने माता-पिता को लेकर जरूर आ जाना। अपने इस प्यार भरे रिश्ते को आप से छुड़ाकर किसी और के साथ बंधने और वेदी के सात फेरे लेने से पहले आपको एक

बार जी भर कर देख लूंगी । आप ने सही समय पर सही निर्णय लिया है रोहिणी। समाज में रह कर सामाजिक बंधनों से कोई नहीं छूट सकता। यह समाज तो सुख के समय में मनुष्य के साथ चलता है न कि किसी के दुःख के समय । समाज में रहकर आखिर प्राणी को सामाजिक बंधनों में बंधना ही पड़ता है । मैं जानता हूं, आप अपने माता-पिता की इकलौती सन्तान हो, फिर भी तूने आज तक इतने लम्बे समय तक जो मेरा इन्तजार किया है, मैं उसका ऋणी हूं। अगर आप जैसी अमीर घर की लड़की मेरे जैसे गरीब व बेरोजगार लड़के से विवाह कर भी लेती तो लोगों ने कहना था - आखिर लड़की के माता-पिता ने क्या देखा ?

रोहिणी ! समय पर किया गया काम ही अच्छा लगता है। जैसे वृक्ष पर लगे हुए फल को उसका माली समय पर तोड़ ले तो ठीक है अन्यथा अधिक पक जाने पर वह हवा के एक ही झोंके से जमीन पर गिर कर खराब हो जाता है। उस समय अपनी प्रेमिका से जिन्दगी भर के लिए अलग होने की बात उसी के मुख से सुनकर और इस जुदाई के दुःख को अपने हृदय में छुपाते हुए अपने आप को संयम में रख कर प्रेम ने कहा।

आपने सही समय पर सही निर्णय लिया है रोहिणी। समाज में रह कर सामाजिक बंधनों से कोई नहीं छूट सकता। यह समाज तो सुख के समय में मनुष्य के साथ चलता है न कि किसी के दुःख के समय । समाज में रहकर आखिर प्राणी को सामाजिक बंधनों में बंधना ही पड़ता है ।

हवा तो कभी भी आ सकती है प्रेम, और वह अपने एक ही झोंके से कच्चे पक्के फलों को कभी भी नीचे गिरा सकती है। यह किसी भी बगीचे के माली के बस की बात नहीं।

हां, अगर किसी वृक्ष से हवा के झोंके से जमीन पर गिरे हुए फल को उसका माली समय पर उठा ले तो वह न तो खराब होता है और न ही व्यर्थ जाता है। उस में वही रस, गंध और स्वाद रहता है, जो एक वृक्ष में से हाथ से तोड़े गए फल में होता है। तब प्रेम के शब्दों के उत्तर में रोहिणी के मुख से ये शब्द अचानक ही निकल गये।

वे दोनों आपस में बातें कर ही रहे थे कि तभी एक औरत पास की रेहड़ी-फड़ी वालों से सब्जी व फल इत्यादि लेकर उनके पास पहुंचने ही वाली थी कि उसी समय एक सुन्दर सा नौजवान लड़का कपड़े के शोरूम के नीचे की पार्किंग से गाड़ी लेकर निकला और गाड़ी उनके समीप लाकर खड़ी कर दी।

अच्छा प्रेम! मैं चलती हूं । ऐसा कह कर रोहिणी उस औरत के साथ कार की पिछली सीट पर बैठ कर आगे की ओर निकल गई । प्रेम उस कार के पीछे -पीछे चलता हुआ रोहिणी को एक टक लगाए तब तक देखता रहा जब तक कि उनकी कार सड़क पर चले अन्य वाहनों में सम्मिलित होकर उसकी आंखों से ओझल नहीं हुई । प्रेम भले ही अपने दिल में छिपे प्यार को रोहिणी से व्यक्त नहीं कर सका हो, पर फिर भी उसके दुःखी मन से यह प्रतीत हो रहा था मानो उसकी पहरेदारी में ही उसके द्वारा लगाए हुए पौधे में से पके फल को कोई तोड़ कर ले जा रहा हो।

उधर, बच्चों को स्कूल से निकल जाने से स्कूल के मालिक ने स्कूल को बंद करके पूरे भवन को सराय में और खेल के मैदान को पार्किंग में परिवर्तित कर दिया था । प्रेम को वहां नौकरी करने का अवसर तो मिला, पर अपनी योग्यता और इच्छा शक्ति के कारण उसने वहां नौकरी करने से इनकार कर दिया। दूसरा उसे सरकारी नौकरी मिलने की भी पूरी आशा थी। इसीलिए तब तक उसने अपनी माता के कहे अनुसार अपने घर पर ही बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का निर्णय ले लिया।

एक दिन प्रेम की माता सुबह ही मुहल्ले वालों के घरों में उनके बच्चों को प्रेम के पास ट्यूशन पढ़ने के लिए पूछने गई। घर-घर जाकर पूछने पर भी कोई अपने बच्चे को प्रेम के पास ट्यूशन पढ़ाने को सहमत नहीं हुआ। हर किसी से केवल एक ही उत्तर मिलता, '' यह तो ठीक है कि प्रेम हिन्दी और अंग्रेजी हमारे बच्चों को पढ़ा सकता है पर गणित और साईंस का विषय उन्हें कौन पढ़ाएगा''? घर -घर से यही उत्तर सुन कर प्रेम की माता शाम के समय घर को लौट आई ।

अब चुनाव की तिथि घोषित होने से नेता जी को दोबारा से ''निर्मल पार्टी'' की ओर से चुनाव लड़ने का टिकट मिल चुका था और प्रेम के पिता नेता जी के कार्यालय में चुनाव की तैयारी में व्यस्त हो गए थे । सुबह से लेकर शाम तक बिना किसी काम-धन्धे के घर में बैठा प्रेम तंग आ गया था। एक बार उसने समाचार पत्र में दिल्ली के किसी निजी बी.एड. कॉलेज व स्कूल में हिन्दी के एक प्रवक्ता रखे जाने की ऐड पढ़ी। वेतन तो ठीक था, पर दोनों जगहों पर बारी-बारी से पढ़ाने की शर्त रखी हुई थी । प्रेम ने यह सोच कर आवेदन कर दिया कि अगर उसे वहां नौकरी मिल जाती है, तो एक तो उसकी बेरोजगारी दूर हो जाएगी और दूसरा व्यस्तता के कारण उसे रोहिणी की याद भी नहीं सताएगी ।

अब प्रेम को उस कॉलेज में निवेदन किए हुए लगभग बीस दिन बीत चुके थे पर आज तक उसे साक्षात्कार हेतु कोई भी

पत्र नहीं आया। एक दिन उसने सोचा कि क्यों न वह हर दिन सुबह बाजार से दूध सब्जी आदि लेकर आते समय डाक घर में जाकर अपने मुहल्ले के डाकिए से अपने चिट्ठी पत्रों के बारे में भी पता कर आया करे। इसी सोच के चलते वह हर दिन सुबह नाश्ता करने के पश्चात बाजार को चला जाता और सामान लेने के पश्चात डाकघर में अपनी डाक का पता करने के उपरान्त ही वापिस लौटता।

एक दिन प्रेम किसी कारणवश समयानुसार डाकघर में नहीं पहुंच सका। कार्यालय में पता करने पर एक कर्मचारी ने उसे बताया कि उनके मुहल्ले का डाकिया तो अपनी डाक लेकर बहुत देर पहले निकल चुका है। उसके मुख से ऐसा सुनते ही प्रेम यूं ही शहर में घूमने-फिरने चला गया। घूमते-घूमते वह अपने कॉलेज की सड़क पर जा पहुंचा । सामने कॉलेज की विशाल इमारतें दिखाई दे रही थी। उन्हें देख कर उसे अपने कॉलेज के समय की यादें ताजा हो आयीं। उन यादों को बारम्बार अपने मन में समुद्री लहरों की तरह उठता देख वह थोड़ी देर के लिए सड़क के किनारे बने एक वर्षालय में जाकर बैठ गया । वहां कुछ लड़के-लड़कियां दो-दो और चार-चार के समूह में आ-जा रहे थे । उन्हें देख कर उसे वहां पर रोहिणी के साथ बिताए हुए पलों की यादें ताजा हो आई । वहां बैठे - बैठे वह रोहिणी से बिछुड़ेपन को सहन नहीं कर सका और उसके प्रति अपने प्यार की हार को स्वीकार करके अपने भाग्य को कोसता हुआ घर को चला आया। घर पहुंचते ही उसकी माता ने उसे बताया कि उसे दिल्ली से साक्षात्कार हेतु पत्र आया है और अगले दिन साक्षात्कार होना है। पत्र पढ़ते ही प्रेम ने उस दिन रात को ही दिल्ली जाने की तैयारी कर ली।

सुबह होने वाली थी। दिल्ली बस स्टैंड में बस से उतरते ही प्रेम ने एक टैम्पो वाले को कॉलेज का पता बताया और उस में बैठ कर कॉलेज के समीप जा पहुंचा। वहां वह एक प्राचीन शिव मन्दिर की सराय में थोड़ी देर के लिए विश्राम करने ठहर गया । मन्दिर में भगवान की आरती हो रही थी । प्रेम ने वहां विश्राम करके स्नान बगैरा किया और फिर चाय-पान करके मंदिर में माथा टेकने चला गया।

भगवान की आरती होने के पश्चात् सभी श्रद्धालु अपने-अपने घरों को चले गए थे। मन्दिर के अन्दर बैठे पुजारी वहां प्रति दिन सुबह के समय दर्शन करने के लिए आने वाले श्रद्धालुओं की प्रतीक्षा में थे । मन्दिर में भीड़ न होने से वहां का वातावरण शांत बना हुआ था। जब प्रेम मन्दिर से माथा टेक कर अपने सिर को नीचे की ओर झुकाए दर्शनीय द्वार से बाहर निकला तो सिर को ऊपर की ओर करते ही उसकी दृष्टि वहां पर खड़ी एक प्रोढ़ावस्था सुहागिन औरत और उसके साथ खड़ी सफेद साड़ी में लिपटी एक नौजवान विधवा औरत पर पड़ी। वे दोनों अपने हाथों में पूजा सामग्री के पात्र लिए इस प्रतिक्षा में थीं कि कब यह व्यक्ति बाहर आए तो वे मन्दिर में प्रवेश करें। पर जैसे ही प्रेम की दृष्टि उस सफेद साड़ी में लिपटी नौजवान विधवा औरत से मिली तो उसके शरीर को एक बिजली के करंट जैसा जोरदार झटका लगा और वह वहीं पर शिथिल हो गया। फिर जब अपने-आप को संभालते हुए उसने, उन्हें मंदिर में प्रवेश करने का मार्ग छोड़ते हुए एक बार पुनः उस नौजवान विधवा औरत से नजर मिलाने की कोशिश की तो वह अपनी नजरें नीचे की ओर झुकाए मन्दिर के भीतर पूजा करने चली गई। ऐसा देख कर उसे ऐसा लगा कि वह कोई स्वप्न तो नहीं देख रहा है ? उसके मन में कुछ शंका होने लगी। फिर अपनी इस शंका को मिटाने के लिए वह चिंताग्रस्त होकर एक बार फिर से उसे देखने की इच्छा से पास में ही मन्दिर के एक विशाल स्तम्भ से अपने सिर के पिछले हिस्से को मसलता हुआ सहारा लेकर खड़ा हो गया।

पूजा करने के पश्चात जब वे दोनों औरतें बाहर आयीं तो उस सुहागिन औरत के पीछे नजरें झुकाए चली विधवा औरत से प्रेम ने आश्चर्य चकित होकर बड़ी ही घुटी और दुःख भरी आवाज निकालते हुए पूछा।

आप रोहिणी तो नहीं ?

इस दुःख भरी आवाज को सुनते ही उस औरत ने अपनी पलकें उठा कर एक बार प्रेम की तरफ देखा और बिना कुछ कहे मन्दिर प्रांगण से बाहर निकल गयीं।

उस समय, भले ही वह प्रेम को कुछ न बता पाई हो, पर फिर भी प्रेम के प्रश्न का उत्तर उसने अपने दुःख भरे आंसुओं से दे दिया। रोहिणी को इस अवस्था में देख प्रेम का मन बहुत दुःखी हुआ। उसकी आंखें आंसुओं से भर आयीं। उस समय वह इतना दुःखी हुआ कि अपने शरीर से बहे आंसुओं का बोझ भी न सह पाया और घबराहट के कारण वहीं पर एक पत्थर की लम्बी सी अटारी पर लेट गया। मन्दिर के भीतर बैठे पुजारी जी बड़ी देर से प्रेम के हृदय से व्यक्त होते दुख का अनुभव कर रहे थे और उन्हें इस बारे में कुछ शंका भी हो रही थी। इसीलिये वह अपनी इस शंका के निवारण हेतु बहाने से आरती का फूल, प्रसाद और चरणामृत इत्यादि लेकर बाहर आए और प्रेम को देते हुए बोले -

बेटा! क्या आप रोहिणी को जानते हो ?

जी पंडित जी। ''मै रोहिणी को जानता हूं। हम दोनों स्कूल से लेकर कॉलेज तक इकट्ठे ही पढ़े है ''। प्रसाद लेते हुए प्रेम ने कहा।

न जाने इस बेचारी ने पिछले जन्म में ऐसे कौन से कर्म किए थे, जो आज उसे भुगतने पड़ रहे है । रोहिणी को अपने सुहाग की चूड़ियां पहने अभी दो -ढाई महीने भी नही हुए थे कि उसके

पति ''कमल'' की कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई । रोहिणी और उसकी सासु मां साथ में बैठे-बैठे न जाने कैसे बच गयीं । अगर वह अपने पीछे अपनी कोई निशानी भी छोड़ गया होता तब भी उसके परिवार वाले उसके सहारे जी लेते, पर वह भी नहीं। कमल के फूल की ही तरह कोमल और धार्मिक प्रवृत्ति का लड़का था बेचारा । अब उसकी पवित्र आत्मा को शांति प्रदान करने के लिए सास और बहू दोनों, शिव लिंग को जलाभिषेक करने और ब्रह्मा को जल अर्पित करने आती हैं ।

पंडित जी रोहिणी की इस दुखदायी घटना के बारे में अभी बता ही रहे थे कि तभी कुछ श्रद्धालुओं ने मन्दिर में प्रवेश किया और वह उन्हें पूजा करवाने के लिए चले गए और प्रेम रोहिणी की इस दुख भरी घटना को सुन कर उसके पति के प्रति शोक व्यक्त करता हुआ सराय में वापिस चला आया ।

ग्यारह बजे प्रेम का साक्षात्कार होना था, पर वह सब कुछ भूला कर रोहिणी के दुख में डूबा हुआ कमरे में ही बैठा था। रोहिणी के भविष्य की चिंता करते-करते अचानक उसकी दृष्टि दीवार पर लटकी घड़ी पर पड़ी। ग्यारह बज चुके थे। तभी वह बिना कुछ खाए-पीये ही कॉलेज को चला गया। वहां उसने देखा कि कॉलेज के मुख द्वार पर ताला लगा हुआ है । अन्दर झांक कर देखने से उसे कोई भी दिखाई नहीं दिया। तभी उसकी दृष्टि द्वार के भीतर एक कोने में बने अतिथि स्वागत कक्ष के बाहर बैठे सुरक्षा कर्मी पर पड़ी। प्रेम के पुकारने पर वह मुख्य द्वार के पास के छोटे दरवाजे को खोल कर बाहर निकला । जब प्रेम ने उससे उस दिन होने वाले साक्षात्कार के बारे में पूछा तो उसने अपने हाथ में लिए डण्डे से पास की दीवार पर लटके सूचना पट्ट की ओर इशारा करते हुए बताया। ''आज किसी विशेष व्यक्ति की जयंती के उपलक्ष्य में उसके समुदाय के लोगों की मांग पर सरकार ने छुट्टी घोषित की है। कल महीने का द्वितीय शनिवार है और आगे रविवार है । अब साक्षात्कार सोमवार के दिन को होगा। सूचना पट्ट पढ़ लें। जो भी अभियार्थी आए थे, वापिस भेज दिए हैं । पुनः द्वार बन्द करते हुए सुरक्षा कर्मी ने कहा।

प्रेम तो उसी दिन घर को वापिस जाना चाहता था पर रोहिणी को ऐसी स्थिति में देख कर उसने चाहा कि वह एक बार फिर उससे मिल कर उस के दु:ख-दर्द को सांझा करके उसे सान्तवना दे। इसीलिए कॉलेज में अगले दो दिनों के लिए छुट्टियां होने का उसे एक अच्छा बहाना मिल गया और अपने घर वालों को इस बारे में सूचित करने के उपरांत उसने सराय में ही ठहरने का मन बना लिया।

अगले दिन सुबह के समय प्रेम जब मन्दिर की दाहिनी ओर लगे नल में से पानी का लोटा भर कर शिव लिंग पर जलाभिषेक करने के लिए अभी चला ही था कि तभी रोहिणी भी अचानक जल का पात्र भरने वहां आ पहुंची । प्रेम को वहां पर देख कर रोहिणी वहीं रुक गई । तभी प्रेम ने उसके समीप जाकर अपने हृदय से दु:ख व्यक्त करते हुए रोहिणी से पूछा -

रोहिणी! कैसी हो ?

जैसी आप को दिख रही है - रोहिणी ने कहा ।

रोहिणी के मुख से ये शब्द सुनते ही प्रेम अपने आप को संयम में नहीं रख सका और घबराहट के कारण उसे रोहिणी के विवाह वाला वो दिन स्मरण हो आया जिस दिन रोहिणी ने अपनी विदाई के समय में एक सजी-धजी दुल्हन के रूप में उसे अंतिम बार प्यार भरी नजरों से देखा था। भले ही उस समय उसे रोहिणी से अलग होने का दु:ख न हुआ हो, पर आज उसे रोहिणी को एक विधवा स्त्री के रूप में देख कर बहुत दु:ख हो रहा था। उसकी आंखों में आंसू बह रहे थे। तब उसने अपने आंसुओं को पोंछते हुए कहा -

रोहिणी! कल मुझे पंडित जी ने आपके साथ हुई इस अनहोनी घटना के बारे में बताया था। बहुत दु:ख हो रहा है ।

'' मैं क्या करूं प्रेम! विवाह के दो महीनों के अंतराल में जो कलंक मुझे लगना था, वो लग चुका है। आगे न जाने मेरे साथ क्या होगा ? मेरे सास-ससुर और अन्य मुझे कुलच्छनी समझ कर न जाने आपस में क्या-क्या बातें करते होंगे। शायद मेरे भाग्य में विधाता ने यही लिखा था। अब तो जब तक इस देह में प्राण रहेंगे तब तक न जाने मुझे और क्या-क्या दु:ख झेलने पड़ेंगे। अब तो मैं पैरों तले मसली हुई इस सूखी दूब जैसी सिमट चुकी हूं। बार-बार पैरों तले मसले जाने से कल को धूल में परिवर्तित होकर एक दिन भरी बरसात में किसी नाले में बह जाऊंगी। मन्दिर के प्रांगण की पगडण्डी पर लोगों के चलने से उनके पैरों से मसली हुई हरि दूब को सूखे में परिवर्तित देख कर रोहिणी ने अपना दु:ख व्यक्त करते हुए कहा।

नहीं! रोहिणी नहीं। ऐसा न कहें।

सुना है, बारह वर्षों के पश्चात् भी अगर सूखी दूब को एक लोटा जल का मिल जाए तो वह पुनः हरी हो जाती है और फिर से देवी-देवताओं पर चढ़ाने योग्य हो जाती है। रोहिणी के प्रति अपनी संवेदना व प्यार को प्रकट करते हुए उसे हौसला देने के लिए प्रेम ने अपना हाथ उसके सिर के ऊपर रखने के लिए अभी बढ़ाया ही था कि तभी अपने इस प्यार को अपनी धर्म-संस्कृति के विरुद्ध पाकर उसके हाथ कांप गए और रोहिणी को छूने से पहले ही हाथ में लिया जल का लोटा नीचे जमीन पर गिर गया। तभी रोहिणी ने अपनी सासु मां को बाहर की दुकानों से फूल-प्रसाद और पूजा की सामग्री खरीद कर उसे एक थाली में सजाते हुए मन्दिर में जाते देखा। उसे देखते ही रोहिणी भी हाथ में पकड़े पात्र को पानी से भर कर मन्दिर में चली गई।

प्रेम अपने आप में इस भावपूर्ण प्यार पर बहुत शर्मिन्दा हुआ। वह सोचने लगा कि अच्छा हुआ उसके हाथ रोहिणी को छू न पाए, अगर रोहिणी की सासू मां देख लेती तो न जाने वह क्या सोचती। ऐसा सोच कर वह मन्दिर के भीतर नहीं गया और बाहर से ही माथा टेक कर वापिस सराय में चला गया । वह अब भी अपने आप में शर्म अनुभव कर रहा था । फिर सोचने लगा –''मैंने तो यहां दो दिनों के लिए और ठहरना है और रोहिणी तो यहां प्रतिदिन आती है । मैं भले ही उस से बात न कर सकूं पर फिर भी मैं उसे देखे बिना नहीं रह सकता हूं। पंडित जी तो हम दोनों के बारे में जान ही चुके हैं । कहीं ऐसा न हो कि मेरे जाने के पश्चात् रोहिणी को कोई शक की दृष्टि से देखे । और अगर यहां कॉलेज में मेरी नियुक्ति हो जाती है तो कभी–कभार रोहिणी से मिल कर उस का दु:ख–दर्द सांझा कर लिया करूंगा । इसीलिए अब यहां पर ठहरना उचित नहीं''। अपनी इसी सोच के कारण प्रेम उस सराय को छोड़कर कहीं दूसरी सराय में जा ठहरा।

अगले दिन अपनी नित्य पूजा–पद्धति के अनुसार रोहिणी अपनी सासू मां के साथ मन्दिर में पूजा अर्चना करने आ पहुंची। जब वह शिवलिंग को जलाभिषेक कराने के लिए नल से जल का पात्र भरने के लिए अभी पहुंचने ही वाली थी, तो उसने देखा कि मार्ग में जिस स्थान पर पिछले दिन प्रेम के कांपते हाथों से जल से भरा लोटा गिरा था, उस स्थान की सूखी दूब पानी मिलने से एक रात में ही हरी हो गई गयी है । इसे देख कर वह हैरान हो गयी और उसे प्रेम के कहे शब्दों का स्मरण हो आया।

रोहिणी! सूखी दूब को बारह वर्षों के पश्चात् भी अगर एक लोटा जल का मिल जाए तो वह फिर से हरी हो जाती है और तब वह देवी–देवताओं पर चढ़ाने योग्य भी हो जाती है । प्रेम के कहे वो शब्द रोहिणी के दिमाग में बारम्बार गूंजने लगे । प्रेम को देखने के लिए रोहिणी ने चारों तरफ अपनी दृष्टि डाली पर वह उसे कहीं पर भी दिखाई नहीं दिया । फिर उसने पहले से ही अपने आप को भगवान की सेवा में समर्पित किये जाने और ऐसी विकट परिस्थितियों से जूझने के निर्णय अनुसार आगे कुछ भी नहीं सोचा और जल का पात्र भरने के उपरान्त सीधी मन्दिर में चली गई।

सोमवार के दिन प्रेम कॉलेज में साक्षात्कार देने जा पहुंचा। वहां एक खेल के मैदान के एक तरफ स्कूल तो दूसरी तरफ कॉलेज की बड़ी–बड़ी इमारतें थीं । खेल के मैदान की चारों ओर हरे–भरे पौधे और फुलवारियां होने से वहां का वातावरण बहुत ही शोभायमान लग रहा था ।

पिछले तीन दिनों की छुट्टियां होने से दूर–दूर से आए सभी अभ्यर्थी अपनी–अपनी व्यस्तताओं के कारण अपने घरों को वापिस लौट चुके थे । अब केवल दिल्ली क्षेत्र के अभ्यर्थी ही वहां पहुंचे थे । वे सभी कॉलेज प्रिंसिपल के कमरे के बाहर बैंच पर बैठे चपरासी से वार्तालाप कर रहे थे । प्रेम भी जाकर उनमें शामिल हो गया । थोड़ी देर के पश्चात् प्रिंसिपल महोदय के कमरे से घण्टी बजी और चपरासी अन्दर चला गया । वहां से आदेश मिलने पर बाहर आकर उसने सभी अभ्यर्थियों के एडमिट कार्ड और प्रमाण पत्र एकत्रित किये और अन्दर कमरे में जाकर दे आया।

बारी–बारी से सभी अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाने लगा । साक्षात्कार देने के पश्चात् उन्हें यह कहकर वापिस भेजा जा रहा था कि चयन प्रक्रिया पूरी करने के उपरान्त उन्हें बुला लिया जाएगा ।

थोड़ी देर के पश्चात् प्रेम के नाम की आवाज पड़ी और वह कमरे में चला।

गुड आफ्टरनून सर। प्रेम ने सामने बैठे चेयरमेन साहिब से कहा।

गुड आफ्टर नून प्रेम । आइये , बैठिए चेयरमैन साहिब बोले।

थैंक्यू सर । और प्रेम उनके सामने लगी कुर्सी पर बैठ गया।

चेयरमैन साहिब उसके शिक्षा प्रमाण पत्रों को पढ़ने में व्यस्त हो गए । प्रेम बड़ी उत्सुकता से उनकी तरफ देख रहा था कि कब वह उससे कोई प्रश्न करे तो वह उसका उत्तर दे । तभी प्रेम की दृष्टि पास में लगे सोफे पर बैठीं रोहिणी और उसकी सासु मां पर पड़ी । वे दोनों एक टक लगाए उसे देख रहीं थीं। प्रेम से आंखे मिलते ही रोहिणी ने अपनी पलकें नीचे की ओर झुका लीं । तभी चेयरमैन साहिब रोहिणी की सासू मां को बड़ी मैडम के नाम से संबोधित करते हुए प्रेम के शिक्षा प्रमाण पत्रों को एक–एक करके देने लगे और बड़ी मैडम उन प्रमाण पत्रों की जांच करती हुई प्रेम से उसके शहर, स्कूल और विश्वविद्यालय का नाम, पता पूछती हुई रोहिणी को देने लगी।

रोहिणी जो अब तक अभ्यर्थियों के रिकॉर्ड को एक रजिस्टर पर नोट करने का काम करती हुई उन्हें एक फाइल में एकत्रित कर रही थी, प्रेम के प्रमाण पत्रों को हाथ में लेते ही उसके हाथ कांपने लगे । वह रजिस्टर में कुछ भी नहीं लिख सकी और चुप–चाप बैठी रही। प्रेम को अपने सामने देख वह ज्यों–ज्यों अपनी सासू मां के मुख से उसके स्कूल, कॉलेज और शहर का नाम सुनती त्यों ही उसे वहां पर प्रेम के साथ बिताए लम्हों की यादें ताजा होती जाती, जहां पर की उन दोनों ने एक–दूसरे के होने की प्रतिज्ञा ली थी । तभी बड़ी मैडम ने प्रेम से पूछा – आप का विवाह हो गया है ?

नहीं मैडम जी, प्रेम ने उत्तर दिया ।

तभी चेयरमैन साहिब प्रेम से प्रश्नों पर प्रश्न पूछने लगे और वह उनको सही उत्तर देता गया । पास में बैठी रोहिणी सब

कुछ सुन रही थी, जो कि उसके लिए सुन पाना असहनीय था। तभी स्कूल से लंच के समय की घण्टी बजी और बहाने से वह कमरे से बाहर चली गई । प्रेम के मुख से अंतिम प्रश्न का उत्तर मिलते ही बड़ी मैडम ने उसके प्रमाण पत्रों को समेट कर अपने पास रखते हुए कहा --- प्रेम ! आप सभी अभ्यर्थियों के लिए दोपहर के खाने का प्रबंध कैंटीन में किया हुआ है । आप वहां खाना-खाकर दो बजे के पश्चात् यहां आ जाना ।

धन्यवाद, मैडम जी । प्रेम ने कहा। फिर वह कैंटीन की तरफ चला गया।

प्रेम अभी कैंटीन के द्वार तक पहुंचा भी नहीं था कि तभी वहां रास्ते में उसके इन्तजार में खड़े कैंटीन मैनेजर ने उसकी ओर बढ़ते हुए कहा :----

नमस्ते साहिब । सर! आप ही प्रेम हो ?

हां मैं ही प्रेम हूं । प्रेम ने कहा ।

अभी-अभी बड़ी मैडम का फोन आया था। उन्होंने बताया कि आपके खाने का प्रबंध प्रिंसिपल महोदय के अतिथि कक्ष में किया हुआ है । चलो मैं आपको वहां पर छोड़ आता हूं । यह कहकर वह प्रेम को वहां पर ले गया ।

मैनेजर ने अपने एक हाथ से कमरे का द्वार खोला, दूसरे हाथ से प्रेम को भीतर की ओर जाने का इशारा किया और वापिस लौट आया । उस कमरे के अन्दर रोहिणी अपने दोनों बाजुओं की कोहनियों को मेज पर टिका कर हाथों को माथे पर रखे बड़ी उदासी से कुर्सी पर बैठी थी । वह अपने पति के वियोग में तो दुखी थी ही और शायद प्रेम को अपनी नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटकते देख कर भी दुखी हो रही थी।

दरवाजे के खुलने और कमरे में किसी के प्रवेश करने की आवाज सुनते ही रोहिणी की तन्द्रा खुल गयी और अपने आप को संयम में रखते हुए सफेद साड़ी के पल्लू से अपने आंसुओं को पौंछ कर चेतन अवस्था में बैठ गयी । अपना सिर ऊपर की ओर उठाते ही अचानक उसने प्रेम को अपने सामने खड़े देखा। उस समय एक-दूसरे को बंद कमरे में अकेले होने से उन दोनों के होश उड़ गई । फिर प्रेम चुप-चाप से पास में लगे सोफे पर बैठ गया। उन दोनों की निगाहें जो कभी आपस में मिलते ही उनके दिलों में खुशी का माहौल उत्पन्न करती थीं, आज वे आंसुओं से तर होकर एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील बनीं थीं। उस समय उन दोनों की आंखों में भरे आंसुओं से ऐसा वातावरण बन गया था कि मानों सावन के मास में किसी नदी में आई बाढ़ से उसका पानी नदी के कटे हुए दोनों तटों को एक बार दोबारा से छूकर समुद्र में विलीन होने जा रहा हो।

विवाह वाले दिन सुनहरी गोटा जड़ित सितारों वाली लाल साड़ी पहने रोहिणी ने जिस लाल पल्लू को अपने सिर से सरका कर अन्तिम बार प्यार भरी नजरों से प्रेम की तरफ देखा था, उसके स्थान पर आज सफेद साड़ी में लिपटी रोहिणी को सफेद पल्लू से अपने आंसुओं को पोंछते हुए, अपनी ओर बारम्बार देखते हुए प्रेम का हृदय कांप रहा था । तभी उसे रोहिणी के साथ की हुई एक चर्चा का स्मरण हो आया जिसकी याद दिलाते हुए उसने कहा ।

रोहिणी! आपको याद है, एक बार आपने मुझसे क्या कहा था ? ये शब्द सुनते ही रोहिणी ने अपनी नजरें नीचे की ओर झुका लीं । सिवाय इसके कि और कोई कमरे में प्रवेश करे, प्रेम ने उसके बिना पूछे ही उन शब्दों को दोहरा दिया। " हवा तो कभी भी आ सकती है प्रेम, और वह अपने एक ही झोंके से कच्चे-पक्के फलों को धरती पर गिरा भी सकती है। उन को संभालना किसी भी बगीचे के माली के बस की बात नहीं। हां, अगर किसी वृक्ष से हवा के झोंके से जमीन पर गिरे हुए फल को उसका माली समय पर उठा ले तो वह फल न तो खराब होता है और न ही व्यर्थ जाता है । उस में वही रस, गंध और स्वाद रहता है, जो एक वृक्ष के हाथ से तोड़े पके हुए फल में होता है।" रोहिणी अपने-आप को संभालते हुए प्रेम से कुछ कहने ही लगी थी कि चेयरमैन साहिब और बड़ी मैडम को कमरे में प्रवेश करते देख उसकी जिह्वा रुक गयी और प्रेम विस्मित होकर किसी गहरी सोच में पड़ गया । तभी उनके साथ आई दो औरतों ने उनके लिए खाना लगाया और बाहर चली गयीं।

क्या सोच रहे हो प्रेम ? खाना लगा दिया है, खाना खा लो।

जी मैडम जी।

वे खाना- खाकर अभी हाथ-धोने उठे ही थे कि उन औरतों ने आकर बर्तन बगैरा उठाए और स्वीट-डिश की प्लेटें लगाकर वापिस चली गयीं । उनके बाहर निकलते ही बड़ी मैडम घुटे हुए स्वर से बोली : -

बेटा प्रेम !" हमने न जाने अपने पिछले जन्म में ऐसे कौन से बुरे कर्म किए थे जिनका परिणाम आज हमें भुगताना पड़ रहा है । हमारे बेटे, कमल के साथ अगर ऐसी दुर्घटना नहीं हुई होती तो हमने ये दिन क्यों देखने थे। पर क्या करें? हम मजबूर है । हम दोनों पति-पत्नी ने आज तक अपने कड़े परिश्रम और लगन से यहां ये जो कुछ भी कमा कर रखा है, वे आज हमें ही खरोंच-खरोंच कर खा रहा है। इस सम्पत्ति को संभालने वाला तो अब परलोक में चला गया है । हम तो अब एक ऐसी शाम के समय की धूप की तरह है, जो न जाने कब चली जाए। पर कल को हमारी इस नौजवान बहू का क्या होगा। न जाने यह समाज इसे ढंग से जीने भी देगा या नहीं"। अपने बेटे को याद करते-करते उसकी आंखें आंसुओं से भर आयीं।

रोहिणी को तो अब अपने जीवन का एक लम्बा सफर तय करना है .. ''मुझे बड़ी मैडम ने आपके बारे में जो कुछ भी बताया है उसके सशक्त गवाह आप का शहर , स्कूल, विश्वविद्यालय और प्रमाण पत्र हैं। किसी से क्या पूछना। आप और रोहिणी तो आपस में शुरू से ही परिचित हो । हम आपको क्या सलाह दे सकते हैं । मेरी तो आपसे बस एक ही विनती है कि आप अगर रोहिणी को अपना लें तो अच्छा होगा''। स्वीट-डिश की प्लेटे प्रेम की तरफ बढ़ाते हुए चेयरमैन साहिब ने कहा ।

एक तो पुत्र वियोग और दूसरा अपनी नौजवान विधवा बहू के भविष्य की चिंता करते एक शिक्षाविद और शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति, अपने पति को प्रेम से एक प्रकार की भीख मांगते देख, बड़ी मैडम सहन नहीं कर सकी और वह बात बदलते हुए बोली : -

प्रेम !''मैंने तो मन्दिर में उसी दिन आप दोनों की आपस में मिलती निगाहों से पता लगा लिया था कि यह वही लड़का है, जिसे एक दिन मैंने बाजार में कपड़े के शो-रूम के बाहर रोहिणी से बातें करते देखा था'' । अगर आप दोनों सहमत हों तो क्यों न आप दोनों का आपस में ही विवाह करवा दिया जाए । आप तो जानते ही हैं कि अब रोहिणी का क्या होगा? हमें तो अब कहीं न कहीं इसका विवाह करवाना ही पड़ेगा और यह स्कूल-कॉलेज वगैरा-वगैरा जो हमने आज तक संजो कर रखे है, आगे इन्हें भी तो कोई संभालने वाला चाहिए। हम दोनों पति-पत्नी दिन-रात यही सोचते रहते हैं कि अगर कोई अच्छा सा पढ़ा-लिखा लड़का मिल जाए तो उससे रोहिणी का विवाह करवा दें । हमें आप से अच्छा लड़का और कहां मिल सकता है और सबसे बड़ी बात यह कि आप दोनों पहले से ही आपस में परिचित हो । अगर आप दोनों सहमत हो तो हम आपके घरवालों से बात कर लेंगे'' ।

आप ठीक कह रहे है, मै भी रोहिणी को इस स्थिति में नहीं देख सकता हूं । आगे आप रोहिणी से पूछ लें।

अपने स्वर्गीय पति की याद में पछतावा करती रोहिणी चुप बैठी थी। वह एक-दम से न तो स्वयं में कोई निर्णय ले पाने में समर्थ थी और न ही उनके द्वारा लिए गए निर्णय से। उस समय तो उसकी आत्मा पछतावे के साथ भगवान से प्रार्थना करती हुई केवल यही शिकायत कर रही थी कि आज तक जो कुछ उसके साथ हुआ है, ऐसा किसी के साथ न हो । पर अब उसके आगे एक लम्बा पथ शेष पड़ा था जिसे तय करने के लिए उसे एक साथी की आवश्यकता थी और सोच भी रही थी कि जो कुछ उसके सास-ससुर कर रहे हैं, वही उचित है। इसीलिए उसने अपनी इन विकट परिस्थितियों से समझौता करते हुए और प्रेम के साथ अपने बिताए समय को स्मरण करते हुए एक बार वेदना से भरी पलकों से उसकी ओर देखा और अपने आंसुओं को पोंछ कर रोती हुई, मां ... मां .. कर के पुकारती अपनी सासू मां के सीने से लिपट गई । शायद उस समय उसे अपनी मां के कहे वो शब्द याद आ रहे होगें, जिस दिन उसने कहा था, ''यह लड़की तो अब हमारे मरने के उपरान्त ही अपना विवाह करेगी''। तब रोहिणी के प्रति संवेदनशील बने प्रेम से भी नहीं रहा गया और उसने रोहिणी के ससुर जी के आगे दोनों हाथ जोड़ कर अपना सिर नीचे की ओर झुकाते हुए अपनी सहमति प्रकट कर दी । तभी उन दोनों की सहमति का अनुभव करते हुए रोहिणी के ससुर ने उन्हें हाथों से पकड़ कर उठाया और अपनी ओर खींच कर बाहों में भर लिया। इस घड़ी में उन तीनों के परस्पर मिलन से जब रोहिणी के शरीर का बायां हिस्सा प्रेम के शरीर से छुआ तो उन दोनों के हृदय में एक अनोखे से प्यार की अनुभूति हुई और रोहिणी को प्रेम से बाजार में कही उन बातों का स्मरण हो आया, ''आप किसी ऐसी अच्छी लड़की से विवाह करना कि आपकी जोड़ी भविष्य में पूरे समाज के लिए एक आदर्श और उदाहरण बन जाए''।

उधर बी.एड. कॉलेज के छात्रों की परीक्षाएं शुरू होने में कुछ ही दिन शेष बचे थे । इसी कारण उन्होंने प्रेम को पन्द्रह - बीस दिनों के लिए वहीं पर रुकने को कहा। उनकी इस मजबूरी को समझ कर प्रेम मान गया। उसने अपने घर वालों को फोन पर सूचना दे दी कि वह वहां अपने किसी मित्र के पास ठहरा है और रिजल्ट निकलने के पश्चात् ही घर आएगा। उसके माता-पिता ने सोचा कि घर आकर भी तो उसने बोर ही होना है, दिल्ली में अपने मित्र के साथ रह कर उसका मन तो लगा रहेगा और वे उसकी इस बात से सहमत हो गये ।

कॉलेज की परीक्षाएं समाप्त होते ही रोहिणी के सास-ससुर, माता-पिता रोहिणी और प्रेम को साथ लेकर प्रेम के घर जा पहुंचे । घर में ताला लगा हुआ था। प्रेम को उन लोगों के साथ अलग-अलग गाड़ियों में आते देख आस-पड़ोस के सभी लोग एकदम से उनके पास आ पहुंचे । प्रेम को उन लोगों से अपने माता-पिता के बारे में पूछने पर एक बुजुर्ग व्यक्ति ने बताया, '' आज दोपहर के समय विधान सभा निर्वाचन का परिणाम निकलते ही जब साधु राम को पता चला कि ''निर्मल पार्टी'' की करारी हार हुई है और हमारे पूर्व विधायक भी चुनाव हार गए है तो यह समाचार सुनते ही उन्हें दिल का दौरा पड़ गया। थोड़ी देर पहले ही ये लोग उन्हें अस्पताल छोड़ कर आए हैं। भगवान की कृपा यह रही कि समय पर अस्पताल पहुंचा दिया गया। अब बिल्कुल ठीक हैं, चिन्ता करने की जरूरत नहीं। सुनने में आया है कि आप को सरकारी नौकरी दिलवाने के लिए साधु राम ने कार्यकर्ताओं को साथ लेकर महीना भर टैक्सी घुमाई थी, शायद उन्हें यही गम लगा हो।

यह बात सुनते ही प्रेम अस्पताल जा पहुंचा। प्रेम को अचानक वहां आते देख, उसके पिता के बिस्तर के पास बैठी उसकी माता ने कहा- वो देखो! प्रेम आ गया है। अपनी पत्नी के मुख से ये शब्द सुनते ही प्रेम के पिता एक दम से बिस्तर से उठ कर बैठ गए और बोले -आ गए प्रेम! आपकी नौकरी का क्या बना ?

''मैं आ गया हूं पिता जी, मेरी पक्की नौकरी लग गयी है और यह देखो- मैं रोहिणी को भी साथ ले आया हूं। अब आपको चिंता करने की कोई जरूरत नहीं। अब मेरा विवाह धूमधाम से कर लें। तभी रोहिणी के ससुर ने रोहिणी का हाथ पकड़ कर प्रेम के हाथ में देते हुए प्रेम के पिता से कहा- मैं आपकी अमानत आपको सौंपता हूं।

अगले दिन समाचार पत्र में प्रेम की कविता छपी :-

किस्मत इंसान से उसके कर्मों का खेल खिलाती है
और यह दुनिया उसे ठुकराती है,
अगर बारह वर्षों पश्चात् भी एक लोटा पानी का मिल जाए, तो सूखी दूब भी हरी हो जाती है।

वार्ड न : 5, मिशन गली कांगड़ा (भवन) डाक., तह. व जिला कांगड़ा, हि.प्र. -176001,
मो.- 94188-64527

अनमोल वचन

◈ सब्र कोई कमजोरी नहीं होती, ये वो ताकत है जो सबमें नहीं होती।
◈ बुराई को अक्सर ये भ्रम रहता है कि वो अच्छाई पर जीत हासिल कर लेगी।
◈ समय बहुत कीमती होता है, करोड़ों रुपये खर्च करके भी एक नया क्षण खरीदा नहीं जा सकता।

- संतवाणी

कविता

मजदूर

✍ रवि कुमार सांख्यान

आओ अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनायें।
दिवस विशेष की यादें दोहरायें,
18वीं सदी तक पुरजोर शोषण,
कायदे कानून न भरपेट पोषण।
1 मई सन् 1886 को शिकागो शहर में हुआ आयोजन,
आशा की किरण में दिखता प्रयोजन,
15 घंटे दैनिक टाइम को 8 घंटे किया जाये,
साप्ताहिक छुट्टी का ऐलान किया जाये।
उठी हक की बुलन्द आवाज,
1 मई, 1923 भारत में दिवस आगाज।
अब 80 से ज्यादा देश यह पर्व अवकाश से मनाने,

इनके सम्मान, गौरव की गाथा सुनाते,
मजबूर नहीं मजदूर कहलाते,
फौलादी इरादे खून पसीना बहाते,
पथरीली मिट्टी का भी सोना बनाते।
विघ्न बाधा करते पल में दूर,
दुनिया कहती श्रमिक मजदूर,
श्रममेव जयते का नारा लगाते,
बेनाम उनके काम से मशहूर हो जाते,
मेहनतकश दो जून कमाते।

बस्ता किताबें पीछे छूटी,
न जाने क्यों किस्मत फूटी,
भूख गरीबी ने किया मजबूर,
आठ अजूबे बना हुआ मजदूर,
मेरी व्यथा क्या सुनोगे हुजूर,
क्या क्रिसमिस, ईद, दिवाली,
अपनी जीवटता में दुनिया काली।
उद्योगों का मैं कंगूरे की पत्थर,
पर मैं न चर्चा में आऊं,
पर्दे पर किरदार छा गये,
पर्दे पीछे से वाहवाही कहां से पाऊं,
अपनी छोड़, परिवार यातना कैसे गिनाऊं,
फुटपाथ पर ममता की छांव में,
लोरी सुन जच्चा-बच्चा मीठी नींद सुलाऊं।
आ रहा मशीनी युग,
श्रम की लौ जाये न बूझ
चैन कहां से पाऊं।
मैं मजदूर धरती पुत्र,
काम देख हर्षाऊं।
जब भी होगा विकास गाथा गायन,
मेरी चर्चा पायेगा समुचित स्थान,
ऐसा सोच के महान बन जाऊं,
जीवटता के दु:खों की गठरी,
उठा के मंद-मंद मुस्काऊं।

गांव मैहरी डा. नाल्टी तह. घुमारवीं हि .प्र .,
मोबाइल 7018528863

कहानी

विश्वासघात

✍ राजेन्द्र कुमार सिंह

रमेश के घर में घुसते ही मीनाक्षी का मन अंदर से दरक गया। हालांकि रमेश उसका पति था।परंतु जब से मीनाक्षी को लगा कि उसके प्रति अपने कर्तव्यों और दायित्वों का पूर्ण रुपेण निर्वाह नहीं कर रहे है तब से मीनाक्षी भी भर मुंह बात नहीं करती। रात्रि का समय आने के साथ ही भारी थकान व बदन का पोर-पोर टूटने का नियमित जुमला सुनना पड़ता है।तब मीनाक्षी को ऐसा महसूस होता है कि कहीं दाल में जरूर कुछ काला है।जब वह पहली बार इस घर में आई थी उसके प्रति एक नई उमंग उत्साह का दरिया था। बार-बार वह उसमें डूबती उतराती। और जब उसके पिता विदाई कराकर अपने घर लेकर गए तो रमेश ने कहा था-' मीनाक्षी कैसे रह पाऊंगा मैं ।'

इस पर मीनाक्षी ने कहा था-'यही बात तो इधर भी है। जितनी तड़प तुम्हारे अंदर है उतना ही मेरे अंदर है। परन्तु ये तो दुनियादारी है।थोड़े समय की बात है। माह-दो-माह सरकने में कितना टाइम लगता है भला।

मीनाक्षी की अपनत्व भरी बातों से रमेश को काफी सुकून मिला था। दो महीने बाद जब मीनाक्षी इस घर में दूसरी बार आई थी तो उसके प्रति रमेश ने कोई खास दिलचस्पी व रुचि नहीं दिखाई। न आने की खुशी का इजहार किया और न ही बिछुड़ने के गम की परछाइयां थी। दांपत्य जीवन सुखमय खुशहाल व समृद्ध तभी होता है जब तन और मन दोनों तृप्त हो। आज उसे पंद्रह दिन आए हुए हो गए हैं परन्तु एक दिन भी पति का सुख नसीब नहीं हुआ।

'क्या सोच रही हो मीनाक्षी।' रमेश रटा रटाया वाक्य बोला।

' कुछ नहीं।' वह रूखेपन से बोली। उसकी बातों में तनिक भी अपनत्व व स्नेह का भाव या रस नहीं था।जो रमेश को अपनी ओर आकृष्ट कर सके। क्योंकि यह जुमला इन पंद्रह दिनों में कई बार आजमा चुकी है। परंतु कभी भी संतोषजनक फल नहीं मिला। उसने दूसरा रुख अख्तियार कर लिया ताकि उसका पति कुरेदे और वह इतने दिनों का हिसाब मांगे।

'उदास हो।' रमेश तनिक मुस्कुराते हुए बोला-'मैं सब समझता हूं। मीनाक्षी तुमको वह सुख नहीं मिल रहा है जो हर पत्नी अपने पति से अपेक्षा रहती हैं।'

रमेश के इतना कहते ही मीनाक्षी को जैसे छेड़ने का एक अवसर मिल गया। वह बोली- 'एक पर आश्रित रहते तब न!'

'मीनाक्षी तुम होश में तो हो।' रमेश को इतना कहते ही अबकी बार मीनाक्षी के सब्र का पैमाना सीमाओं के बांध तोड़कर बाहर आ गया- 'तुम मर्द-मानुष एक ही थाली के चट्टे बट्टे हो।'

रमेश भौंचक्का हो टुकुर-टुकुर मीनाक्षी का चेहरा देखने लगा था। काफी क्षण के पश्चात बोला- 'तुम सरासर लांछन लगा रही हो मुझ पर।'

'हकीकत को लांछन में क्यों बदल रहे हो।' मीनाक्षी का तेवर उत्तेजित होकर तीखेपन में बदल गया- 'आधी रात गुजरने के बाद घर आते हो। कहां रहते हो इतनी रात तक। कौन सौत है वह?'

अभी मीनाक्षी कुछ और कहती इसके पहले ही रमेश का हाथ हवा में लहराया और झटके के साथ तड़ाक के साथ मीनाक्षी के गाल पर पड़कर वापस लौट आया।

मीनाक्षी इस स्थिति के लिए तैयार नहीं थी। थप्पड़ लगते ही वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ी।

'ना समझ कहीं की।रमेश गुर्राया-' बस सिर्फ अपना ही देखती हो। दूसरे के ऊपर क्या बीत रही है इसका तनिक भी गम नहीं तुमको। तुम ये पूछती आखिर मुझसे उपेक्षितों की तरह क्यों पेश आ रहे हो? क्या कारण है ? तो मैं मानता कि भीतर से जितना मैं दु:खी हूं उतना तुम भी दु:खी हो।पर इंसान को गलत रास्ते ही अधिक सुझते हैं।'

मीनाक्षी तब तक उठकर सहमी सिकुड़ी खड़ी हो गई थी। हिचकियों का दौर अपने चरम पर था। चेहरे पर पश्चाताप की परछाइयां खींच गई थी। अभी उसने बोलने के लिए मुंह खोला ही था कि रमेश फिर शुरू हो गया- 'हृदय के अंतरण की गहराइयों में जो बात खलबली मचा रही थी। जुबान पर आ ही गई। इतना कह रमेश वापस जाने के लिए मुड़ा ही था कि लालटेन की मद्धिम रोशनी में फर्श पर खून का धब्बा देख सहम गया। उसने नजरें उठाकर मीनाक्षी को देखा। सर फटा देखकर पूर्व की बातें भूल, उसने उसके जख्मों पर हाथ रख दिया था।

मीनाक्षी खामोश तब तक पूर्णरूपेण होश में आ गई थी। उसने अपनी जेब से रुमाल निकालकर मीनाक्षी के सर पर बांध दिया और दराज से मरहम ले आने दूसरे कमरे की ओर दौड़ा। मरहम लेकर आते ही उसने जख्म पर से रूमाल हटाकर मरहम लगा दिया।

मीनाक्षी की अपनत्व भरी बातों से रमेश को काफी सुकून मिला था। दो महीने बाद जब मीनाक्षी इस घर में दूसरी बार आई थी तो उसके प्रति रमेश ने कोई खास दिलचस्पी व रुचि नहीं दिखाई। न आने की खुशी का इजहार किया और न ही बिछुड़ने के गम की परछाइयां थी।

मीनाक्षी खामोश दृष्टि से रमेश के चेहरे को निरंतर पढ़ती रही। वह मन-ही-मन सोचने लगी। क्या उसका पति उसे छोड़कर किसी दूसरे के साथ रंगरलियां मना सकता है। जख्मों को सहला रहे हाथों में कितना प्यार, अपनत्व व स्नेह भरा था। जब रमेश ने मरहम लगाकर हाथ हटाया तो मीनाक्षी ने उसके हाथों को पकड़कर चूम लिया था। आंखों में ढेर सारे पश्चाताप का जो भाव छिपा था वह शनै-शनै अश्कों के रूप में ढलकर आंखों की राह से बहने लगा था। मुझे माफ कर दीजिए।

रमेश ने स्वच्छंद हंसी हंसते हुए कहा- 'तन का मिलन तभी संभव होता है जब मन तनाव रहित हो। मैं एक ऐसी मुसीबत में फंस गया हूं खाने-पीने तक की सुध नहीं।'

मीनाक्षी ने ढांढस बंधाया। मुसीबतों का सामना डटकर करना चाहिए। भागते फिरते रहने से यदि समाधान हो जाता तो हर कोई यही रास्ता अख्तियार करता।'

रमेश अपलक मीनाक्षी को देखता रहा। उसे देखकर कभी ऐसा नहीं लगा कि थोड़ी देर पहले इस कमरे का वातावरण कितना तनावग्रस्त था।

रमेश बोला- 'भारी मुसीबत सामने आ पड़ी है। मेरे दफ्तर में मेरे हाथों से तकरीबन पचास हजार रुपये का गबन हो गया है। फाइनेंस कंपनी में हूं न पैसे का कारोबार तो होता ही रहता है। भूलवश किसी को अधिक पैसे दे दिए हो।

'तब?' मीनाक्षी ने बात आगे बढ़ाई।

मेरे पास अब कोई फंड भी नहीं। सारे फंड व बैंक में जमा रुपए बहन की शादी में स्वाहा हो गया और यहां पचास हजार की बात है।पास में दस रुपए भी नहीं।'

'तो मैं बाबूजी से पचास हजार ले लूं। सहूलियत अनुसार बाद में लौटा देंगे।'

नहीं मीनाक्षी। 'रमेश ने चेताया' 'एक तो पहले से ही बाबूजी का मुझ पर कितना उधार चढ़ा हुआ है। जुबान कैसे खोलोगी तुम उनके पास?'

'वह सब मुझ पर छोड़ दीजिए, मीनाक्षी ने कहा'। हम दो बहनों के सिवा कौन है उनका। सारी संपति तो हम दोनों बहनों की ही है न?'

खैर रमेश गंभीर हो गया- 'तुम्हारी छोटी बहन आरती

के पति का क्या नाम है...हां आतिश। वह तो बड़ा ही कांइया स्वभाव का लगता है। मुझसे भी ढ़ग से बात नहीं करता। कैसे आरती झेलती है उसको। लगता है बाबूजी को नींबू की तरह निचोड़ लेगा। अभी एक सप्ताह पहले दुकान खोलने के बहाने बाबू जी से कुछ पैसे उधार ले गया है। जबकि उसको दुकान वगैरह कुछ खोलना नहीं है।'

'झूठ से तो मुझे खासी नफरत है।' मीनाक्षी तमतमा गई –'अच्छा कल जाती हूं बाबूजी के पास।'

'ठीक है जैसी तुम्हारी मर्जी।' रमेश बोला– 'अब मन कुछ हल्का हो गया है। रात काफी बीत चुकी है। चलो दो–चार कौर खा लेते हैं। वैसे मेरी तो तनिक भी खाने की इच्छा नहीं थी। परंतु तुम्हारी बातों से मुझे काफी हिम्मत बंधी है और दिल को चैन व सुकून नसीब हुआ है। सच मीनाक्षी ऐसी पत्नी किस्मत वालों को ही नसीब होती है।'

'धत!' इतना कह मीनाक्षी मुस्कुराती हुई दोगुने उत्साह से रसोई में समा गई थी। खाना खाकर सोते वक्त तक रात्रि के बारह बज गए थे ।आज रमेश भरपूर नींद सोया। मीनाक्षी भी आज पंद्रह दिनों से तनावग्रस्त थी और उसका प्रतिफल ज्वालामुखी के रूप में उसके सीने में उबल रहा था। धुआं रहित आग अंदर –ही–अंदर सुलग रही थी। उसकी तपीश आज शांत हो गई थी। और वह दोनों एक दूसरे की बाहों में समाए चैन की नींद सो रहे थे।

सुबह होते ही रमेश का बदन बुखार से गर्म तवे की तरह दहक रहा था।दर्द से बदन का पोर–पोर पुट रहा था।

मीनाक्षी रसोई के कार्यों से निवृत्त होकर रमेश के पास आ गई थी। माथे पर हाथ रखा बुखार था। वह समय न गंवाते हुए चौमुहाने पर डॉ. लाल के चेंबर की ओर मुड़ गई।

इधर रमेश बिस्तर से उठकर दराज से बुखार की दवा निकाली और पानी के साथ गटक कर वापस बिस्तर पर आ गया। घंटे भर के उपरांत रमेश का बुखार उड़न छू हो गया था। उसने कमरे से निकलकर पड़ोस के घर से अपने दोस्तों को फोन करके बुला लिया था।

मीनाक्षी के घर आते तो दिन का सूरज सर पे सवार होकर आग का गोला बरसाने लगा था। मीनाक्षी अकेले ही घर आ रही थी। क्योंकि मीनाक्षी जब डॉ. लाल के पास पहुंची थी उस समय उनके पास रोगियों की लंबी कतार थी।

डॉक्टर लाल ने मीनाक्षी के घर का पता लिखकर काम से निबटते ही आने की इतला देकर उसको वापस भेज दिया।

मीनाक्षी को जीने की सीढ़ियां चढ़ते वक्त रमेश का प्रफुल्लित स्वर उसके कानों से टकराया। वह काठ की तरह वहीं खड़ी हो गई।

रमेश अपने दोस्त सुरेश और कामेश से पूछ रहा था– 'यार कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। एक पखवाड़ा किस तरह काटा वह मैं ही जानता हूं। कलाकार वही सफल होता है जब चेहरे पर अभिनय के मुताबिक भाव लाता हो। सच यार मेरा अभिनय तो लाजवाब था। मेरी पत्नी बड़ी ही नेक विश्वासी है। मेरी किसी भी बात पर विश्वास कर लेती है।

इधर मीनाक्षी दबे पांव मुख्य दरवाजे तक आ गई थी। रमेश कह रहा था– 'यार मेरी पत्नी तो सोने का अंडा देने वाली ऐसी मुर्गी है जो रोजाना तो नहीं पर वक्त पड़ने पर तो न्यारा–व्यारा कर देती है। बेचारी डॉ. लाल के पास गई है। उसे मालूम नहीं कि बुखार की दवा तो घर में मौजूद है।'

इस पर सुरेश बोला–'बेचारी को नाहक धूप में दौड़ा दिया। खैर, छोड़ो पैसा कब तक लेकर आने वाली है।'

आ जाएगी तो कल लेकर आ जाएगी रमेश बोला– 'कितनी नासमझ है। कह दिया मुझसे कुछ पैसों का गबन हो गया।'

रमेश के इतना कहते ही कमरे में सम्मिलित ठहाका गूंज गया।

मीनाक्षी कुछ जवाब तलब किए बिना वापस मुड़ गई थी। क्योंकि उस समय वह कोई ठोस निर्णय लेने की स्थिति में नहीं थी। क्योंकि उसके विश्वास पर कोई और नहीं स्वयं उसके पति ने घात किया है। काश! वह रमेश को अच्छी तरह अपनी कसौटी के मापदंड पर गहराई से परखी होती तो ये नौबत नहीं आती। वह पहले ही वापस लौट जाती। जिंदगी की डगर पर गलत जगह कदम पड़ गया था। जिस पेड़ की अपनी छांव नहीं वह दूसरे को क्या छांव प्रदान करेगा।

फिर भी लौटते वक्त उसने इतना निर्णय तो जरूर ले लिया था कि जो घात उसके साथ हुआ है अब वह अपने पिता के साथ नहीं कर सकती।

मीनाक्षी को गए काफी वक्त हो गया था। इसलिए रमेश व उसके साथी कमरे से जैसे ही बाहर निकले सामने के लेटर बॉक्स पर मीनाक्षी के हाथों लिखा ताजा मरीन पर्चा देख रमेश के हाथ–पांव फूल गए।

रमेश ने जिस कुल्हाड़ी से वार किया था उस वार से वह खुद घायल हो गया। जिस विश्वास पर आघात हुआ हो अब जिंदगी की बाकी रात काटना मुश्किल लग रहा था मीनाक्षी को। उसका लौटना असंभव ही नहीं नामुमकिन भी था।

लिली आर्केड फ्लैट नं–101, मेट्रो जोन बस स्टैंड महाजन हास्पिटल समोर, नाशिक –422009, महाराष्ट्र

अशोक दर्द की कविताएं

पहाड़

मेरे पहाड़ में
उगते हैं आज भी प्रेम के फूल,
और घासनियों पर उगती है सौहार्द की दूब;
घाटियां गूंथती हैं,
छलछलाती नदियों की मालाएं ;
धूड़ूबाबा की तरह नाचते झरने,
गाते हैं रान्झु फुलमू, कुंजू - चंचलो और
सुन्नी - भन्कू के प्रेमगीत,
यहां लोग दौड़ते नहीं,
सिर्फ सीना ऊंचा कर चलते हैं,
यहां आज भी घर,
घर ही हैं;
लोगों ने इन्हें मकानों में नहीं बदला है;
मेरे पहाड़ में कोई लापता नहीं होता,
दूर-दूर तक खबर रहती है उसके होने या न होने की;
आज भी यहां कुछ अनछुए रास्ते हैं
जिन पर सिर्फ देवता ही विचरते हैं,
किसान आज भी सज्जन- मित्र पछे-परौहने भिखु-भंगालु
और चिड़ुओं-पंखेरुओं के नाम कुछ दाने अपने खेतों में,
जरूर बीजते हैं;
बूढ़ी ताई ने परंपराओं की पोटली आज भी संभाल कर
रखी है,
आज भी सत्यम-शिवम-सुन्दरम का वास है
मेरे पहाड़ में ......

युग परिवर्तन

अब लड़कियां
कोई मूक प्राणी नहीं होतीं
जो एक खूंटे से खोलकर
दूसरे खूंटे से बांध दी जाएं
और कोई वस्तु भी नहीं होतीं
जो दान में किसी को भी
दे दी जाएं।

मां बाप का अस्तित्व
इनके अस्तित्व में इस तरह
घुला-मिला होता है
जिसे किसी भी प्रयोगशाला में
अलग-अलग नहीं किया जा सकता।

लड़की को प्रणय बंधन में बांधना
मोहब्बत की नई दुनिया को
सौंपना होता है
यहां उसे दो घरों की
मोहब्बत भी मिलती और जिम्मेदारी भी।

स्थान और नाम बदलने से किसी का
वजूद गुम नहीं होता
रगों में दौड़ता लहू
हमेशा इसकी गवाही देता है।

लड़कियां फूलों की टोकरी
नहीं होती
जो तोड़कर हार बनाकर
मुरझाने पर पानी में बहा दी जाएं।

लड़कियां तो कलेजे का टुकड़ा होती हैं
जिसे खुद से जुदा कर पाना
मुश्किल ही नहीं नामुमकिन होता है।

प्रणय बंधन के बाद
लड़कियों के दो घर होते हैं
'लड़कियों का अपना कोई घर नहीं होता'
युग ने इस दकियानूसी सोच को
खारिज कर दिया है।

चिड़ियां चहचहाती हुई ही
अच्छी लगती हैं
दुआ करो
चिड़ियां किसी भी आंगन की हों
बस हमेशा चहचहाती रहें॥

गांव घट, डाकघर शेरपुर, तहसील डलहौजी,
जिला चंबा, हिमाचल प्रदेश 176306

व्यंग्य

हम से बढ़कर कौन!

✍ हरीश कुमार 'अमित'

कवि 'विशेष' का असली नाम तो खटपट लाल था, जिसे वे के. पी. लाल के पर्दे में छुपाए रखते थे, लेकिन जब से उन्हें लिखने का 'रोग' लगा, उन्होंने अपना उपनाम 'विशेष' रख लिया। यह उपनाम धारण करने का कारण यह था कि उन्हें यह लगता था कि दूसरे लेखक लोग साधारण हैं और खुद वे विशेष हैं। मगर साहित्य की दुनिया ने जब उनको तिनका-भर घास भी नहीं डाली तो उन्होंने खुद को कवि 'विशेष' के नाम से फिर से बाजार में उतार दिया मतलब 'री-लॉंच' कर दिया। अपने उपनाम से पहले कवि शब्द उन्होंने इसलिए जोड़ दिया था ताकि भले ही उन्हें कवि न माना जाए, पर कम-से-कम पुकारा तो जाए।

आज इतवार की सुबह कवि 'विशेष' जागे, तो उन्हें घर के दूसरे कमरे में चल रहे टीवी पर आ रही खबरों की आवाज सुनाई दी। टीवी की एक ब्रेकिंग न्यूज यह थी कि एक गधा खड्डे में गिर गया था और बड़े प्रयत्नों के बाद उसे बाहर निकाला जा सका। खबर सुनते ही कवि जी का मन द्रवित हो उठा। उनके मन में करुणा का समंदर हिलोरें लेने लगा। उन्होंने झट-से अपना मोबाइल फोन उठाया और दस मिनटों में ही इस खबर से प्रेरित होकर एक अतुकांत कविता का 'सृजन' कर डाला। फिर बिना एक भी पल गंवाए अपनी इस ताजा 'रचना' को सोशल मीडिया पर चस्पां कर दिया।

कवि 'विशेष' की कविता के सोशल मीडिया पर 'रिलीज' होने की देर थी कि लाइक्स और वाहवाही की बारिशें होने लगीं। यह सब देख-देखकर कवि 'विशेष' मानो आसमान में उड़ने लगे।

उन्होंने लाइक्स और वाहवाही के संदेशों का जवाब देना शुरू किया तो बस इस काम में डूब ही गए। पत्नी जी के बार-बार कहने के बाद उन्होंने कम-से-कम समय लगाकर मुंह-हाथ धोने और नाश्ता निगलने की रस्म-अदायगी की।

नाश्ते को हलक से उतारते वक्त भी मोबाइल फोन उनके हाथ में ही था और उनका ध्यान नाश्ते में कम और मोबाइल में ज्यादा रहा।

इतवार का वह पूरा दिन कवि 'विशेष' ने ऐसे ही बिताया। सारा दिन मोबाइल उनके हाथ में रहा। मोबाइल की बैटरी चार्ज करते समय भी वे मोबाइलमान ही रहे। लाइक्स और वाहवाही के संदेश आने कम हो गए तो भी वे फोन की स्क्रीन की ओर देखने में मगन रहे। जैसे ही किसी नए लाइक या वाहवाही के संदेश के दर्शन होते, वे लपककर उसका जवाब देने का कार्यक्रम संपन्न करने लगते।

शाम होते-होते कवि 'विशेष' की 'रचना' पर लाइक्स वगैरह आने का सिलसिला थम गया। वजह इसकी यही रही होगी कि तब तक बहुत-सी दूसरी रचनाएं सोशल मीडिया के प्लेटफार्मों पर अवतरित हो चुकी थीं। कवि 'विशेष' ने लेकिन उम्मीद का दामन नहीं छोड़ा और मोबाइल की स्क्रीन पर नजरें गड़ाए रहे। आखिर रात होने तक जब उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि अब लाइक्स और वाहवाही की कोई और बूंद नहीं बरसेगी तो उन्होंने इस रचना को भूतपूर्व का दर्जा दे दिया। इसके साथ ही उन्होंने अपनी अगली रचना के बारे में चिंतन-मनन करना शुरू कर दिया जिसे लिखकर अगली सुबह तक वे सोशल मीडिया को अर्पित कर दें और फिर उस पर लाइक्स और वाहवाही के गट्ठर बांधे सकें। अगले दिन बेशक उन्हें दफ्तर जाकर कुर्सी तोड़नी थी, लेकिन दफ्तर की फाइलें

काली-पीली करते हुए अपने लिए सोशल मीडिया पर आए लाइक्स वगैरह का अध्ययन करने और उन पर अपनी त्वरित प्रतिक्रिया देने के उद्योग को चलाए रखने का हुनर उन्हें खूब आता था।

अलबत्ता आज सुबह से अपनी 'रचना' पर मिले बीसियों लाइक्स और वाहवाही के संदेशों को देख-पढ़कर कवि 'विशेष' फूलकर कुप्पा हुए जा रहे थे और अपने आपको विशेष से बढ़कर अति विशेष मानने लगे थे। उन्हें लगने लगा था कि वे दुनिया के सबसे बड़े साहित्यकार है। तभी उनके मोबाइल पर एक संदेश चमका कि प्रसिद्ध लेखक प्रशांत को अकादमी पुरस्कार मिला है। प्रशांत जी कवि 'विशेष' के बचपन के मित्र थे। मगर कवि 'विशेष' सुबह से अपनी प्रशंसा के पुल पर दौड़ते हुए बड़प्पन के मद में ऐसे चूर हो चुके थे कि उन्होंने उस संदेश को ही 'डिलीट' कर दिया और आज सुबह लिखी अपनी 'रचना' पर मिले लाइक्स और वाहवाही के संदेशों की गिनती करने लगे।

304, एम.एस. 4, केन्द्रीय विहार, सेक्टर 56, गुरुग्राम-122011 (हरियाणा), दूरभाष: 9899221107

अनमोल वचन

◈ सत्य की जीत देर से हो सकती है पर होती जरूर है।
- महात्मा गांधी

◈ पहला अपराधी वह है जो अपराध करता है, दूसरा अपराधी वह है जो अपराध होने देता है।
-थॉमर फुलर

◈ अमीर-गरीब खाई ही अधिकांश अपराधों को जन्म देती है। - हरि विष्णु कामथ

लघुकथा

शादी के अनोखे रीति रिवाज

✍ आशा श्रीवास्तव

किसी भी विवाह में शामिल होना और तरह-तरह की रस्मों को साथ मिलकर निभाने का एक अलग ही आनंद होता है। विवाह में जाने का मतलब ही सबसे मिलकर, खूब मौज मस्ती करना होता है।

हाल ही में मुझे अपने पति के एक मित्र के पुत्र की शादी में जाना पड़ा। वहां मैंने जो देखा वह मैं कभी नहीं भूल पाऊंगी।

मैं जहां गई थी वह परिवार गांव से संबंध रखता था। शादी के दिन बारात जाने से पूर्व एक कुआं पूजने की रस्म होती है जिसमें लड़के की माँ कुएं में पैर लटका कर बैठती है और बेटा माँ को कुछ रुपए और यह आश्वासन देकर उठाता है कि वह उनका हमेशा ख्याल रखेगा। वह उनके लिए बहू लाने जा रहा है जो उनकी सेवा करेगी।

यह रस्म मेरे परिवार में भी होती है। मैंने बहुत जगह देखी है। अब तो कोई कुएं पर भी नहीं जाता। लॉन में एक गड्ढा खोदकर या एक बाल्टी में पैर का अंगूठा डालकर ही हो जाती है। माँ बेटे से कुछ लेती भी नहीं है। बेटा माँ को उठाता है और माँ आशीर्वाद देती है और फोटो खिंची जाती है । बस इसके अतिरिक्त कुछ नहीं होता। हंसी ठिठोली ही होती रहती है।

यहां पर मैंने कुछ अलग ही देखा। माँ कुएं में पैर लटकाकर जैसे ही बैठीं, उनके परिवार की महिलाओं ने गाना शुरू किया 'तुम तो चले रे पूता गौरा ब्याहन दुधवा का कर दो मोल रे।'

यह गाना सुनते ही कई महिलाएं अचानक जोर-जोर से रोने लग गईं जिसमें दूल्हे की माँ भी थीं।

मैं सबका रोना देखकर अवाक थी। मैंने दूल्हे की मौसी से पूछा, ''रो क्यों रहे हैं सब?''

''अरे बहनजी, दु:ख लग रहा है कि अब आज से बेटे पर तो बहू का हक हो जाएगा। अब माँ का हक आज से आप जान लो, खत्म हो गया'', इतना कहकर वह भी रोने लग गईं।

उनकी सोच मेरी सोच से बिल्कुल अलग थी। खुशी के अवसर पर इतना रोना? मेरी समझ से बाहर की बात थी क्योंकि मैं तो बहुत खुश थी। मैंने भी बहुत खुशी से यह रस्म की थी जब मेरे बेटे की बारात जा रही थी।

S-209 Shakti Nagar, Indira Nagar, Lucknow, Uttar pradesh-226016, India

हास्य व्यंग्य

आप लोग भी न कमाल करते हैं। जब सरकार को पुल गिराना ही होता तो वह बनवाती ही क्यों? और कभी सुना है कि जन्म देने वाली मां बच्चे को जन्म देने से पहले ही मार डालना चाहती हो, तो फिर निर्माण करने वाले मासूम इंजीनियर भला क्यों बनने से पहले ही पुल गिराना चाहेंगे?

✍ **विनोद कुमार विक्की**

पुल का गुल हो जाना

जनता से अभियंता तक सभी चिंतित है, चिंता लाजिमी है आखिर विकास पानी में जो बह गया था। अरबों रुपए की लागत से तैयार होने वाला पुल बनने से पहले ही नदी में ढह गया। पिछले साल हवा में उड़ गया था इस साल जल में मिल गया। निर्माण एजेंसी बचाव और सरकार बयान की तैयारी में जुट गए।

रही बात जनता की, तो क्षेत्रीय जनता ने विकास ना सही लेकिन पुल के सुपर स्ट्रक्चर के रूप में विकास का ट्रेलर तो देख ही लिया था। सदियों से बिना पुल के रह रहे हैं, दो-तीन दशक और नाव डेंगी से गुजारा कर लेंगे तो कौन सा मंगल ग्रह पर जीवन का लोप होने वाला है। वैसे भी जनता नामक जीव की सहनशीलता एमआरएफ टायर की तरह मजबूत होता है। नेताओं के आश्वासन की हवा पर दो-तीन पीढ़ियों का सफर तो ये आराम से काट ही लेते हैं।

जिस प्रकार समाज में विवाहोपरांत विदाई और सुहागरात की विधि होती है वैसे ही हमारे देश में हादसों के पश्चात विपक्ष विलाप और जांच आयोग का गठन अनिवार्य प्रक्रिया है। अरबों रुपए का पुल गुल हो गया। मीडिया और विपक्ष का दबाव देख आनन-फानन में माथा महतो और पच्ची सिंह की दो सदस्यीय जांच समिति का गठन किया गया।

जांच आयोग घटनास्थल पर पहुंचती उससे पहले ही संतरी से मंत्री तक निर्माण एजेंसी की तात्कालिक सेवा पहुंच गई। पुल का पाया जल में एवं माया माननीयों के महल में।

"यह तो हद हो गया माथा भाई, भारतीय मुद्रा की तरह सारा पुल ही भरभराकर गिर गया..." घटनास्थल का मुआयना करते हुए पच्ची सिंह ने अपनी उत्सुकता जाहिर की।

"सच कहते हो भाई राजधानी में बेटियां और इस प्रदेश में पुल तो बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं है.... लोहे का पुल हो तो चोरी होने में और कंक्रीट का हो तो गोताखोरी करने में विलंब नहीं करता भाई..." माथा महतो ने अपना अनुभव साझा किया।

घंटों स्थल एवं निर्माण मैटेरियल का निरीक्षण कर माथा-पच्ची ने अपना रिपोर्ट तैयार किया। जांच आयोग एवं पदाधिकारियों द्वारा प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाया गया।

(शेष पृष्ठ 56 पर)
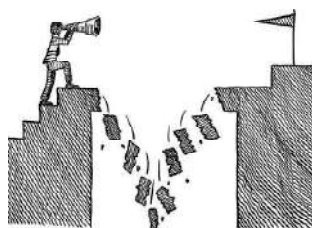
समीक्षा

भारतीय संस्कृति का दस्तावेज 'ॐ सतसई'

✍ समीक्षक : डॉ. रजनीकांत

सतसई के रचयिता डॉ. ओ.पी. सारस्वत किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। आधुनिक समकालीन भारतीय साहित्य में उनका एक बड़ा प्रतिष्ठित नाम है। वे हिंदी, संस्कृत, डोगरी, पहाड़ी हिमाचली, पंजाबी और अंग्रेजी के जानकर विद्वान साहित्यकार हैं। डॉ. सारस्वत हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त अध्ययन केंद्र से अपने पैंतीस वर्षों के सेवाकाल के उपरांत सेवानिवृत्त हुए हैं। उन्होंने साहित्य की हर विधा में लेखनी चलाई है नाटक, कविता, कहानी, लघुकथा, समीक्षा आदि। इनके अब तक सात कविता संग्रह, एक कवितांतरम संस्कृत काव्य, बीस से अधिक संस्कृत में नाटक, पांच समीक्षा पुस्तकें, दो रेडियो धारावाहिक और दस वर्षों तक दैनिक ट्रिब्यून में चार सौ पुस्तकों की लगातार समीक्षायें और आलेख लिखे हैं। इनके व्यंग्य लेखन में आशीर्वाद ही आशीर्वाद, मेघमन और महाकवि कालिदास के मेघदूत प्रीति काव्य का पद्यानुवाद उल्लेख्य हैं।
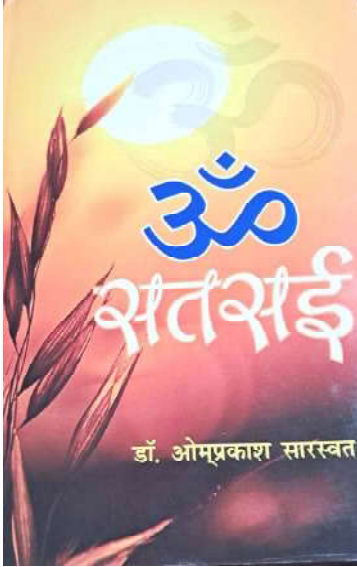
हिंदी का सतसई शब्द संस्कृत के सप्तशती शब्द से विकसित हुआ है। दुर्गासप्तशती से आप परिचित होंगे। संस्कृत में सतसइयों की परंपरा में शतक ची चले जैसे राजा भर्तृहरि के तीन शतक श्रृंगार, वैराग्य और नीतिशतक का अद्‌भुत सामंजस्य है। साहित्य हमारी संस्कृत वृत्तियों और सुचिंतित चिंताओं का एक व्यापक स्तर पर निदान और समाधान भी बिठाता है।

प्रस्तुत सतसई डॉ. सारस्वत की एक सुसंस्कृत, सुललित और व्यवहारसंगत एक आधुनिक सोच की संपुष्ट रचना है जो रचनाकार और समसामयिक परिवेश का यथार्थ आकलन है। हर रचना अपने समय की प्रस्तुत प्रवक्ता होती है। प्रस्तुत इस महाकाव्योंपम रचना में विभिन्न शीर्षकों जिन्हें रचनाकार ने पर्व नाम दिया है, आज की आज जुड़े समयों और परिवेश की चिंताएं और स्थितियां/परिस्थितियां बुनी गई है। ॐ सतसई का धरातल और उसकी बुनावट हमारी आज की सोच और बर्ताव को समक्ष रखते हैं।

डॉ. सारस्वत अपने लेखन में एक विचारशील साहित्यकार हैं। उनके लेखन में वर्तमान, विगत और भविष्य तीनों अंक साथ सांस लेते दिखाई देते हैं। इनके इस लेखन में किसी प्रकार की अति अथवा किसी दावे की न तो कोई वकालत है और न ही किसी प्रकार के मंसूबे की स्थापना की है। कवि ने अपनी आत्मकथ्य भाषा में व्यवहारिकता को बांधते हुए अपने दायरे की परिचित भाषा का परिचय दिया है। संसार भर के साहित्य का मूल कारक गुरु है। विशिष्टता का राज गुरु ने खोला और यह दुनिया चर्चा और विवेचन के योग्य बनीं। गुरु ने –

जननी जैसी जन्मभू /का बतलाया मन्त्र।
स्वर्ग स्वर्ग की साम्यता /स्वर्ग स्वर्ग का तन्त्र।।
देश राष्ट्र और विश्व का /बिठलाया गठजोड़।
कितनी किसकी भूमिका /कितनी किससे होड़।।
प्रेम त्याग संयम क्षमा/ से ही मानव-मान।

धैर्य, शांति, श्रमशीलता /मानुस की पहचान।।

ऊँ सतसई में अड़तीस पर्वों में विस्तारित 792 दोहे समेटे गये हैं। यह रचयिता की अपनी दृष्टि और चिन्तन ही है जिसने समाज की समसामयिकता से उपजी अनुभवता को इसे इस स्वरूप तक पहुंचाया है। भाव मैत्री, शब्दमैत्री और अर्थ स्पष्टता का ध्यान रखा गया है। कुछ नये भाव बोध को शब्दायित करने की लालसा से इस रचना का अविर्भाव हुआ है। उनकी रचनाओं में कई प्रकार की गंध, तरह-तरह के आस्वाद और व्यंजनाओं का उभर देखने को मिलता है। कविवर डॉ. सारस्वत के बहुआयामी बहुयामी विविधवर्णी सृजन धर्मिता में दोहा उनका सर्वाधिक परिचय छंद है।

ऊँ सतसई प्रकृति, समाज, राष्ट्र, मानवता को समर्पित है। समाज उन्हें देखता है और वे समाज को सामाजिक ताने-बाने को जोड़ने में उन्हें महारत हासिल है। भाषा पर उनका साधिकार है। तरलता, सरलता, सहजता, मुहावरा शब्द आदि शक्ति का समुच्चय द्रष्टव्य है। प्रस्तुत विवेच्य पुस्तक ऊँ सतसई पाठकों के आनंद का संवाहक बनेगा। यह रचयिता का माइल स्टोन साबित होगा ऐसा मेरा विश्वास है। आधुनिक युग में जब नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है ऐसी कालजयी रचना हृदय को ठंडक प्रदान कर जाती है।

राजविला, लोअर कैथू,
शिमला हि.प्र. -171003

विवेच्य पुस्तक -ऊँ सतसई
लेखक - डॉ. ओ.पी. सारस्वत
प्रकाशक - चन्द्रमुखी प्रकाशन, ई -223, शिवाजी मार्ग जगजीत नगर दिल्ली-53.
संस्करण - 2023
मूल्य- पांच सौ मात्र

लघुकथा

नानी और धार

कृष्ण चन्द्र महादेविया

"**नानी**, कल रैली में चल रही हो न?"

"नब्बे वर्ष की उम्र में बेटा कहां जाऊंगी? ....पर ये तो बता, ये रैली कैसी है?"

"ताम्रधार बचाने के लिए, सीमेंट कारखाने के खिलाफ नानी जी।"

"अरे बेटा सारी उम्र तो इस धार और जंगल के आंचल में काटा है। इससे -प्यार-दुलार रखवा रहा। इसी से तो विछावन - घास और लकड़ियां ढोई हैं।"

" जी नानी, इसी पहाड़ को बचाना है।"

" बेटा तब तो यहां भी दो पहाड़ी पार उन कारखानों वाली धारों की तरह बम्ब फटेंगे, गाड़ियों का शोर होगा, लोग-बाग, पंछी-पशु सब बेघर हो जाएंगे।"

" हां नानी जी, ऐसा ही होगा। बीमारी फैलेगी, पानी सूखेगा। तरह-तरह की गंदगी फैलेगी नानी।"

" बेटा, धार और औरत की जितनी अच्छी देखभाल करेंगे वे कई गुना अधिक वापिस लौटाती है। औरत जीवन देती है और धार भी जीवनदायिनी है। इसी से नदियां निकलती हैं। इसी से जड़ी बूटियां-दवाई, घास, फल निकलते हैं। ताम्रधार की ठण्डी-ठण्डी हवा तन-मन को शीतलता प्रदान करती है।"

" जी नानी, उसी जीवनदायिनी धार को बचाने के लिए रैली निकालेगें।"

तब तो रैली में हरगिज आऊंगी पुत्तर। आग लगे इस नाशपीटे सीमेंट कारखाने को। नरक में जाएं आग लगाने वाले।" नानी ने गुस्से से कहा।

अब नानी गांव भर की औरतों के साथ लोक गीत हंसी मजाक करते हुए ताम्रधार जाने के किस्सों में खो सी गई। बेसिर चौहान नानी के जज्बे के आगे नत-मस्तक हुआ, धार के प्रति उनके प्रेम के किस्से सुनने लग गया था। वह जान गया था कि नानी पारिस्थितिकीय सुतंलन और पर्यावरण की सुरक्षा के सन्दर्भ में उससे कई गुना अधिक जानती है।

डाकघर महादेव, सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.)
पिनकोड 175018, मो. 8219272342

समीक्षा

अलौकिक आनंदानुभूति का अनुभव करवाता 'बसंत अभी नहीं आया'

समीक्षक : डॉ. देव कन्या ठाकुर

विद्वानों का विचार है कि मानव हृदय अनन्त रूपात्मक जगत के नाना रूपों, व्यापारों में भटकता रहता है, लेकिन जब मानव अहं की भावना का परित्याग करके विशुद्ध अनुभूति मात्र रह जाता है, तब वह मुक्त हृदय हो जाता है। हृदय की इस मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं। कविता मनुष्य को स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचित घेरे से ऊपर उठाती है और शेष सृष्टि से रागात्मक सम्बंध जोड़ने में सहायक होती है। काव्य चित्त को अलौकिक आनंदानुभूति कराता है तो हृदय के तार झंकृत हो उठते हैं। काव्य में सत्यं शिवं सुंदरम् की भावना भी निहित होती है। गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय का काव्य संकलन 'बसंत अभी आया नहीं' हमें वही अलौकिक आनंदानुभूति का अनुभव कराता है।

संकलन की पहली कविता 'प्रदूषण' में कवि ने प्रदूषण का इस्तेमाल रूपक के तौर पर करके मानव मन की कुंठाओं और दूषित विचारों से उत्पन्न विकारों को अभिव्यंजित किया है। पर्यावरण की शुद्धि के साथ स्व के विशोधन पर बल देने की जरूरत का आग्रह किया है।

'मैं परेशान हूं, अपने भीतर के प्रदूषण से,
अपने को बचायूं कैसे, वह जो मेरे अंदर के पेड़ों
को काट रहा है

पुस्तक की शीर्षक कविता 'बसंत अभी नही आया' जहां हमारे बदले हुए मौसम चक्र की ओर इशारा करती है वहीं बसंत के इंतजार में बैठे ठूंठ पेड़-पौधे, पशु-पक्षी बसंत के समय पर नहीं आने से उदास हैं। जिस तरह आजकल हर त्योहार, पूजा मेले की रौनक इंटरनेट या सोशल मीडिया पर प्रचारित और प्रसारित होती है उसी तरह कवि ने भी बसंत के देरी से आने के कारण की खबर दी। कविता की अंतिम दो पंक्तियां पूरी कविता का अंदाज ही बदल देती हैं। जहां कवि प्रकृति से तरह-तरह के अलंकारों के साथ निवेदन करता है और उसे पूरी उम्मीद है कि बसंत अपना वचन निभाएगा। जबकि राजनीति में मानव मूल्यों का पतन हो चुका है जिससे कवि को कोई आशा नहीं है।

'पढ़ने को मिला ट्विटर पर,
कि तुम पहाड़ों पर पड़ी बर्फ और
ठण्ड के कारण
अभी नहीं आ सकते, अब होली
पर ही पधारोगे पहाड़ों पर
हो सके तो होली से पहले ही
अपने समूचे लाव लश्कर के साथ
जल्दी आना,
नेताओं की तरह भूल मत जाना।'

उपाध्याय जी प्रकृति प्रेमी हैं उनकी कविताओं में प्रकृति प्रेम का अत्यंत निर्मल, गंभीर, आवेगमय तथा व्याकुल कर देने वाला उदात्त भाव व्यक्त हुआ है।

पर्यावरणीय चिंतन की एक और कविता 'गंगा' में कवि की कल्पना ही है जो उसे कुछ दिन छुट्टी मनाने के लिए वापिस स्वर्ग जाने की राय देता है और उससे पूछता है कि वह इतना शोषित होने के बाद भी क्यों बह रही है।

'सांझ का सूरज' कविता वरिष्ठ नागरिकों की जीवन के प्रति समाज के संकीर्ण नजरिये को प्रस्तुत करती है। कवि कहना चाहता है कि सेवानिवृत्ति के बाद भी एक और जीवन है जो उमंगों और सपनों से भरा है। अक्सर वृद्ध व्यक्ति से
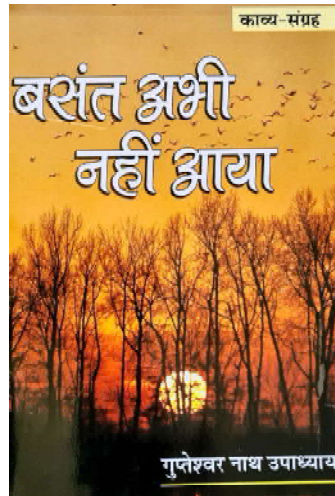
कोई बात करना पसंद नहीं करता है। वह कहना चाहता है कि वह थका हुआ नहीं है बल्कि अरुणिमा की जो लाली सांझ के सूरज को और आकर्षित बना देती है वही उमंग और आशा उसे भी अपने जीवन से है।

'सूरज तो सूरज है, वह बूढ़ा जरूर है,
किन्तु बूढ़ों से अलग, थकान से अनभिज्ञ
अपरिचित है, अठखेलियां करता है, सांझ का सूरज
अब भी वरिष्ठ नागरिक की तरह नहीं हुआ है।'

कविता में एक कवि की बहुत ही व्यक्तिगत भावनाएं जुडी होती हैं। ऐसे में कवि बहुत भावुक होकर अपने परिवेश और समाज को अपनी कविताओं के धागे में बुनता है। लेकिन लेखनी पर लगे प्रतिबंधों और सेंसरशिप को देखते हुए कवि को डर भी है कि वह जो कलम का सिपाही है जिसने समाज को जगाने का बीड़ा अपने ऊपर लिया हुआ है, कहीं वह अनुशासन की आड़ में अपने लक्ष्य से भटक न जाए।

'मैं कविता लिखता हूं' और 'मेरी कविता मौन है' गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय की बेबाक लेखनी पर अनचाहे दबावों पर मुखर होकर एक कवि की व्यथा वयक्त करती हैं।

'मुझे बहुत खलता है, अनुशासन में बंधी, कविता संकोची हो गयी है
उसे खुलने में शायद वक्त लगेगा, तथापि में डरता हूं कि
शायद ही कभी वह मंचों पर और गोष्ठियों में वह सब कुछ
बेबाकी से बोल पाएगी जो कि उसे बोलना चाहिए।'

इन्सान जब युवा होता है उसमें कुछ भी कर गुजरने की चाहत होती है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ और जीवन के संघर्ष उसके उत्साह को ठंडा कर देते हैं। कविता 'उम्र बढ़ने के साथ' हनुमान जी को प्रतीक स्वरूप लेकर लिखी गयी है जहां कवि को लगता है कि उम्र बढ़ने के साथ वह साहसहीन हो गया है जिस पूंछ से हनुमानजी की तरह सोने की लंका को राख करने का वह मादा रखता था अब वह हिम्मत उसमें नहीं रही।

एक माँ की परवरिश बच्चे को भावनात्मक और संवेदनात्मक स्तर पर गढ़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परम्पराओं और संस्कृतियों को एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित करने में माँ की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। 'चाँद का पुनर्जन्म हुआ' कविता में एक माँ चाँद को ग्रहण के संकट से उबार कर उसको पुनर्जीवित करती है। सदियों से चली आ रही परम्पराओं का वहन वह बिना कोई सवाल पूछे करती जा रही है।

उसने चाँद पर आये संकट को टाल दिया
महान कृपा हुई और फिर चाँद का पुनर्जन्म हुआ'

माँ को ही समर्पित गुप्तेश्वर जी की एक और कविता 'सूरज मेरे कमरे में ' है। माँ और संतान के बीच में बहुत कुछ ऐसा होता है जो शब्दों से नहीं एहसास की डोर से बंधा होता है। माँ के जाने से जो खालीपन बच्चे के जीवन में आता है वो कोई और नहीं भर सकता। माँ के जाने के बाद बेटा उसे अपनी दिनचर्या में ढूंढने लगता है उसे लगता है कि उसके दिन की शुरूआत माँ के जगाने से ही शुरू होती थी। अब जबकि वो नहीं है तो उसने सूरज को कह रखा है कि अब वो उसे नित जगाये। कवितांश प्रस्तुत है:

एक माँ की परवरिश बच्चे को भावनात्मक और संवेदनात्मक स्तर पर गढ़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परम्पराओं और संस्कृतियों को एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित करने में माँ की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है।

'मेरे लाल को देर तक सोने की आदत है
उसे उसकी नींद से जगाना, भूल मत जाना'

संग्रह की कविताएं आत्मनिष्ठ है। उनका अपना व्यक्तित्व है जिन पर वह अटल रहे हैं। भले ही उनका विस्तार हुआ है, वह अधिक समावेशी भी हुआ है लेकिन उनकी निजता में कोई क्षति नहीं हुई है।

'मेरी माँ' कविता में वह माँ को सभी रिश्तों में सबसे ऊपर देखते हैं।

'फिर से मामा बन जायो' कविता में कवि को लगता है कि आधुनिक होते समाज और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकसित होने से अब बच्चों को कोई कल्पना के संसार में लेकर नहीं जाता है और न ही बच्चे अब चाँद को मामा कहते है। सब लोग वस्तुनिष्ठ हो गए हैं।

'कीमती पत्थर' कविता में कवि समाज में व्याप्त दुराग्रहों और दूसरों के काम पर उंगली उठाने वालों से कहता है कि उसके स्वयं के जीवन में बहुत कुछ गढ़ने को है अत: वो उसी में व्यस्त है। वह अपना समय और अपने संसाधन व्यर्थ में लोगों पर छींटाकशी में नहीं गंवाना चाहता है। कवितांश प्रस्तुत है।

'लोग मुझसे नाहक ही डरा करते हैं
मुझे अपना ही बहुमूल्य सर फोड़ने से कहां फुर्सत है
जो अपना कीमती पत्थर उनकी तरफ उछालूं'

उपाध्याय जी छोटी-छोटी स्थितियों में अपने समय की बड़ी से बड़ी विडंबनाओं, व्यवस्थागत विकृतियों पर प्रहार कर जाते हैं। 'सोन चिरैया' इनकी ऐसी ही एक कविता है जो एक चिड़िया के माध्यम से बेटियों की सुरक्षा पर सवाल उठाती है।

'मेरे घर आयी एक सोन चिरैया
आज यह छोटी चिड़िया पंख फड़फड़ाती है आँगन में फुदक-फुदक
शोर मचाती है, पिंजड़ा खुला है
पर उड़ नहीं पाती है
बाज और बहेलियों का दर है
सबसे सुरक्षित अपना ही घर है।'

बेटियां ऊंची उड़ान तो भरना चाहती हैं लेकिन बाहर उनकी असुरक्षा एक पिता को नजर आती है। उसे लगता ही कि उसकी बेटी उसके घर की चारदीवारी में ही सुरक्षित है।

उपाध्याय जी की कविताओं में विचारों की दृढ़ता, निर्भीकता और आत्मविश्वास की एकता मिलती है। 'स्वाभिमान कविता' का कवितांश प्रस्तुत है-

'स्वाभिमानी होना कुछ की नजर में, मूर्खता का पर्याय है
यह सही है कि कभी-कभी आप अकेले पड़ जाते हैं।'

उपाध्याय जी को भाषा के साथ बहना और धारा को चीर कर आगे बढ़ना आता है। कवि हमारे भीतर शिथिल पड़ी संवेदनाओं की तारों को सहला जाते है। अनुभव के कई स्तर उनके रचना विधान में शामिल हैं जो कि कवि की पहचान से जुड़े हैं। 'पहचान' कविता का कवितांश प्रस्तुत है -

'मैं सरकारी काम से एक दफ्तर में गया
एक साहब से मिला साहब ने पूछा-क्या है तेरी पहचान
मैने कहा मैं कवि हूं, कविताएं लिखता हूं, यही है मेरी पहचान
उसने कहा, पागल ना बनो हमारे लिए तो शून्य है तुम्हारा ईमान
या तो कागज में लिखा लायो कोई प्रमाण
नहीं तो कहीं और जायो, यहां तुम्हारे लिए कोई नहीं है स्थान।'

उपाध्याय जी अपनी बहुत गहरी मानवीय संवेदना के कारण अभावग्रस्त जनता की बेबसी एवं पीड़ा स्वयं भोगने लगते हैं। मर्मान्तक पीड़ा एवं भावनाओं के द्वन्द्व को उभारने में उनकी भाषा अंतर्मन को छू जाती है। 'दीप कैसे जले' कविता का अंतिम कवितांश प्रस्तुत है :

'बुझे हुए दीप में, न खुशी का तेल
और न स्वाभिमान की बाती है
उधार का दीप, कभी पानी से जलता नहीं
कागज की नाव का पतवार, अब कैसे चले, दीप कैसे जले।'

उपाध्याय जी की कविताओं में विचारशीलता, सूक्ष्म तर्क योजना तथा सहृदयता का योग मिलता है। इनकी कविता 'मौन' का कवितांश सुनिए

'मौन कभी नपुंसक नहीं होता,
सृजन और शब्दों को कुंठित करने हेतु
पूरी किताब को शर्मिंदा करने के लिए काफी है
आंखों से टपक पड़े दो बून्द आंसू'

उपाध्याय जी भाव और मनोविकार की कविताएं लिखते है यद्यपि वे सौंदर्य के भी कवि है जो मिथकों को नए संदर्भों में खोलते है। माना उनकी राजनीतिक चेतना भी कम धारदार नहीं है। फिर भी वे सपाट बयानबाजी और नारेबाजी करके हमलावर होने का प्रयास नहीं करते। बहुत हलके से नश्तर चुभाकर निकल लेते हैं। यही उनके काव्य की खूबी है। कविता 'लोकतंत्र का सबसे बड़ा पर्व' का कवितांश यूं है-

लोकतंत्र का सबसे बड़ा पर्व चुनाव आया है
प्रत्याशी निकल पड़े हैं चुनावी मेले में
अपनी अपनी दुकानें सजाने जनता के समक्ष परोसने के लिए
इन चुनावी कलाकारों के हाथ में कल सत्ता होगी
लोकतंत्र की नयी परिभाषा, गढ़ने के लिए जनता के भाग्य विधाता होंगे आधुनिक लोकतंत्र का, स्थानीय स्वरूप बदला है
न चाहते हुए भी, सहना होगा, यहां इसी तरह रहना होगा।

अत्यंत सारगर्भित, विचार प्रधान और सूत्रात्मक वाक्य रचना उपाध्याय जी की विशेषता है। 'गरीब' कविता का कवितांश देखिये-

'गरीब परिवार में जन्म लेना, अभिशाप नहीं तो और क्या है '
परिश्रम करने मात्र से गरीबी दूर नहीं होती'

हमारी सामाजिक व्यवस्था पर कितना बड़ा व्यंग्य इन दो पंक्तियों में किया गया है।

कवि ने सचेत भी किया है कि इस दुनिया में कोई भी सर्वशक्तिमान नहीं है। कवि ने वक्रोक्ति अलंकार का बहुत लाक्षणिक चित्रण 'दिनकर को चुनौती' कविता में किया है। कवितांश प्रस्तुत है

लोगों का कहना है कभी अभिमान मत करो, दम्भ

किसी का नहीं रहता अभिमान है दिनकर को
अपने सर्वशक्तिमान होने पर
किन्तु बादलों ने दिनकर के सर्वशक्तिमान
होने के दम्भ को तोड़ दिया है कुछ दिनों के लिए
ही सही पहाड़ों पर।

'फाल्गुनी धुप' कविता में कवि प्रकृति के निकट स्वयं को पाता है और उसे लगता है कि उसकी दिनचर्या मौसम के अनुरूप है।

उपाध्याय जी की कविता 'खुरपी के लिए' लोक व्यवहार को महत्त्व देती कविता है। बिहार में कहावत है 'हंसिये के विवाह में खुरपी के गीत' इसी लोक व्यवहार को आधार बनाकर कवि ने किसानों की व्यथा को व्यक्त किया है।

'अब हंसिये के विवाह में
खुरपी के गीत, गाये जा रहे हैं
जबकि खुरपी की धार, भोथरी हो गयी है
अब फावड़े धरती के गीत नहीं गाते
न मजदूर किसान, पसीने की महक से
खेतों में खुशबू फैलाए हैं
हाथों के काट जाने से, लाचार हो
गले में फंदा लगा, फांसी लगाते हैं।

संकलन की अंतिम तीन कविताएं कोरोना महामारी से उपजे मानवीय संकट पर है। 'परहेज, डर और करें हम किस पर विश्वास' कविता में कवि ने जहां कोरोना के समक्ष पूरी मानवता को असहाय बताया है वहीं सड़कों पर बेतहाशा अपने गांव की ओर भागते बेरोजगार और भूखे मजदूरों की व्यथा को दर्शाया है।

'बीमारी से तो लड़ लेते फिर भी
किन्तु भूख से कैसे?'

इस सवाल का जवाब न तो हमारी व्यवस्था के पास है और न ही भगवान के पास।

'बसंत अभी आया नहीं' संग्रह की कविताएं कवि की काव्यात्मकता को गहराई से समझने में मदद करती है। कवि की भाषा परिष्कृत है। जिसमें मधुरता और कोमलता का चरम विकास दिखाई देता है। भाषा की व्यंजकता बढ़ाने में उपाध्याय जी कुशल है और रचनात्मक काव्य भाषा के प्रणेता हैं।

Buransh Lodge, MIG House No. 18, Housing
Board Colony, Sanjauli, Shimla-171006

बसंत अभी नहीं आया (कविता संग्रह)
लेखक - गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय
प्रकाशक -अयन प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य- 300 रुपए

...पुल का गुल हो जाना

(पृष्ठ 50 का शेष)

''सर अरबों रुपए का पुल स्ट्रक्चर आखिर कैसे गिर गया''? पहला प्रश्न बाल की खाल न्यूज चैनल के पत्रकार ने किया।

देखिए सृष्टि और संहार तो प्रकृति का नियम है, इंसानी जीवन का कोई भरोसा नहीं यह तो कृत्रिम पुल मात्र है... माथा महतो ने जवाब दिया।

''तो इसमें सरकार दोषी है या निर्माण एजेंसी...?''

अगला प्रश्न कह के लूंगा मीडिया के रिपोर्टर का था।

पच्ची सिंह ने गहरी सांस ली और कहना शुरू किया-

आप लोग भी न कमाल करते हैं। जब सरकार को पुल गिराना ही होता तो वह बनवाती ही क्यों? और कभी सुना है कि जन्म देने वाली मां बच्चे को जन्म देने से पहले ही मार डालना चाहती हो, तो फिर निर्माण करने वाले मासूम इंजीनियर भला क्यों बनने से पहले ही पुल गिराना चाहेंगे।

तब फिर पुल गिरा कैसे? उपस्थित सभी पत्रकार एक साथ पूछ बैठे।

वही बताने के लिए आप लोगों को बुलाया है...माथा पच्ची संयुक्त स्वर में बोले।

देखिए हम गहराई से तफतीश कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि पुल ना तो घटिया मैटेरियल और ना ही निर्माण एजेंसी की गलती से गिरा है। ऐसा है कि घटना वाले दिन वातावरण का तापमान बयालीस डिग्री से ज्यादा था। प्रचंड गर्मी के कारण पुल का पाया पिघल गया और सुपर स्ट्रक्चर भरभराकर गिर गया।

माथा पच्ची की बात सुन सभी मीडिया कर्मी एक दूसरे का मुंह ताकने लगे।

असंभव, गर्मी की वजह से पुल का पिलर कैसे पिघल सकता है? समाज तक का रिपोर्टर पूछ बैठा।

भाई जी, जब थाना मालखाना से करोड़ों रुपए की शराब चूहा पी सकता है तो ग्लोबल वार्मिंग से पुल का पिलर नहीं पिघल सकता क्या!

माथा-पच्ची के इस बयान के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस और जांच की प्रक्रिया का संयुक्त रुप से अधिकारिक समापन कर दिया गया।

पो-महेशखूंट बाजार, जिला-खगड़िया
(बिहार) 851213
मो. 7765954969

मुख्य मंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू को धर्मशाला में आयोजित आभार रैली में नई पैंशन कर्मचारी संघ सम्मानित करते हुए।

पंजीकरण संख्या : 845/1957 मई–जून, 2023 एच.पी./79 एस.एम.एल. 2021–23

दुर्गाघाट मन्दिर (दानोघाट)

छाया : मदन लाल शर्मा

किरण भड़ाना, भा.प्र.से., निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रकाशित तथा प्रभा राजीव, नियंत्रक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग द्वारा हिमाचल प्रदेश सरकार के लिए राजकीय प्रेस, शिमला–171005 से मुद्रित करवाकर शिमला से प्रकाशित। वरिष्ठ सम्पादक : डॉ. राजेश शर्मा, सम्पादक : नर्बदा कंवर।